सरकारे मदीना ﷺ की प्यारी प्यारी दुआ़ओं और

इन के फ़वाइद का मजमूआ़

KHAZINA-E-RAHMAT

ख़ज़ीनए रहमत

مکتبۃ المدینہ
MAKTABA TUL MADINAH
MC 1286

مدنی چینل دیکھتے رہیے

المدینۃ العلمیۃ
(دعوتِ اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अ़र्ज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी* دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ़** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा।** दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَكَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तर्जमा : *ऐ* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले !*

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इ़ल्म** पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो ***मक्तबतुल मदीना*** *से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (हिन्दी)

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** ने येह किताब **"ख़ज़ीनए रहमत"** उर्दू ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का **हिन्दी रस्मुल ख़त** करने की सआदत हासिल की है [**भाषांतर** (Translation) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (Transliteration) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ** करवाया है। इस किताब में अगर किसी जगह **ग़लती** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअए Sms, E-mail या Whats App ब शुमूल सफ़्हा व सतर नम्बर) **मुत्तलअ** फ़रमा कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबिता न फ़रमाएं।...

राबिता :- मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, नागर वाड़ा, बरोडा, गुजरात (अल हिन्द) ☎ 9327776311
E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स़ = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ॽ = ئ	ॄ = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

www.dawateislami.net

بسم اللہ الرحمن الرحیم

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللہ

सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी

दुआ़ओं और उन के फ़वाइद का मजमूआ़

ख़ज़ीनए रहमत

नाशिर

421 उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली-6

फ़ोन :- (011) 23284560

www.dawateislami.net

सब से अफ़्ज़ल अ़मल

सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मह़्वे गुफ़्त्गू थे कि वह़्य आई : "येह शख़्स जो आप के साथ बात कर रहा है इस की उ़म्र सिर्फ़ एक साअ़त और बाक़ी रह गई है।" वोह अ़स्र का वक़्त था कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस बात से आगाह फ़रमाया तो वोह बे क़रार हो गए और अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे ऐसा अ़मल बताइये जो इस वक़्त मेरे लिये ज़ियादा मुनासिब हो। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِشْتَغِلْ بِالتَّعَلُّم या'नी इ़ल्म ह़ासिल करने में मश्ग़ूल हो जाओ, तो वोह इ़ल्म ह़ासिल करने में मश्ग़ूल हो गए और मग़रिब से क़ब्ल इन्तिक़ाल फ़रमा गए।

रावी का कहना है कि अगर इ़ल्म से अफ़्ज़ल कोई और चीज़ होती तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस वक़्त में उसी के करने का हुक्म फ़रमाते। (तफ़्सीरे कबीर)

www.dawateislami.net

याद दाश्त

(दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।)

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

याद दाश्त

(दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।)

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

फ़ेहरिस्त

नम्बर	उनवान	सफ़्ह़ा
	आदाबे दुआ़	
1	ह़राम ख़ोरी दुआ़ के लिये क़ैंची है	12
2	इजाबते दुआ़ के अह़वाल पर मज़ीद तशरीह़	12
3	इजाबत का एक और मा'ना जो तस्कीने ख़ातिर का सबब है	14
4	दुआ़ की अहम्मिय्यत	15
5	दुआ़ मोमिन का हथयार है	15
6	दुआ़ का दरवाज़ा खुलना रह़मत का दरवाज़ा खुलना है	16
7	दुआ़ दाफ़ेए़ बला है	16
8	इ़बादात में दुआ़ का मक़ाम	16
9	दुआ़ओं में अपने इस्लामी भाइयों को भी शामिल रखें	17
10	अ़दम मौजूदगी में दुआ़ और इस का फ़ाएदा	18
11	मुसलमानों के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करने पर नेकियों की बिशारत	18
12	दुआ़ न करने पर मज़म्मत	19
13	आदाबे दुआ़	20
14	यक़ीने कामिल	29
15	दुआ़ और तन्हाई	31

नम्बर	उनवान	सफ़्हा
16	सोते वक़्त की दुआ	33
17	नींद से बेदार होने की दुआ	34
18	बैतुल ख़ला में दाख़िल होने से पहले की दुआ	35
19	बैतुल ख़ला से बाहर आने के बा'द की दुआ	36
20	घर में दाख़िल होते वक़्त की दुआ	37
21	घर से निकलते वक़्त की दुआ	39
22	मोमिन से मोमिन की मुलाक़ात के वक़्त की दुआ	40
23	मुसाफ़्हा करते वक़्त की दुआ	42
24	किसी मुसलमान को हंसता देख कर पढ़ने की दुआ	44
25	मग़फ़िरत की दुआ देने पर जवाब	45
26	मोहसिन का शुक्रिय्या अदा करने की दुआ	46
27	हदया लेते वक़्त की दुआ	47
28	अदाए क़र्ज़ की दुआ	48
29	अदाए क़र्ज़ पर क़र्ज़ ख़्वाह की दुआ	50
30	ग़ुस्सा आने के वक़्त की दुआ	51
31	वस्वसा दूर करते वक़्त की दुआ	54
32	थकन के वक़्त की दुआ	56
33	छींक आने पर दुआ	58
34	छींक आने पर اَلْحَمْدُلِلّٰه कहने वाले के लिये दुआ	59
35	छींक आने पर कोई जवाब देने वाला न हो तो उस वक़्त की दुआ	60

www.dawateislami.net

नम्बर	उनवान	सफ़्हा
36	ग़ाइब शख़्स की छींक पर जवाब देने की दुआ़	60
37	छींक का जवाब देने वाला अगर काफ़िर हो तो उस वक़्त की दुआ़	61
38	जब कोई छींक का जवाब दे तो छींकने वाले की उस के लिये दुआ़	62
39	जमाही के वक़्त की दुआ़	62
40	कोई भी नया काम शुरूअ़ करते वक़्त की दुआ़	64
41	इल्म में इज़ाफ़े की दुआ़	64
42	कुफ़्र की निशानी (मसलन मन्दर, गिर्जा, गुरुद्वारा वग़ैरा) देखते वक़्त की दुआ़	64
43	मुसीबत ज़दा को देखते वक़्त की दुआ़	65
44	नया चांद देखते वक़्त की दुआ़	67
45	जब भी चांद पर नज़र पड़े उस वक़्त की दुआ़	67
46	आईना देखते वक़्त की दुआ़	68
47	सितारों को देखते वक़्त की दुआ़	70
48	मुर्ग़ की बांग सुन कर पढ़ने की दुआ़	71
49	गधे के रेंकने (आवाज़) पर पढ़ने की दुआ़	72
50	कुत्ते के भोंकने पर पढ़ने की दुआ़	72
51	त़लबे बारां की दुआ़	72
52	बादल आता हुवा देखते वक़्त की दुआ़	74
53	बादल के खुलते वक़्त की दुआ़	75
54	बारिश के वक़्त की दुआ़	75
55	बारिश की ज़ियादती के वक़्त की दुआ़	76

नम्बर	उनवान	सफ़्हा
56	बादल की गरज और बिजली की कड़क के वक़्त की दुआ	76
57	आंधी के वक़्त की दुआ	77
58	सूरज गहन और चांद गहन के वक़्त की दुआ	77
59	सूरज गहन की नमाज़	78
60	चांद गहन की नमाज़	78
61	तुलूए़ आफ़्ताब के वक़्त की दुआ	79
62	गुरूबे आफ़्ताब के वक़्त की दुआ	79
63	सितारा टूटता देखते वक़्त की दुआ	80
64	बाज़ार में दाखि़ल होते वक़्त की दुआ	80
65	फल लेते वक़्त की दुआ	81
66	वुज़ू से पहले की दुआ	82
67	वुज़ू के दरमियान पढ़ने की दुआ	84
68	मस्जिद को देखते वक़्त की दुआ	85
69	मस्जिद में दाखि़ल होने की दुआएं	85
70	नफ़्ली ए'तिकाफ़ की दुआ	86
71	मस्जिद से निकलते वक़्त की दुआ	87
72	नमाज़े वित्र के बा'द की दुआ	88
73	फ़ज्र की सुन्नतों के बा'द की दुआ	89
74	नमाज़े फ़ज्र के लिये निकले तो अस्नाए राह में पढ़ने की दुआ	89
75	हर नमाज़ के बा'द की दुआएं	90

www.dawateislami.net

नम्बर	उनवान	सफ़्हा
76	नमाज़े फ़ज्र और मग़रिब के बा'द की दुआ़	93
77	नमाज़े चाश्त के बा'द की दुआ़	94
78	दो तरवीहा़ के दरमियान पढ़ने की दुआ़	95
79	अज़ान और इक़ामत के दरमियान वक़्फ़े में पढ़ने की दुआ़	95
80	अंगूठे चूमते वक़्त की दुआ़	96
81	क़ुरआन पढ़ते वक़्त की दुआ़	97
82	ख़त्मे क़ुरआन शरीफ़ की दुआ़	97
83	हर सूरत की इब्तिदा से पहले पढ़ने की दुआ़	98
84	शबे क़द्र की दुआ़	98
85	दुआ़ की क़बूलिय्यत पर शुक्र करने की दुआ़	98
86	कोई गुनाह कर बैठे तो सच्चे दिल से तौबा करते वक़्त की दुआ़	99
87	दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ़	99
88	खाना सामने आए उस वक़्त की दुआ़	100
89	खाना खाने से पहले की दुआ़	100
90	पहला लुक़्मा खाते वक़्त की दुआ़	103
91	हर लुक़्मा खाते वक़्त की दुआ़	103
92	खाने के बा'द की दुआ़	104
93	दा'वत खाने के बा'द की दुआ़	105
94	दस्तर ख़्वान उठाते वक़्त की दुआ़	106
95	खाने के बा'द हाथ धोते वक़्त की दुआ़	107

www.dawateislami.net

नम्बर	उनवान	सफ़्हा
96	खाना खाने से क़ब्ल بِسۡمِ اللہ भूल जाए तो क्या दुआ़ पढ़े	108
97	मरीज़ के साथ खाते वक़्त की दुआ़	109
98	पानी पीते वक़्त की दुआ़	109
99	पानी पीने के बा'द की दुआ़	109
100	दूध पीने के बा'द की दुआ़	112
101	इफ़्त़ार के वक़्त की दुआ़	112
102	इफ़्त़ार के बा'द की दुआ़	113
103	दा'वत में इफ़्त़ार करते वक़्त की दुआ़	113
104	आबे ज़म ज़म पीते वक़्त की दुआ़	115
105	मेज़बान के घर से चलते वक़्त मेहमान की मेज़बान के लिये दुआ़	116
106	बद हज़्मी के वक़्त की दुआ़	117
107	लिबास उतारते वक़्त की दुआ़	117
108	लिबास पहनते वक़्त की दुआ़	119
109	नया लिबास पहनते वक़्त की दुआ़	120
110	दोस्त को नया कपड़ा पहने देखते वक़्त की दुआ़	123
111	नया इमामा या नई चादर पहनते वक़्त की दुआ़	123
112	सुर्मा डालते वक़्त की दुआ़	125
113	तेल लगाते वक़्त की दुआ़	126
114	इत्र लगाते वक़्त की दुआ़	131
115	गुलाब के फूल को सूंघते वक़्त की दुआ़	133

www.dawateislami.net

नम्बर	उनवान	सफ़्हा
116	निकाह़ के बा'द दुल्हा और दुल्हन के लिये दुआ़	133
117	शबे ज़िफ़ाफ़ (सुहागरात) में मुलाक़ात की दुआ़	134
118	बीवी के साथ सोह़बत के वक़्त की दुआ़	134
119	वक़्ते इन्ज़ाल की दुआ़	135
120	बच्चे की विलादत के बा'द की दुआ़	136
121	अ़क़ीक़े की दुआ़	137
122	बच्चे की पैदाइश के वक़्त दुश्वारी पर दुआ़	138
123	त़लबे औलाद की दुआ़	139
124	सफ़र शुरूअ़ करते वक़्त की दुआ़	139
125	सफ़र के वक़्त की दुआ़	140
126	मुसाफ़िर की रुख़्सत करने वाले के लिये दुआ़	140
127	सुवारी पर सुवार होते वक़्त की दुआ़	141
128	सुवारी पर इत़्मीनान से बैठ जाने पर दुआ़	141
129	कश्ती या बह़री जहाज़ पर सुवार होने की दुआ़	142
130	जब सफ़र शुरूअ़ कर दे उस वक़्त की दुआ़	143
131	सफ़र से ब ख़ैरिय्यत वापस आने की दुआ़	144
132	जानवर को ठोकर लगते वक़्त की दुआ़	144
133	बुलन्दी पर चढ़ते वक़्त की दुआ़	144
134	बुलन्दी से उतरते वक़्त की दुआ़	144
135	किसी मन्ज़िल में क़ियाम करने के वक़्त की दुआ़	145

www.dawateislami.net

नम्बर	उनवान	सफ़्हा
136	शहर देखते वक़्त की दुआ़	146
137	शहर में दाख़िल होते वक़्त की दुआ़	146
138	सफ़र में ख़ुशहाली की दुआ़	147
139	जब कोई शुगून दिल में खटके उस वक़्त की दुआ़	148
140	नज़रे बद लगने पर पढ़ने की दुआ़	149
141	जानवर को नज़र लग जाने पर पढ़ने की दुआ़	149
142	आग बुझाने की दुआ़	150
143	पेशाब बन्द हो जाने या पथरी हो जाने पर पढ़ने की दुआ़	150
144	जल जाने पर पढ़ने की दुआ़	151
145	फोड़े और ज़ख़्म वग़ैरा की दुआ़	152
146	पाउं सुन होने के वक़्त की दुआ़	152
147	बिच्छू और दूसरे मूज़ी कीड़ों से महफ़ूज़ रहने की दुआ़	153
148	आशोबे चश्म (आंख का दुखना) के वक़्त की दुआ़	155
149	बुख़ार आ जाने के वक़्त की दुआ़	157
150	कान बजते वक़्त की दुआ़	158
151	जुज़ाम (कोढ़) और दूसरे मूज़ी अमराज़ से पनाह की दुआ़	159
152	फ़ालिज से हिफ़ाज़त की दुआ़	159
153	तमाम अमराज़ से शिफ़ायाबी की दुआ़	159
154	बीमारी की हालत में आतशे जहन्नम से बचने की दुआ़	162
155	जब कोई चीज़ ग़मगीन करे उस वक़्त की दुआ़	163

www.dawateislami.net

नम्बर	उ़नवान	सफ़्ह़ा
156	ख़ुशी पेश आने या'नी मरज़ी के मुवाफ़िक़ बात होने पर दुआ़	163
157	ना गवारी और ख़िलाफ़े मरज़ी बात होने पर दुआ़	163
158	दांत के दर्द की दुआ़	163
159	किसी क़ौम से ख़त़रे के वक़्त की दुआ़	164
160	सख़्त ख़त़रे के वक़्त की दुआ़	164
161	कुफ़्र व फ़क़्र से पनाह की दुआ़	165
162	दर्दे सर की दुआ़	165
163	सत्तर बलाओं से आ़फ़िय्यत की दुआ़	166
164	नाक से बहते ख़ून को रोकने की दुआ़	166
165	ज़बान की लुकनत की दुआ़	167
166	मौत मांगने की जाइज़ दुआ़	167
167	इ़यादत करते वक़्त की दुआ़	169
168	जांकनी के वक़्त मरने वाला क्या दुआ़ करे	171
169	जांकनी के वक़्त तल्क़ीन करने की दुआ़	172
170	मय्यित की आंखें बन्द करते वक़्त की दुआ़	173
171	मुसीबत के वक़्त की दुआ़	174
172	ता'ज़ियत के वक़्त की दुआ़	175
173	जनाज़ा उठाते वक़्त की दुआ़	175
174	जनाज़ा देखते वक़्त की दुआ़	176
175	नमाज़े जनाज़ा में बालिग़ मर्द व औ़रत के लिये दुआ़	176

www.dawateislami.net

नम्बर	उनवान	सफ़्हा
176	नमाज़े जनाज़ा में ना बालिग़ लड़के के लिये दुआ	177
177	नमाज़े जनाज़ा में ना बालिग़ा लड़की के लिये दुआ	177
178	क़ब्रिस्तान में दाख़िल होते वक़्त की दुआ	177
179	मय्यित को क़ब्र में रखते वक़्त की दुआ	178
180	क़ब्र पर मिट्टी डालते वक़्त की दुआ	179
181	तल्क़ीन के वक़्त की दुआ	180
182	इन्तिक़ाल के वक़्त की दुआ	181
183	सुवालाते क़ब्र की आसानी के लिये दुआ	181
184	ईमान की कसोटी	182

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ देख रहा है !!!

हज़रते सय्यिदुना फ़रक़द सबख़ी عَلَيْهِ رَحمَۃُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं : मुनाफ़िक़ जब देखता है कि कोई (उसे देखने वाला) नहीं है तो वोह बुराई की जगहों में दाख़िल हो जाता है। वोह इस बात का तो ख़याल रखता है कि लोग उसे न देखें मगर "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **देख रहा है !!!**" इस बात का लिहाज़ नहीं करता।

(احیاء العلوم، کتاب المراقبۃ والمحاسبۃ، المرابطۃ الثانیۃ المراقبۃ، ۵/۱۳۰، ملخصاً)

आदाबे दुआ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللہ

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

اُجِیْبُ دَعْوَۃَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ

(قرآن مجید۔سورۃ البقرہ آیت نمبر ۱۸٦ ؍ پارہ نمبر ۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *दुआ़ क़ुबूल करता हूं पुकारने वाले की जब मुझे पुकारे।*

दुआ़ अ़र्ज़े ह़ाजत है और इजाबत (क़ुबूलिय्यत) येह है कि परवरदगार عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे की दुआ़ पर **लब्बैक अ़ब्दी** फ़रमाता है दिली मुराद अ़ता फ़रमाना दूसरी चीज़ है। कभी ब मुक़्तज़ाए ह़िक्मत किसी ताख़ीर से कभी बन्दे की ह़ाजत दुन्या में रवा फ़रमाई जाती है कभी आख़िरत में, कभी बन्दे का नफ़्अ़ दूसरी चीज़ में होता है वोह अ़ता की जाती है। कभी बन्दा मह़बूब होता है तो उस की ह़ाजत रवाई में इस लिये देर की जाती है कि वोह अ़र्सए दराज़ तक दुआ़ में मश्ग़ूल रहे कभी दुआ़ करने वाले में सिद्क़ व इख़्लास या'नी क़ुबूलिय्यत के शराइत़ नहीं पाए जाते लिहाज़ा दुआ़ क़ुबूल नहीं होती।

(تفسیر خزائن العرفان،سورۃ البقرہ آیت نمبر ۱۸٦ ؍ پارہ نمبر ۲،صفحہ نمبر ۵۲،مطبوعہ پاک کمپنی اردوبازار لاھور.)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मुन्दरिजए बाला आयते करीमा में "اِذَا" ज़र्फ़े ज़मान है। या'नी जिस किसी[1] वक़्त भी बन्दा अपने मा'बूद عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इल्तिजा करता है **अल्लाह** तआ़ला उसे क़ुबूल फ़रमाता है।

---

1 ....या'नी हर वक़्त दुआ़ की जा सकती है चाहे इन्तिक़ाल करने वाले की नमाज़े जनाज़ा होने से पहले या बा'द नमाज़े जनाज़ा अलबत्ता उन औक़ात में मुमानअ़त होगी जिन के बारे में मुमानअ़त आई है।

www.dawateislami.net

किसी को येह शुबा और वह्म न हो कि हम सालहा साल से दुआ़ कर रहे हैं मगर हमारी दुआ़ इजाबत से हम कनार नहीं होती लिहाज़ा शुबा का इज़ाला करते हुवे मुफ़स्सिरे कु़रआन ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने तह़रीर फ़रमाया कि इजाबते दुआ़ येह है कि परवरदगार عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे की दुआ़ पर **लब्बैक अ़ब्दी** फ़रमाता है। रहा दिली मुराद का पूरा होना या न होना तो इस के अह़वाल मुख़्तलिफ़ हैं।

दिली मुराद का पूरा ना होना अगर्चे बार बार दुआ़ करता है इस की एक बहुत बड़ी वज्ह :

ह़राम ख़ोरी दुआ़ के लिये क़ैंची है

हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक आदमी का ज़िक्र फ़रमाया कि परागन्दा गर्द आलूद बाल लम्बे लम्बे सफ़र करता है (या'नी ह़ालत ऐसी कि दुआ़ करे तो क़बूल हो) आस्मान की त़रफ़ हाथ उठा कर कहता है : ऐ मेरे रब (या'नी दुआ़ करता है) ह़ालांकि ह़ालत उस की ऐसी है कि उस का खाना ह़राम और पीना ह़राम, लिबास ह़राम और ह़राम ही की गिज़ा पाता है तो इन वुजूह से दुआ़ कैसे क़बूल हो ? (مسلم شریف کتاب الزکوٰۃ،باب قبول الصدقۃ من الکسب الخ رقم الحدیث ۱۰۱۵،صفحہ نمبر ۵۰۶/۵۰۷،مطبوعہ دارابن حزم بیروت.)

सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं कि दुआ़ के दो बाज़ू या'नी पर हैं (1) अकले ह़लाल (ह़लाल खाना) (2) सिद्क़े मक़ाल (या'नी सच बोलना) अगर दुआ़ इन से ख़ाली हो तो क़बूल नहीं होती।

(مرآۃ المناجیح،کتاب البیوع،باب الکسب وطلب الحلال،الفصل الاول،الجلد الرابع صفحہ نمبر ۲۲۸ مطبوعہ ضیاء القرآن لاہور.)

इजाबते दुआ़ के अह़वाल पर मज़ीद तशरीह़

कभी ऐसा भी होता है कि दुआ़ को क़बूलिय्यत ह़ासिल हो जाती है लेकिन मक़्सूद बिल फ़े'ल और फ़िलफ़ौर (फ़ौरन) तक़्दीरे इलाही की वज्ह से ह़ासिल नहीं होता या'नी तक़्दीरे इलाही तो वक़्ते मुअ़य्यन (मुक़र्ररा वक़्त) में

www.dawateislami.net

जारी हो चुकी है लिहाज़ा मक़्सूद का फ़ौरन ह़ासिल न होना अ़द्मे क़बूलिय्यत और मह़रूमी की वज्ह से नहीं है और येह भी हो सकता है कि सलाह़े वक़्त (क़रीने मस्लेह़त) ताख़ीर में हो और येह भी हो सकता है कि उस की दुआ़ आख़िरत के वासिते ज़ख़ीरा कर ली गई हो कि आख़िरत में बन्दा ज़ियादा मोह़ताज और फ़क़ीर है।

अल्लाह तआ़ला ने जो वा'दा फ़रमाया है :

اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ या'नी मुझ से मांगो मैं तुम्हारी दुआ़ क़बूल करूंगा।

(قرآن مجید،سورۃالمؤمن آیت نمبر ٦٠،پارہ نمبر ٢٤)

इस आयते करीमा में मुत़लक़ इजाबत का वा'दा है। वक़्त, दुआ़ और बन्दे की ख़्वाहिश के साथ इजाबत मुक़य्यद नहीं है। क्यूंकि इजाबत का ज़ामिन **अल्लाह** तआ़ला है या'नी जिस वक़्त और जिस त़रीक़े पर हो चाहे दुआ़ क़बूल करे न कि उस वक़्त में जिस में बन्दा चाहे क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला ने इजाबत को अपने इख़्तियार में रखा है बन्दे के इख़्तियार में नहीं और जानना चाहिये कि उस में बन्दे की ऐ़न बेहतरी है क्यूंकि बन्दा नादान है वोह येह नहीं जानता कि इस की बेहतरी किस चीज़ में और किस वक़्त है? बा'ज़ औक़ात इस त़रह़ दुआ़ की इजाबत होती है कि मांगी हुई चीज़ की मिस्ल या उस जैसी कोई और चीज़ जो मांगने वाले के ह़ाल के मुनासिब हो अ़त़ा की जाती है। मसलन कोई किसान बादशाह से तेज़ रू (तेज़ रफ़्तार) घोड़ा त़लब करे और बादशाह उसे बेल दे दे। कोई भी अ़क़्ले सलीम रखने वाला येह न कहेगा कि बादशाह ने उस की ह़ाजत को पूरा नहीं किया। क्यूंकि बादशाह ने उस के ह़ाल के मुनासिब उसे अ़त़ा किया। (क्यूंकि किसान के लिये घोड़े से बेल बहुत मुफ़ीद है कि खेती-बाड़ी के सिलसिले में मुआ़विन व मददगार होगा) बा'ज़ औक़ात इजाबत इस त़रह़ होती है कि त़लब की हुई चीज़ के बराबर बुराई और मा'सिय्यत को **अल्लाह** तआ़ला उस बन्दे से दूर कर देता है इजाबत के येह तमाम मा'ना ह़दीसों में वारिद हैं। (شرح فتوح الغیب)

इजाबत का एक और मा'ना जो तस्कीने ख़ातिर का सबब है

हदीस शरीफ़ में आया है कि हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में अ़र्ज़ करते हैं कि फुलां बन्दा आप से अपनी ह़ाजत त़लब करता है उस की ह़ाजत को पूरा फ़रमा (ह़ालांकि **अल्लाह** तआ़ला ह़ाजतमन्द और उस की ह़ाजत से ख़ूब बा ख़बर है) **अल्लाह** तआ़ला का फ़रमान होता है कि मेरे बन्दे को सुवाल करता हुवा छोड़ दे कि मैं उस की आवाज़ व दुआ़ को सुनना पसन्द करता हूं। (شرح فتوح الغيب)

خوش ہمی آید مرا آوازِ او　　واں خدا یا گفتن واں رازِ او

तर्जमा : पसन्द आती है मुझ को उस की आवाज़ और उस का "**ऐ ख़ुदा**" कहना और उस की गिर्या व ज़ारी।

हज़रते यह़्या बिन सईद رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने **अल्लाह** तआ़ला को ख़्वाब में देखा। अ़र्ज़ की : इलाही ! मैं अक्सर दुआ़ करता हूं और तू क़बूल नहीं फ़रमाता। हुक्म हुवा : ऐ यह़्या ! मैं तेरी आवाज़ को दोस्त रखता हूं। इस वासित़े तेरी दुआ़ में ताख़ीर करता हूं।

(اَحْسَنُ الْوِعَاءِ لِاٰ دَابِ الدُّعَاءِ، الفصل الثانی،قبول دُعا میں دیر الخ صفحه نمبر ۳۵مطبوعه مکتبة المدينه شهيد مسجد كهارادر كراچى.)

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ

(قرآن مجید،سورة المؤمن آیت نمبر ٦٠،پاره نمبر ٢٤.)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारे रब ने फ़रमाया मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा।

दुआ़ इबादत की रूह़ और उस का मग़्ज़ है क्यूंकि इन्तिहा दर्जे की आ़जिज़ी और नियाज़मन्दी को इबादत कहते हैं और इस का ज़ुहूर सह़ीह़ मा'नों में उसी वक़्त होता है जब इन्सान मसाइब में घिरा हो। दोस्त साथ छोड़ गए हों। हर तदबीर नाकाम हो चुकी हो। ह़ालाते संगीनी ने उस की क़ुव्वत व त़ाक़त को रेज़ा रेज़ा कर डाला हो। जब हर त़रफ़ से उम्मीदें मुन्क़त़अ़ कर के अपने रब्बे करीम के दरे अक़्दस पर आ कर वोह सरे नियाज़

www.dawateislami.net

झुका दे। उस की ज़बान गूंग हो, दिले दर्दमन्द की दास्तां अश्कबार आंखें सुना रही हों और उस को यक़ीन हो कि वोह उस क़ादिरे मुत़्लक़ के सामने पेश हो रहा है और अपनी मुश्किल को बयान कर रहा है जिस के सामने कोई मुश्किल, मुश्किल ही नहीं। नीज़ उसे येह पुख़्ता ए'तिमाद हो कि यहां से कभी कोई साइल ख़ाली नहीं गया मैं भी कभी ख़ाली और मह़रूम नहीं लौटाया जाऊंगा। जो इज्ज़ो नियाज़, ग़ायत तज़ल्लुल, खुशूओ खुज़ूअ़ उस वक़्त ज़ुहूर पज़ीर होता है इस की मिसाल कहां मिलेगी ! येह है दुआ़ की लज़्ज़त व चाश्नी अगर कोई समझे।

(تفسیر ضیاء القرآن،سورۃ المؤمن آیت نمبر ٦٠،پارہ نمبر ٢٤،
الجلدالرابع صفحہ نمبر ٣١٤ مطبوعہ ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاھور،کراچی.)

दुआ़ की अहम्मिय्यत :- हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया "اَلدُّعَآءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ ۝" **तर्जमा :-** दुआ़ इबादत का मग़्ज़ है।

(ترمذی شریف، کتاب الدعوات،باب ماجاء فی فضل الدعاء،رقم
الحدیث ٣٣٨٢،الجلد الخامس صفحہ نمبر ٢٤٣ مطبوعہ دارالفکربیروت.)

दुआ़ मोमिन का हथयार है :- ताजदारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اَلدُّعَآءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِنِ وَعِمَادُ الدِّيْنِ وَنُوْرُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ ۝

(اَلمستدرک علی الصحیحین، کتاب الدُعاء الخ،باب الدُعاء سلاح المؤمن الخ رقم
الحدیث ١٨٥٥،الجلد الثانی صفحہ نمبر ١٦٢ دارالمعرفه بیروت.)

तर्जमा :- दुआ़ मोमिन का हथयार है और दीन का सुतून और आस्मानो ज़मीन का नूर है।

दूसरी ह़दीसे मुबारक में है कि इरशाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें वोह चीज़ न बताऊं। जो तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से नजात दे और तुम्हारे रिज़्क़ वसीअ़ कर दे (लिहाज़ा) रात दिन अल्लाह तआ़ला से दुआ़ मांगते रहो कि दुआ़ सिलाहे़ मोमिन (मोमिन का हथयार) है।

(مسند ابی یعلی الموصلی،مسند جابربن عبداللہ رضی اللہ عنہ، رقم
الحدیث ١٨٠٦،الجلدالثانی صفحہ نمبر ٢٠١/٢ مطبوعہ دارالکتب العلمیه بیروت.)

www.dawateislami.net

दुआ़ का दरवाज़ा खुलना रहमत का दरवाज़ा खुलना है

नबिय्ये मुकर्रम नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

مَنْ فُتِحَ لَهٗ مِنْكُمْ بَابُ الدُّعَآءِ فُتِحَتْ لَهٗ اَبْوَابُ الرَّحْمَةِ وَمَاسُئِلَ اللّٰهُ شَيْئًا يَعْنِىْ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ اَنْ يُّسْئَالَ الْعَافِيَةَ ٥

(ترمذی شریف، کتاب الدعوات، باب فی دعاء النبی ﷺ، رقم الحدیث ۳۵۵۹، الجلد الخامس صفحہ نمبر ۳۲۲ دارالفکر بیروت)

दुआ़ दाफ़ेए़ बला है :- नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बला उतरती है फिर दुआ़ उस से जा मिलती है तो दोनों कुश्ती लड़ते रहते हैं क़ियामत तक या'नी दुआ़ उस बला को उतरने नहीं देती। (طبرانی، حاکم)

इबादात में दुआ़ का मक़ाम :- ह़ज़रते अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं इबादात में दुआ़ की वोही ह़ैसिय्यत है जो खाने में नमक की।

(تنبیہ الغافلین، باب الدُّعاء صفحہ نمبر ۲۱۶ مطبوعہ دارالکتاب العربی بیروت.)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! दुआ़ एक ने'मते उ़ज़्मा है जो **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त ने अपने बन्दों को करामत फ़रमाई ह़ल्ले मुश्किलात में इस से ज़ियादा कोई चीज़ मुअस्सिर नहीं और दाफ़ेए़ बला व आफ़त में कोई बात इस से बेहतर नहीं।

एक दुआ़ से बन्दे को पांच फ़ाएदे ह़ासिल होते हैं।

﴾1﴿ आ़बिदों के गुरौह में दाख़िल होता है कि दुआ़ फ़ी नफ़्सिही इ़बादत बल्कि सिरे इ़बादत है।

ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اَلدُّعَآءُ هُوَالْعِبَادَةُ٥ **तर्जमा :** दुआ़ ही इ़बादत है।

(کتاب السنن، کتاب الوتر، باب الدُّعاء، رقم الحدیث ۱۴۷۹، الجلد الثانی صفحہ نمبر ۱۰۹ مطبوعہ داراحیاء التراث العربی بیروت. ترمذی شریف، کتاب التفسیر، باب سورۃ المؤمن، رقم الحدیث ۳۲۵۸، الجلد الخامس صفحہ نمبر ۱۶۲ مطبوعہ دارالفکر بیروت.)

www.dawateislami.net

﴾2﴿ दुआ़ करने वाला अपने इज्ज़ो एह़तियाज का इज़्हार और अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के करम व कुदरत का ए'तिराफ़ करता है।

﴾3﴿ इम्तिसाले अम्रे शरअ़ (शरअ़ के हुक्म की ता'मील) करता है कि शारेअ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इस पर ताकीद फ़रमाई और दुआ़ न मांगने पर ग़ज़बे इलाही की वईद सुनाई।

﴾4﴿ इत्तिबाए सुन्नत कि हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अक्सर औक़ात दुआ़ मांगते और दूसरों को भी ताकीद फ़रमाते।

﴾5﴿ दफ़्ए़ बला और हुसूले मुद्दआ़ है कि दाई (दुआ़ करने वाला) अगर बला से पनाह चाहता है **अल्लाह** तआ़ला पनाह देता है और जो वोह किसी बात की त़लब करता है तो अपनी रह़मत से उस को अ़त़ा फ़रमाता है या आख़िरत में सवाब बख़्शता है।

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत है कि बन्दे की दुआ़ तीन बातों से ख़ाली नहीं होती। ﴾1﴿ या उस का गुनाह बख़्शा जाता है। ﴾2﴿ या दुन्या में उसे फ़ाएदा ह़ासिल होता है या ﴾3﴿ उस के लिये आख़िरत में भलाई जम्अ़ की जाती है (और उस की शान येह होती है कि) जब बन्दा अपनी उन दुआ़ओं का सवाब देखेगा जो दुन्या में मुस्तजाब न हुई थीं तो तमन्ना करेगा : काश ! दुन्या में मेरी कोई दुआ़ क़बूल न होती और सब यहीं (आख़िरत) के वासिते़ जम्अ़ रहतीं।

(اَحْسَنُ الْوِعَاءِ لِاٰدَابِ الدُّعَاءِ،الفصل الاول،فضائل دُعا صفحہ نمبر ۸/۷مطبوعہ مکتبۃالمدینہ شہید مسجد کھارادر کراچی.)

दुआ़ओं में अपने इस्लामी भाइयों को भी शामिल रखें

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :–

وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ ○

(قرآن مجید،سورۃ الحشر آیت نمبر ۱۰،پارہ نمبر ۲۸.)

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो उन के बा'द आए अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब हमें बख़्श दे और हमारे भाइयों को जो हम से पहले ईमान लाए।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने इस अ़मल को बत़ौरे इस्तिह़सान इरशाद फ़रमाया कि जहां बा'द में आने वाले मुसलमान अपने लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करते हैं वहां वोह पहले वाले मुसलमानों के लिये भी दुआ़ए मग़्फ़िरत करते हैं क्यूंकि येह सूदमन्द अ़मल है अगर दूसरे मुसलमान भाइयों के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत फ़ाएदे मन्द न होती तो इस अ़मल को बत़ौरे इस्तिह़सान बयान न फ़रमाया जाता क्यूंकि कलामे इलाही में फ़ुज़ूलियात की कोई गुन्जाइश नहीं।

जिस त़रह़ एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान के लिये दुआ़ करना फ़ाएदे से ख़ाली नहीं इसी त़रह़ दूसरे माली या बदनी आ'माल का सवाब पहुंचाना भी फ़ाएदे से ख़ाली नहीं है।

अ़दम मौजूदगी में दुआ़ और इस का फ़ाएदा

हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया :- एक मुसलमान आदमी अपने किसी मुसलमान भाई के लिये उस की अ़दमे मौजूदगी में दुआ़ करे तो वोह दुआ़ मक़्बूल होती है। (और) इस (दुआ़ करने वाले) के सर के पास एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर होता है। जब भी वोह अपने भाई के लिये दुआ़ करता है तो वोह फ़िरिश्ता कहता है : आमीन (या'नी तेरी दुआ़ क़बूल हो) और तुझे भी वोही ने'मत अ़त़ा हो। (مسلم شریف، کتاب الذکر والدعاء الخ باب فضل الدعاء للمسلمین الخ، رقم الحدیث ۲۷۳۳، صفحہ نمبر ۱۴۶۲ مطبوعہ دارابن حزم بیروت.)

मुसलमानों के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करने पर नेकियों की बिशारत

सह़ीह़ ह़दीस में आता है कि जो सब मुसलमान मर्दों और मुसलमान औ़रतों के लिये इस्तिग़्फ़ार करे अल्लाह तआ़ला उस के लिये हर मुसलमान मर्द और मुसलमान औ़रत के बदले एक नेकी लिखेगा।
(طبرانی فی الکبیر راوی حضرت عبادہ بن صامت رضی اللہ عنہ)

www.dawateislami.net

अबू शैख़ अस्बहानी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने हज़रते साबित बुनानी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत की, कि हम से ज़िक्र किया गया जो शख़्स मुसलमान मर्दों और औरतों के लिये दुआ़ए ख़ैर करता है क़ियामत के दिन जब वोह उन की मजलिसों पर गुज़रेगा तो एक कहने वाला कहेगा : येह वोह है जो तुम्हारे लिये दुन्या में दुआ़ए ख़ैर करता था। पस वोह उस की शफ़ाअ़त करेंगे और जनाबे इलाही में अ़र्ज़ कर के उसे बिहिश्त में ले जाएंगे।

(اَحسَنُ الوِعَاء لِآدابِ الدُّعَاءِ،الفصل الثانی،عام مسلمانوں کے حق میں دُعا کے فضائل الخ صفحہ نمبر ۲۶/۲۷ مطبوعہ مکتبۃ المدینہ کراچی.)

दुआ़ न करने पर मज़म्मत :- हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ न करे **अल्लाह** तआ़ला उस पर ग़ज़ब फ़रमाए। आ'ला हज़रत رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तह़रीर फ़रमाते हैं कि येह मा'ना बा'ज़ अह़ादीसे क़ुदसी में भी आते हैं।

अल ह़दीसुल क़ुदसी :-

عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ! قَالَ اللّٰہُ تَعَالٰی! مَنْ لَّا یَدْعُوْنِیْ اَغْضَبُ عَلَیْہِ ٥

तर्जमा :- या'नी **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है जो मुझ से दुआ़ न करेगा मैं उस पर ग़ज़ब फ़रमाऊंगा। (العیاذ باللہ تعالٰی)

(اَحسَنُ الوِعَاء لِآدابِ الدُّعَاءِ،الفصل الاول،فضائل دُعا،صفحہ نمبر ۵/۶مطبوعہ مکتبۃ المدینہ شہید مسجد کھارادر کراچی.)

मन्क़ूल है कि चार आदमियों में कोई भलाई नहीं :

अव्वल दुरूदो सलाम में बुख़्ल करने वाला।

दुवुम अज़ान का जवाब न देने वाला।

सिवुम नेक काम में किसी की मदद न करने वाला।

चहारुम नमाज़ों के बा'द अपने और तमाम मोमिनीन के लिये दुआ़ न करने वाला। (تنبیہ الغافلین،باب الدُعا،صفحہ نمبر ۸ ا ۲ مطبوعہ دارالکتاب العربی بیروت.)

ह़दीस शरीफ़ में है : **अल्लाह** तआ़ला ह़या वाला करम वाला है उस से ह़या फ़रमाता है कि उस का बन्दा उस की त़रफ़ हाथ उठाए और उन्हें ख़ाली फेर दे (बल्कि) जो दुआ़ न मांगे **अल्लाह** तआ़ला उस पर ग़ज़ब फ़रमाता है।

(ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت رضی اللہ عنہ حصہ اول صفحہ نمبر ۱ ۲ ا مطبوعہ مشتاق بُک کارنر،الکریم مارکیٹ اردوبازار لاھور.)

www.dawateislami.net

आदाबे दुआ़ :- **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ○

(قرآن مجید،سورۃ الاعراف آیت نمبر ۵۵،پارہ نمبر ۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अपने रब से दुआ़ करो गिड़ गिड़ाते और आहिस्ता बेशक ह़द से बढ़ने वाले उसे पसन्द नहीं।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! दुआ़ **अल्लाह** तआ़ला से ख़ैर त़लब करने को कहते हैं और येह दाख़िले इ़बादत है क्यूंकि दुआ़ करने वाला अपने आप को आ़जिज़ व मोह़ताज और अपने परवरदगार عَزَّوَجَلَّ को ह़क़ीक़ी क़ादिर और ह़ाजत रवा ए'तिक़ाद करता है। इसी लिये ह़दीसे मुबारक में वारिद हुवा "اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ ○" तज़र्रुअ़ से इज़्हारे इ़ज्ज़ो ख़ुशूअ़ मुराद है और अदबे दुआ़ में येह है कि आहिस्ता हो।

ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़ौल है कि आहिस्ता दुआ़ करना अ़लानिया दुआ़ करने से सत्तर दरजा ज़ियादा अफ़्ज़ल है।

इस में उ़लमा का इख़्तिलाफ़ है कि इ़बादात में इज़्हार अफ़्ज़ल है या इख़्फ़ा ? बा'ज़ कहते हैं कि इख़्फ़ा अफ़्ज़ल है क्यूंकि वोह रिया से बहुत दूर है बा'ज़ कहते हैं कि इज़्हार अफ़्ज़ल है इस लिये कि इस से दूसरों को रग़बते इ़बादत पैदा होती है। तिरमिज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ ने कहा कि अगर आदमी अपने नफ़्स पर रिया का अन्देशा रखता हो तो उस के लिये इख़्फ़ा अफ़्ज़ल है और अगर क़ल्ब साफ़ हो अन्देशए रिया न हो तो इज़्हार अफ़्ज़ल है।

(تفسیر خزائن العرفان،سورۃ الاعراف آیت

نمبر ۵۵،پارہ نمبر ۸،صفحہ نمبر ۲۸۳ مطبوعہ پاک کمپنی اردوبازار لاہور۔)

दूसरी बात आयते करीमा में येह है कि **अल्लाह** तआ़ला (मो'तदीन) या'नी ह़द से बढ़ने वालों को पसन्द नहीं फ़रमाता इस की तशरीह़ करते हुवे साह़िबे तफ़्सीरे ज़ियाउल क़ुरआन ने फ़रमाया :

ए'तदा कहते हैं ह़द से तजावुज़ करने को यहां इस दुआ़ करने वाले को मो'तदी (ह़द से तजावुज़ करने वाला) कहा गया है जो ऐसे उमूर के लिये

www.dawateislami.net

दुआ़ करे जो अ़क़्लन या शरअ़न ममनूअ़ हों। मसलन नबुव्वत के मर्तबे तक रसाई की दुआ़, किसी ह़राम चीज़ के लिये दुआ़ या मुसलमानों के ह़क़ में बद दुआ़ या जो आदाबे दुआ़ को नज़र अन्दाज़ कर दे।

(تفسیر ضیاء القرآن،سورۃ الاعراف آیت نمبر ۵۵پارہ نمبر ۸،الجلدالثانی صفحہ نمبر ۹ ۳مطبوعہ ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور،کراچی.)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! क़ब्ल इस के कि आदाबे दुआ़ पर कुछ अ़र्ज़ किया जाए पहले आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के क़लम से निकले हुवे अल्फ़ाज़ समाअ़त फ़रमाएं : आप **अह़सनुल विआ़इ लि आदाबिद्दुआ़इ** की शर्ह़ **ज़ैलुल मुद्दआ़इ लि अह़सनिल विआ़इ** में तह़रीर फ़रमाते हैं कि

आदाबे दुआ़ जिस क़दर हैं सब अस्बाबे इजाबत हैं इन का इजतिमाअ़ اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ मूरिसे इजाबत (क़बूलिय्यत का सबब) होता है बल्कि इन आदाबे दुआ़ में बा'ज़ ब मन्ज़िलए शर्त़ हैं जैसे हुज़ूरे क़ल्ब या'नी दिल का ह़ाज़िर होना कि ग़ैर की त़रफ़ ध्यान न हो) और صَلٰوۃٌعَلَی النَّبِیِّ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم (या'नी नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ पढ़ना) और बा'ज़ दीगर वोह मोह़सिनात व मुस्तह़सनात या'नी आरास्ता व ख़ूब सूरत करने वाले हैं सुम्म अक़ूलु (या'नी फिर मैं कहता हूं कि) यहां कोई अदब ऐसा नहीं जिसे ह़क़ीक़तन शर्त़ कहिये बई मा'ना (या'नी इस मा'ना में) कि इजाबत इस पर मौक़ूफ़ हो कि अगर वोह न हो तो इजाबत ज़न्हार (या'नी क़बूलिय्यत हरगिज़) न हो।

अब येह हुज़ूरे क़ल्ब ही है कि जिस की निस्बत ख़ुद ह़दीस शरीफ़ में इरशाद हुवा :

अल ह़दीस :- وَاعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ لَا يَقْبَلُ دُعَآءً مِّنْ قَلْبٍ غَافِلٍ لَاهٍ ؈

(المستدرک علی الصحیحین،کتاب الدُعاء الخ باب لایقبل دعاء الخ رقم الحدیث ۱۸۲۰،الجلد الثانی صفحہ نمبر ۱۶۲ دارالمعرفہ)

ख़बरदार हो ! बेशक **अल्लाह** तआ़ला दुआ़ क़बूल नहीं फ़रमाता किसी ग़ाफ़िल खेलने वाले दिल की।

www.dawateislami.net

हालांकि बारहा सोते में जो मह्ज़ बिला क़स्द ज़बान से निकल जाए वोह मक़्बूल हो जाता है लिहाज़ा ह़दीसे सह़ीह़ में इरशाद हुवा कि जब नींद ग़लबा करे तो ज़िक्रो नमाज़ मुल्तवी कर दो। मबादा (ऐसा न हो कि) चाहो इस्तिग़फ़ार और नींद में निकल जाए बद दुआ़ तो साबित हुवा कि यहां शर्त़ ब मा'ना ह़क़ीक़ी नहीं बल्कि येह मक़्सूद है कि इन शराइत़ का इजतिमाअ़ हो तो वोह दुआ़ बर वजए कमाल है और इस में तवक़्क़ोए इजाबत को निहायत क़ुव्वत और अगर शराइत़ से ख़ाली हो तो फ़ी नफ़्सिही हो रजाए क़बूल (क़बूल की उम्मीद) नहीं अलबत्ता करम व रह़मत या तवाफ़िक़े साअ़ते इजाबत (क़बूलिय्यत की घड़ी के इत्तिफ़ाक़ की वज्ह से) क़बूल हो जाना दूसरी बात है येह फ़ाएदा ज़रूर मुलाह़ज़ा रखिये।

अदब नम्बर 1 :- दुआ़ करते वक़्त दिल को ह़त्तल इमकान ख़यालाते ग़ैर से पाक करे।

अदब नम्बर 2 :- आ'ज़ा को ख़ाशेअ़ (आ़जिज़ी वाला) और दिल को ह़ाज़िर करे ह़दीस में है : **अल्लाह** तआ़ला ग़ाफ़िल दिल की दुआ़ नहीं सुनता ऐ अ़ज़ीज़ हैफ़ (अफ़्सोस) है कि ज़बान से उस की क़ुदरत व करम का इक़रार करे और दिल दूसरों की अ़ज़्मत व बड़ाई से पुर हो।

बनी इस्राईल ने अपने पैग़म्बर عَلَيْهِ السَّلَام से शिकायत की, कि हमारी दुआ़ क़बूल नहीं होती, जवाब आया : उन की दुआ़ किस त़रह़ क़बूल करूं कि वोह ज़बान से दुआ़ करते हैं और दिल उन के ग़ैरों की त़रफ़ मुतवज्जेह रहते हैं।

अदब नम्बर 3 :- दुआ़ के वक़्त बा वुज़ू क़िब्ला रू मुअद्दब दो ज़ानू बैठे (जिस त़रह़ नमाज़ के क़ा'दे में बैठते हैं) मगर क़िब्ला रू बैठने में बा'ज़ मवाक़ेअ़ मुस्तशना हैं जैसे मजलिस में सब क़िब्ला रू बैठे हैं उ़लमा व मशाइख़ में से कोई जब दुआ़ करेंगे तो उन का रुख़ लोगों की त़रफ़ होगा और पीठ क़िब्ला शरीफ़ की त़रफ़ होगी।

यूंही इमाम के लिये भी है कि दाएं या बाएं मुड़ जाए और अगर इस की मुह़ाज़ में मुक़्तदी नमाज़ न पढ़ रहा हो तो मुक़्तदियों की त़रफ़ भी मुंह कर सकता है इस ह़ालत में भी पीठ क़िब्ला शरीफ़ की त़रफ़ होगी।

www.dawateislami.net

यूंही सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर पर जब कोई खुश नसीब हाज़िरी देते वक़्त दुआ करेगा तो उस वक़्त भी पीठ क़िब्ला शरीफ़ की त़रफ़ होगी।

अदब नम्बर 4 :– निगाह नीची रखे वरना مَعَاذَالله ज़वाले बसर या'नी आंख की बीनाई के ज़ाइल होने का ख़ौफ़ है। अगर्चे येह वईद ह़दीसे मुबारक में दुआए नमाज़ के लिये वारिद है मगर उ़लमा इसे आ़म फ़रमाते हैं।

अदब नम्बर 5 :– ब कमाले अदब हाथ आस्मान की त़रफ़ उठा कर सीने या शानों या चेहरे के मुक़ाबिल लाए या पूरे उठाए यहां तक कि बग़ल की सपेदी (या'नी पसीने की वज्ह से क़मीज़ का वोह ह़िस्सा जो बग़ल के साथ होता है सपेद हो जाता है) ज़ाहिर हो येह इब्तिहाल (या'नी **अल्लाह** तआ़ला से गिड़गिड़ा कर दुआ मांगना) है।

अदब नम्बर 6 :–हथेलियां फैली रखें या'नी उन में ख़म न हो जिस त़रह़ पानी को चुल्लू में लेते वक़्त ख़म होता है क्यूंकि आस्मान क़िब्लए दुआ है सारी कफ़े दस्त (हथेली) मुवाजए आस्मान (आस्मान के सामने) है।

अदब नम्बर 7 :– दोनों हाथ खुले रखे कपड़े वग़ैरा से पोशीदा न हों। ह़ज़रते जुन्नून मिस्री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दुआ में सर्दी के सबब सिर्फ़ एक हाथ निकाला था। इल्हाम हुवा एक हाथ उठाया हम ने उस में रख दिया जो रखना था दूसरा उठाता तो उसे भी भर देते।

(ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت رضی اللہ عنہ: حصہ اوّل صفحہ نمبر ۱۲۱
مطبوعہ مشتاق بک کارنر اردو بازار لاہور)

हाथ उठाना और रब्बे करीम के हुज़ूर फैलाना इज़्हारे इज्ज़ो फ़क़्र के लिये मशरूअ़ (शरअ़ के मुवाफ़िक़) हुवा। लिहाज़ा हाथों का छुपाना इस के मुख़िल (ख़लल डालने वाला) होगा जैसे नमाज़ में मुंह छुपाना मकरूह हुवा कि सूरते तवज्जोह के ख़िलाफ़ है अगर्चे रब तआ़ला से कुछ निहां (छुपा हुवा) नहीं।

अदब नम्बर 8 :– दुआ के लिये अव्वल व आख़िर ह़म्दे इलाही बजा लाए कि **अल्लाह** तआ़ला से ज़ियादा कोई अपनी ह़म्द को दोस्त रखने वाला नहीं। थोड़ी ह़म्द पर बहुत राज़ी होता और बेशुमार अ़त़ा फ़रमाता है।

www.dawateislami.net

अदब नम्बर 9 :- अव्वल व आख़िर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और उन की आल व अस्हाब पर दुरूद भेजे कि दुरूद **अल्लाह** तआला की बारगाह में मक़्बूल है ।

बैहक़ी और अबुश्शैख़ हज़रते सय्यिदुना अली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रावी हैं कि हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

اَلدُّعَآءُ مَحْجُوْبٌ عَنِ اللّٰهِ حَتّٰى يُصَلّٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اَهْلِ بَيْتِهٖ ○

(اَحْسَنُ الْوِعَآءِ لِاٰداب الدُعا، الفصل الثانی آداب دُعاو اسبابِ اجابت میں، صفحہ نمبر ۱۴ مطبوعہ مکتبۃ المدینہ کراچی)

तर्जमा :- दुआ **अल्लाह** तआला से हिजाब में है जब तक मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और उन के अहले बैत पर दुरूद न भेजा जाए ।

ऐ अज़ीज़ ! दुआ ताइर है और दुरूद शहपर । लिहाज़ा ताइरे बे पर क्या उड़ सकता है ? हम्दे इलाही और दुरूद शरीफ़ दोनों के लिये दुआ अव्वल व आख़िर पढ़ने का कहा गया लिहाज़ा यूं समझिये कि इब्तिदाअन एक हक़ीक़ी है और एक इज़ाफ़ी यूंही इन्तिहा लिहाज़ा हम्दे इलाही इब्तिदाअन हक़ीक़ी पर महमूल होगी और दुरूद का पढ़ना इब्तिदाअन इज़ाफ़ी पर महमूल होगा लिहाज़ा पहले हम्दे इलाही करे फिर दुरूद पढ़े ।

अदब नम्बर 10 :- दुआ के शुरूअ में पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को उस के महबूब अस्मा से पुकारे ।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं **अल्लाह** तआला ने इस्मे पाक اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْن पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमाया कि जो शख़्स इसे तीन बार कहता है फ़िरिश्ता निदा करता है : मांग के اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْن तेरी तरफ़ मुतवज्जेह हुवा । (اَحْسَنُ الْوِعَآءِ لِاٰداب الدُعا، الفصل الثانی آداب دُعاو اسبابِ اجابت میں، صفحہ نمبر ۱۵ مطبوعہ مکتبۃ المدینہ کراچی)

एक मरतबा हज़रते ज़ैद बिन हारिसा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने सफ़र के लिये ताइफ़ (मुल्के हिजाज़ का एक क़स्बा) में एक ख़च्चर किराए पर लिया, ख़च्चर वाला डाकू था । वोह आप को सुवार कर के ले चला और एक वीरान

www.dawateislami.net

व सुन्सान जगह पर ले जा कर आप को ख़च्चर से उतार दिया और एक ख़न्जर ले कर आप की त़रफ़ ह़म्ले के इरादे से बढ़ा। आप ने देखा कि वहां हर त़रफ़ लाशों के ढांचे बिखरे पड़े हैं। आप ने फ़रमाया : ऐ शख़्स तू मुझे क़त्ल करना चाहता है लेकिन मुझे इतनी मोहलत दे दे कि मैं दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ लूं। उस बद नसीब ने कहा कि अच्छा तू नमाज़ पढ़ ले। मगर तेरी नमाज़ तुझे बचा न सकेगी।

ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि जब मैं नमाज़ से फ़ारिग़ हुवा तो वोह मुझे क़त्ल करने के इरादे से क़रीब आ गया उस वक़्त मैं ने दुआ़ मांगी और یَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِیْنَ कहा। ग़ैब से आवाज़ आई : ऐ शख़्स ! तू इस मर्दे कामिल को क़त्ल मत कर येह आवाज़ सुन कर वोह डाकू डर गया और इधर उधर देखने लगा लेकिन जब उसे कोई नज़र न आया तो दोबारा अपने इरादे की तक्मील के लिये आगे बढ़ना चाहा तो मैं ने फिर पुकारा : یَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِیْنَ (ऐ सब रह़्म करने वालों से ज़ियादा रह़्म करने वाले) लेकिन उस डाकू पर कुछ असर न हुवा लिहाज़ा जब मैं ने तीसरी मरतबा पुकार कर कहा : یَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِیْنَ आप फ़रमाते हैं : अभी मैं ने येह अल्फ़ाज़ ख़त्म ही किये थे कि एक शख़्स घोड़े पर सुवार नज़र आया और उस के हाथ में ऐसा नेज़ा था जिस की नोक पर आग का शो'ला था। उस आने वाले शख़्स ने मेरे देखते ही देखते डाकू के सीने में इस क़दर ज़ोर से नेज़ा मारा कि नेज़ा उस डाकू के सीने को छेदता हुवा उस की पुश्त के पार निकल गया और यूं उस डाकू का क़िस्सा तमाम हुवा फिर वोह अजनबी सुवार मुझ से कहने लगा कि जब तुम ने पहली मरतबा یَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِیْنَ कहा तो मैं सातवें आस्मान पर था जब तुम ने दूसरी मरतबा पुकारा तो मैं आस्माने दुन्या पर था और जब तुम ने तीसरी मरतबा पुकारा तो मैं तुम्हारे पास इमदाद व नुस्रत के लिये ह़ाज़िर हो गया।

(الاستیعاب فی معرفۃ الأصحاب، الحرف الزامی، باب زید، الجلد الثانی صفحہ نمبر ۵۴۶/۷ مطبوعہ دار الجیل بیروت)

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो ! दुआ़ करते हुवे बारगाहे इलाही में ह़ाजत बर आने के लिये पांच मरतबा **या रब्बना** कहना भी निहायत मुअस्सिरे इजाबत है।

ह़ज़रते इमाम जा'फ़र सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मन्क़ूल है कि जो शख़्स इज्ज़ के वक़्त पांच बार **या रब्बना** कहे **अल्लाह** तआ़ला उसे उस चीज़ से जिस का ख़ौफ़ रखता है अमान बख़्शे और जो चीज़ चाहता है अ़ता फ़रमाए।

(اَحْسَنُ الوِعآءِ لِاٰداب الدُعا،الفصل الثانی آداب دُعا الخ صفحه نمبر ۱۲ مطبوعه مکتبة المدينه شهيد مسجد كهارادر كراچى)

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلْزِمُوْابِيَاذَالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ○

ترمذی شریف،کتاب الدعوات،بابٌ الخ رقم الحديث ۳۵۳۶،الجلدالخامس صفحه نمبر ۳۱۱ مطبوعه دارالفكر بيروت)

तर्जमा :- तुम "يَاذَالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ" के कलिमात को अपने ऊपर लाज़िम कर लो।

अदब नम्बर 11 :- अल्लाह तआ़ला के अस्मा व सिफ़ात और उस की किताबों खुसूसन कुरआने पाक और मलाइका व अम्बियाए किराम बिल खुसूस सय्यिदुल मुर्सलीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलियाउल्लाह رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم اَجْمَعِيْن के वसीले से दुआ़ करें कि मह़बूबाने ख़ुदा के वसीले से दुआ़ क़ुबूल होती है। यूंही अपनी उ़म्र का वोह नेक अ़मल जो ख़ालिसन लि वजहिल्लाह किया हो उस के ज़रीए़ तवस्सुल करें कि जालिबे रह़मत (रह़मत का लाने वाला) है। नेक आ'माल के ज़रीए़ तवस्सुल करना जाइज़ है जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ किताबुल आदाब की ह़दीस से साबित है जो अहले इल्म से मख़्फ़ी नहीं। यूंही मह़बूबाने ख़ुदा के वसीले से दुआ़ करना भी साबित जैसा कि ख़ुद हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ता'लीम फ़रमाया :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُكَ وَاَتَوَجَّهُ اِلَيۡكَ بِمُحَمَّدٍ نَبِيِّ الرَّحۡمَةِ يَا مُحَمَّدُ اِنِّیۡ قَدۡ تَوَجَّهۡتُ بِكَ اِلٰی رَبِّیۡ لِتُقۡضٰی لِیۡ حَاجَتِیۡ اَللّٰهُمَّ فَشَفِّعۡهُ فِیَّ (ابن ماجه شريف،كتاب الصلوٰة،باب ماجاء فى صلاة الحاجة،رقم الحديث ١٣٨٥،الجلدالثانى صفحه نمبر ١٥٦/٧ مطبوعه دارالمعرفه) قال ابو اسحق هٰذا حديث صحيح

www.dawateislami.net

तर्जमा :- ऐ **अल्लाह** मैं तुझ से सुवाल करता हूं और तेरी त़रफ़ नबिय्ये रह़मत ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वसीले से मुतवज्जेह होता हूं। ऐ मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं ने आप के ज़रीए अपने रब की त़रफ़ इस ह़ाजत में तवज्जोह की ताकि मेरी येह ह़ाजत पूरी हो जाए। ऐ **अल्लाह** मेरे लिये हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त को क़बूल फ़रमा।

अदब नम्बर 12 :- दुआ़ मांगने में ह़ाजते आख़िरत को मुक़द्दम रखे कि अम्रे अहम की तक़्दीम ज़रूरी है।

गौ़से आ'ज़म सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अपनी तस्नीफ़े लत़ीफ़ "फ़ुतूहु़ल ग़ैब" जिस की शर्ह़ ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़ारसी में की और इस का उर्दू तर्जमा ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद यूसुफ़ बन्दयालवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने किया इस अनमोल किताब से एक तह़रीर लिखी जाती है ताकि हमें पता चले कि दुआ़ में त़ालिब किस चीज़ को त़लब करे।

قَالَ رَضِیَ اللّٰه عَنْهُ! لَا تَطْلُبَنَّ مِنَ اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ شَيْئًا سِوَى الْمَغْفِرَةِ لِلذُّنُوْبِ السَّابِقَةِ وَالْعِصْمَةِ مِنْهَا فِی الْاَيَّامِ الْآتِيَةِ وَ اللَّاحِقَةِ وَالتَّوْفِيْقِ لِحُسْنِ الطَّاعَةِ وَامْتِثَالِ الْاَمْرِ وَالْاِنْتِهَآءِ عَنِ النَّوَاهِیْ وَالرِّضَآءِ بِمُرِّ الْقَضَآءِ وَالصَّبْرِ عَلٰى شَدَآئِدِ الْبَلَآءِ وَالشُّكْرِ عَلٰى جَزِيْدِ النَّعْمَآءِ وَالْعَطَآءِ ثُمَّ الْوَفَاتِ بِخَاتِمَةِ الْخَيْرِ وَاللُّحُوْقِ بِالْاَنْبِيَآءِ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَ الصَّالِحِيْنَ وَ حَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ○ (شرح فتوح الغيب)

तर्जमा :- ह़ज़रते शैख़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया :

(ऐ दुआ़ करने वाले) गुज़श्ता गुनाहों से मग़फ़िरत और मौजूदा और आइन्दा आने वाले ज़माने में गुनाहों से निगहदाश्त के सिवा कुछ न मांग और **अल्लाह** तआ़ला से उस की तौफ़ीक़ त़लब कर। अच्छी त़ाअ़त व इ़बादत के लिये और शरीअ़त के अह़काम पर अ़मल करने के लिये ना फ़रमानियों से बचने के लिये तल्ख़िये क़ज़ा पर राज़ी रहने और बला की सख़्तियों पर सब्र करने के लिये और ज़ियादतिये ने'मत व अ़त़ा की अदाएगिये

शुक्र के लिये और **अल्लाह** तआ़ला से त़लब कर ख़ातिमा बिलख़ैर और ईमान के साथ मरने को और अम्बिया व सिद्दीक़ीन और शुहदा व सालिह़ीन जो अच्छे रफ़ीक़ हैं उन के साथ आख़िरत में इकठ्ठा होने को (अपनी दुआ़ का जुज़ व लाज़िम बना ले)

अदब नम्बर 13 :- दुआ़ में तकरार चाहिये कि तकरारे सुवाल सिद्क़ त़ालिब पर दलील है और येह उस करीमे ह़क़ीक़ी की शान है कि तकरारे सुवाल से मलाल नहीं फ़रमाता बल्कि न मांगने पर ग़ज़ब फ़रमाता है।

ह़ज़रते शैख़ सा'दी शीराज़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तह़रीर फ़रमाते हैं :

در خبر است از سرور کائنات مفخر موجودات رحمت عالمیان
صفوت آدمیان تتمۂ دور زمان کہ یکے از بندگان گنہگار پریشان روزگار
دست انابت بامید اجابت بدرگاہ خداوند جلّ و علا بردار
ایزد تعالی درو نظر نکند بازش بخواند بار دیگر اعراض فرماید بازش بہ
تضرع وزاری بخواند، حق سبحانہٗ تعالی گوید۔ یامَلائِکَتِی قَدِ
اسْتَحْیَیْتُ مِنْ عَبْدِیْ وَلَیْسَ لَہٗ غَیْرِیْ ○ دعوتش را اجابت
کردم و امیدش بر آوردم کہ از بسیاری دعا و گریۂ بندہ ہمی شرم (گلستان)

तर्जमा :- ह़दीस शरीफ़ में है कि सरवरे काइनात मुफ़ख़्ख़रे मौजूदात रह़मतुल्लिल आ़लमीन मख़्लूक़ में सब से ज़ियादा बरगुज़ीदा नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान ने फ़रमाया :

गुनहगार बन्दा ज़माने का परेशान रुजूअ़ का हाथ क़बूलिय्यत की उम्मीद में **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में उठाता है **अल्लाह** तआ़ला उस पर नज़र नहीं फ़रमाता। बन्दा दोबारा दुआ़ करता है **अल्लाह** तआ़ला ए'राज़ फ़रमाता है। बन्दा फिर गिड़गिड़ाते हुवे गिर्या व ज़ारी करते हुवे दुआ़ करता है। **अल्लाह** तआ़ला (जो तमाम उ़यूब से मुनज़्ज़ा व मुबर्रा है) फ़िरिश्तों से फ़रमाता है : ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! मुझे ह़या आई अपने बन्दे से कि उस का मेरे सिवा कोई नहीं। उस की दुआ़ को मैं ने क़बूल किया और उस की

www.dawateislami.net

उम्मीद को मैं ने पूरा किया कि बन्दे की दुआ़ और बहुत गिर्या व ज़ारी से मैं ह़या फ़रमाता हूं।

अदब नम्बर 14 :– दुआ़ फ़ह्म मा'ना के साथ हो लफ़्ज़े बे मा'ना क़ालिबे बे जान है लिहाज़ा अ़रबी में दुआ़ जो इजाबत से ज़ियादा क़रीब होती है वोह जब ही मुफ़ीदे कामिल है जब कि मा'ना भी समझ में आएं चुनान्चे, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं जो अ़रबी न समझता हो और अ़रबी दुआ़ का मा'ना सीख कर ब तकल्लुफ़ उस की त़रफ़ ख़याल ले जाना मुश्तूशे ख़ात़िर व मुख़िले हु़ज़ूर हो (या'नी दिल की परेशानी और हु़ज़ूरे क़ल्बी में ख़लल हो) तो दुआ़ करने वाला अपनी ही ज़बान में **अल्लाह** तआ़ला को पुकारे कि हु़ज़ूर व यक्सूई अहम उमूर हैं।

अदब नम्बर 15 :– आंसू बहाने में कोशिश करे अगर्चे एक ही क़त़रा हो कि दलीले इजाबत है अगर रोना न आए तो रोने का सा मुंह बनाए कि नेकों की सूरत भी नेक है ऐसा करना **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा की त़लब में हो न कि दूसरों के दिखाने के लिये कि वोह देख रहा है। ऐसा करना ह़राम है। लिहाज़ा येह नुक्ता याद रहे। ह़ज़रते का'ब अह़बार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि फ़रमाया : मुझे ख़ौफ़े ख़ुदा से बहने वाले आंसू पहाड़ के बराबर सोना सदक़ा करने से ज़ियादा मह़बूब हैं।

अदब नम्बर 16 :– दुआ़ अ़ज़्मो जज़्म के साथ हो येह ख़याल न करे कि क़बूल हो या न हो इसी त़रह़ दिल में फ़ासिद वस्वसे न लाए।

यक़ीने कामिल :– ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हम एक मरतबा अबू उ़स्मान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की इयादत को गए हम में से किसी ने कहा : ऐ अबू उ़स्मान ! हमारे लिये दुआ़ कीजिये आप बीमार हैं और मरीज़ की दुआ़ बहुत जल्द क़बूल होती है। चुनान्चे, उन्हों ने हाथ उठाए उन के साथ हम ने भी हाथ उठा लिये। ह़म्दो सना के बा'द क़ुरआने पाक की चन्द आयात तिलावत कीं। दुरूद शरीफ़ पढ़ा, इस के बा'द दुआ़ की फिर फ़रमाया :

www.dawateislami.net

मुबारक हो अल्लाह तआ़ला ने दुआ़ क़बूल फ़रमा ली। हम ने पूछा : आप को कैसे ख़बर हुई ? फ़रमाया : वाह अगर ह़सन बसरी मुझ से कोई बात कहें तो मैं तस्दीक़ करूं और जब अल्लाह तआ़ला ने क़बूलिय्यत का वा'दा फ़रमाया है तो फिर उस की तस्दीक़ क्यूं न करूं कि कुरआन में है :

اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ

(قرآن مجید،سورۃ المؤمن آیت نمبر ۶۰،پارہ نمبر ۲۴.)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा।

अदब नम्बर 17 :- तन्दुरुस्ती व ख़ुशी व फ़राख़ दस्ती की ह़ालत में दुआ़ की कसरत करे। ताकि सख़्ती व रन्ज में भी दुआ़ क़बूल हो।

الحدیث :- مَنْ سَرَّهٗ اَنْ یَّسْتَجِیْبَ اللّٰهُ لَهٗ عِنْدَ الشَّدَآئِدِ وَالْكُرَبِ فَلْيُكْثِرِ الدُّعَآءَ فِی الرَّخَآءِ ۝

(اَحْسَنُ الْوِعَآءِ لِآدَابِ الدُّعَآءِ،الفصل الثانی،آداب دُعا الخ،صفحہ نمبر ۳۸ مطبوعہ مکتبۃ المدینہ شہید مسجد کھارادر کراچی.)

तर्जमा :- जिस को येह पसन्द हो कि मुश्किलात के वक़्त अल्लाह तआ़ला उस की दुआ़ क़बूल फ़रमाए तो उसे चाहिये कि आसाइश के वक़्त दुआ़ की कसरत करे।

अदब नम्बर 18 :- दुआ़ में तकब्बुर और शर्म से बचे। मसलन तन्हाई में दुआ़ निहायत तज़र्रुअ़ व इल्हाह़ (आ़जिज़ी व इन्किसारी गिड़गिड़ाते हुवे) से कर रहा था कि कोई आ गया तो आने वाले को देख कर इस ह़ालत को शर्म की वज्ह से मौक़ूफ़ कर देना। येह सख़्त ह़माक़त और बे वुक़ूफ़ी है कि अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर गिड़गिड़ाना मूजिबे हज़ारां (हज़ार की जम्अ़) इ़ज़्ज़त है। न कि مَعَاذَاللّٰه ख़िलाफ़े शानो शौकत।

अदब नम्बर 19 : दुआ़ तन्हाई में करे ताकि रिया का शुबा ही न रहे अगर बिग़ैर रिया लोगों के हमराह दुआ़ करे तो कोई ह़रज नहीं बिलख़ुसूस बड़े बड़े इजतिमाआ़त में न जाने किस बन्दए ख़ुदा की आमीन पर सब का बेड़ा पार हो जाए।

www.dawateislami.net

अगर मज्मअ़ में रियाकारी का अन्देशा हो तो एह़तिराज़ करे और तन्हाई में अपने लिये अपने दूसरे मुसलमान भाइयों के लिये दुआ़ करे और इस बात को हमेशा पेशे नज़र रखे कि दुआ़ करते वक़्त अपने नफ़्स के साथ वालिदैन, असातिज़ा, उ़लमा व मशाइख़ और इस्लामी भाइयों को भी शामिल रखे, इस की फ़ज़ीलत पहले बयान की जा चुकी।

दुआ़ और तन्हाई :- अल ह़दीस : पोशीदा की एक दुआ़ अ़लानिया की सत्तर(70) दुआ़ के बराबर है। (अबुश्शैख़, दैलमी रावी ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ)

अदब नम्बर 20 :- दुआ़ में सिर्फ़ मुद्दआ़ पर नज़र रखे बल्कि नफ़्से दुआ़ को मक़्सूद बिज़्ज़ात जाने कि दुआ़ ख़ुद इ़बादत है बल्कि मग़्ज़े इ़बादत है। मक़्सद मिलना या न मिलना दर किनार लज़्ज़ते मुनाजात नक़्दे वक़्त है लिहाज़ा ब ज़ाहिर मक़्सूद न पाए लेकिन फिर भी दुआ़ में कोताही न करे।

अदब नम्बर 21 :- दुआ़ करने के बा'द दोनों हाथ चेहरे पर फेरे कि वोह ख़ैरो बरकत जो ब ज़रीअ़ए दुआ़ ह़ासिल हुई अशरफ़ुल आ'ज़ा या'नी चेहरे से मुलाक़ी (मुलाक़ात करने वाली) हो।

ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि फ़रमाया : जब तुम अपने हाथ अल्लाह तआ़ला की बारगाह में उठा कर दुआ़ व सुवाल करो (दुआ़ के बा'द) उन्हें मुंह पर फेर लो कि अल्लाह तआ़ला ह़या व करम वाला है जब बन्दा अपने दोनों हाथ उठाता और सुवाल करता है तो अल्लाह तआ़ला ख़ाली हाथ फेरने से ह़या फ़रमाता है पस इस ख़ैर को अपने मुंहों पर मस्ह़ करो (या'नी रब्बे करीम हाथ ख़ाली नहीं फेरता।) या तो वोही ख़ैर जिस की त़लब की गई या दूसरी ने'मत ब तक़ाज़ाए ह़िक्मत मर्ह़मत फ़रमाता है लिहाज़ा ब नज़र उस ने'मत व बरकत के दुआ़ के बा'द मुंह पर हाथ फेरना मुक़र्रर हुवा। (اَحْسَنُ الْوِعَاء)

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि फ़रमाया :-

www.dawateislami.net

كَانَ اَكْثَرُ دُعَآءِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَللّٰهُمَّ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ٥

(بخاری شریف، کتاب الدعوات، باب قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم ربنااٰتنا الخ، الجلدالثامن صفحہ نمبر ۸۳ مطبوعہ دارطوق النجاۃ بیروت. مسلم شریف، کتاب الذکر والدُّعآء الخ، باب فضل العاءِ باللّٰھُمّ الخ رقم الحدیث ۲۶۹۰، صفحہ نمبر ۱۴۴۵ مطبوعہ دارابن حزم بیروت.)

तर्जमा :- नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अक्सर येह दुआ (या'नी मुतज़क्किरा दुआ) फ़रमाया करते।

अदब नम्बर 22 :- हत्तल वस्अ़ औक़ात व अमाकिन इजाबत की रिआ़यत करे। या'नी वोह औक़ात और मक़ामात जो इजाबते दुआ के अस्बाब हैं जहां तक कोशिश हो उन को मल्हूज़े ख़ातिर रखे। इस की तफ़्सील किताब **(अह्सनुल विआ़इ लि आदाबिदुआ़इ) ज़ैलुल मुद्आ़इ लि अह्सनिल विआ़इ** में देखिये। (اَحْسَنُ الوِعآءِ لِاٰداب الدُّعا، الفصل الثانی آداب دُعاء، الخ، صفحہ نمبر ۱۳ مطبوعہ مکتبۃ المدینہ شھید مسجد کھارادر کراچی)

हलाल रोज़ी किस निय्यत से तलब की जाए ?

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि सय्यिदुल मुतवक्किलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो हलाल रोज़ी सुवाल से बचने, घरवालों की ख़बरगीरी करने और पड़ोसियों पर शफ़्क़त की निय्यत से तलब करेगा वोह क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस हाल में मिलेगा कि उस का चेहरा चौधवीं रात के चांद की तरह (चमकता) होगा और जो हलाल रोज़ी माल बढ़ाने, फ़ख़्र व तकब्बुर और दिखावे की निय्यत से तलब करेगा तो वोह बारगाहे इलाही में इस हाल में हाज़िर होगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से नाराज़ होगा।" (مصنف ابن شیبۃ، کتاب البیوع، باب فی التجارۃ والرغبۃ فیھا، ۵/۲۵۸، حدیث:۷)

www.dawateislami.net

सोते वक़्त की दुआ

اَللّٰھُمَّ بِاسْمِکَ اَمُوْتُ وَ اَحْیَا

तर्जमा :- इलाही मैं तेरे नाम पर मरता हूं और जीता हूं।

(بخاری شریف،کتاب الدعوات،باب مایقول اذانام،الجلدالثامن صفحہ نمبر۶۹مطبوعہ دارطوق النجاۃ بیروت.مسلم شریف،کتاب الذکروالدعآء،باب مایقول عندالنوم الخ رقم الحدیث ۲۷۱۱،صفحہ نمبر۱۴۵۴مطبوعہ دارابن حزم بیروت.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़दीसे मुबारक में मौत और ज़िन्दगी से मुराद सोना जागना है। रब तआ़ला का इस्मे अक़्दस मुमीत भी है और मुह़्यी भी या'नी तेरे ही नाम पर मेरा सोना है और तेरे नाम पर जागूंगा या'नी मैं किसी वक़्त न तुझ से ला परवाह हूं और न तुझ से ग़ाफ़िल **अल्लाह** तआ़ला ही हमें येह फ़ाल भी नसीब फ़रमाए और येह ह़ाल भी।

जब बिस्तर पर जाए तो पहले बिस्तर को किसी कपड़े से झाड़े येह इस सूरत में है जब कि बिस्तर पहले से बिछा हुवा हो अलबत्ता अगर उसी वक़्त बिस्तर बिछाया है तो अब झाड़ने की ह़ाजत नहीं। बेहतर येह है कि पहले क़िब्ला रू दाह्नी करवट पर लेटे फिर चित लेटे और इस के बा'द फिर बाईं करवट पर फिर दोबारा दाह्नी करवट पर इस त़रह़ लेट कर सो जाए कि दाह्ना हाथ दाह्ने रुख़्सार के नीचे हो। दाह्नी करवट पर सोने से ग़फ़्लत ज़ियादा नहीं होती और वक़्त पर आंख खुल जाती है क्यूंकि दिल बाईं त़रफ़ है लिहाज़ा दाह्नी करवट पर भी आराम फ़रमाएं तो आप को ग़फ़्लत आएगी ही नहीं। याद रहे कि येह तमाम मा'मूलात हमारे प्यारे आक़ा व मौला नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से साबित हैं लिहाज़ा इन मा'मूलात पर अ़मल करना हमारे लिये बाइ़से अज्रो सवाब है और ग़फ़्लत व कोताही करना सवाब से मह़रूमी का सबब है।

आख़िर में येह बात याद रखें कि प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी सुन्नत के मुत़ाबिक़ लेटने में एक ह़िक्मत येह भी है कि क़ब्र की याद ताज़ा होती है क्यूंकि क़ब्र में मय्यित को इसी हैयत पर लिटाया जाता है।

www.dawateislami.net

बा वुज़ू सोना मुस्तहब है :- हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम बिस्तर पर जाने का इरादा करो तो वुज़ू कर लो जिस त़रह़ नमाज़ के लिये वुज़ू करते हो।

(بخاری شریف، کتاب الدعوات، باب اذابات طاھرًا، الجلدالثامن صفحہ نمبر ٦٨ مطبوعہ دارطوق النجاۃ بیروت. مسلم شریف، کتاب الذکروالدُعآء، الخ باب مایقول عندالنوم الخ رقم الحدیث ٢٧١٠، صفحہ نمبر ١٤٥٣ دارابن حزم بیروت.)

नींद से बेदार होने की दुआ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَحْیَانَا بَعْدَ مَآ اَمَاتَنَا وَ اِلَیْهِ النُّشُوْرُ

तर्जमा :- तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** तआ़ला के लिये जिस ने हमें मौत (नींद) के बा'द ह़यात (बेदारी) अ़त़ा फ़रमाई और हमें उसी की त़रफ़ लौटना है।

(بخاری شریف، کتاب الدعوات، باب مایقول اذانام، الجلدالثامن صفحہ نمبر ٦٩ مطبوعہ دارطوق النجاۃ بیروت.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस दुआ़ में नींद और बेदारी के लिये ममात व ह़यात के अल्फ़ाज़ आए हैं इस में ह़िक्मत येह ज़ाहिर होती है कि मुसलमान जिन का अ़क़ीदा है कि मरने के बा'द दोबारा ज़िन्दा किया जाएगा चुनान्चे, मुसलमान बन्दा जब सुब्ह़ बेदार हो कर येह दुआ़ पढ़ता है तो इस बात की तस्दीक़ करता है कि मेरा रब जिस त़रह़ सोने के बा'द बेदार करने पर क़ादिर है इसी त़रह़ वोह क़ादिरे मुत़लक़ मरने के बा'द दोबारा ज़िन्दा करने पर भी क़ादिर है।

दूसरी ह़िक्मत येह ज़ाहिर होती है कि मुसलमान बन्दा जब बेदार होते ही इस दुआ़ को पढ़ेगा तो अपनी ज़िन्दगी को बे मक़्सद न जानेगा और मौत को याद रखेगा। या'नी इस बात की फ़िक्र करेगा कि जब तक ह़याते दुन्या का चराग़ मुनव्वर है मौत के लिये तय्यारी करे। (اِلَیْهِ النُّشُوْرُ) से येह सबक़ मिलता है कि जब हमारी ज़िन्दगी का चराग़ गुल हो जाएगा तो हम आ़लमे दुन्या से आ़लमे बरज़ख़ की त़रफ़ फिर क़ियामत के दिन **अल्लाह**

www.dawateislami.net

रब्बुल आ़लमीन की बारगाह में पेश होंगे अगर हमारे आ'माल अच्छे होंगे तो फ़बिहा वरना हमारे लिये अ़ज़ाबे इलाही होगा लिहाज़ा हम उस वक़्त को याद करें और गुनाहों से इजतिनाब कर के नेकियों का इरतिकाब करें वोह मुसलमान जो सब कुछ जानते हुवे भी अपनी क़ीमती ज़िन्दगी को (اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ) (قرآن مجید،سورۃ النسآء آیۃنمبر ۵۹پارہ نمبر ۵.) के मुताबिक़ गुज़ारने के बजाए अपनी ज़िन्दगी के क़ीमती लम्हात को लग़वियात व ख़ुराफ़ात में बरबाद करता है। वोह इस से नसीहत पकड़े। वरना जब मौत आ घेरेगी तो पछताने से कुछ ह़ासिल न होगा।

बैतुल ख़ला में दाख़िल होने से पहले की दुआ़

﴿1﴾ بِسْمِ اللّٰهِ **तर्जमा :-** अल्लाह के नाम से शुरूअ़ करता हूं।

(راوی حضرت انس رضی اللہ عنہ. مصنف ابن أبی شیبہ، کتاب الدُعا،باب مایدعوبہ الرجل یقولہ اذادخل الکنیف،رقم الحدیث ۲۹۹۰۲الجزء٦ صفحہ نمبر۱۱٤مکتبہ الرشدریاض)

﴿2﴾ اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُبِكَ مِنَ الۡخُبُثِ وَالۡخَبَآئِثِ O

तर्जमा :- ऐ अल्लाह मैं नापाक जिन्नों (नर व मादा) से तेरी पनाह मांगता हूं

(بخاری شریف، کتاب الدعوات،باب الدُعاء عندالخلاء،الجلد الثامن صفحہ نمبر ۷۱مطبوعہ دارطوق النجاۃ بیروت.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! बैतुल ख़ला में दाख़िल होने से पहले इन दोनों दुआ़ओं में से किसी एक को पढ़ लें। लेकिन दोनों दुआ़एं पढ़ ली जाएं तो बहुत ही अच्छा है। जब पहली दुआ़ आप ने पढ़ी तो ह़दीस के मुताबिक़ शयात़ीन और बैतुल ख़ला में दाख़िल होने वाले के सतर के दरमियान पर्दा हो जाएगा।

अल ह़दीस :- तर्जमा : जब कपड़े उतारे तो जिन्नों की आंखें और उस की बरहंगी के दरमियान पर्दा येह है कि بِسۡمِ اللّٰهِ कहे।

(مصنف ابن شیبہ، کتاب الدُعا، مایدعوبہ الرجل اذا الخ،رقم الحدیث ۳۹۷۳۵،الجزء ٦،صفحہ نمبر ۹۳،مکتبہ الرشدریاض)

www.dawateislami.net

और फिर जब दूसरी दुआ़ पढ़ी तो उस दुआ़ में अल्लाह तआ़ला से पनाह तृलब की जा रही है क्यूंकि शरीर जिन्न और शयातृीन (मुज़क्कर व मुअन्नस) हर एक हमें नज़र नहीं आते और नापाक जगहें उन का बसेरा हैं तो लाज़िमी था कि ऐसे ईज़ा पहुंचाने वाले शरीर जिन्नों के शर और फ़साद से बचने के लिये अपने आप को ऐसी ज़ाते मुक़द्दसा की पनाह में दें जो ज़बरदस्त क़ुव्वतो ताक़त का मालिको मुख़्तार हो।

गोया नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें ता'लीम दी कि जब तुम बैतुल ख़ला में दाख़िल हो जो शरीर जिन्न व शयातृीन का डेरा है और उन से तुम्हें अज़िय्यत पहुंचने का अन्देशा है फिर वोह तुम्हें नज़र भी नहीं आते और जो दुश्मन नज़र न आए वोह बड़ा ख़तृरनाक होता है। लिहाज़ा तुम ऐसी हस्ती की पनाह तलाश करो जो तुम्हारा ह़क़ीक़ी ह़ाफ़िज़ो नासिर है और वोह ज़ाते बा बरकात रब्बे ज़ुल जलाल की है पस मा'लूम हुवा कि जो बन्दा ता'लीमाते रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर अ़मल करते हुवे बैतुल ख़ला में दाख़िल होता है वोह अल्लाह तआ़ला की पनाह में आ जाता है।

बैतुल ख़ला से बाहर आने के बा'द की दुआ़

﴾1﴿ غُفْرَانَكَ ٥ **तर्जमा :-** (ऐ अल्लाह) मैं तुझ से मग़्फ़िरत तृलब करता हूं।

﴾2﴿ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَذْهَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِیْ

तर्जमा :- अल्लाह तआ़ला का शुक्र है जिस ने मुझ से अज़िय्यत दूर की और मुझे आ़फ़िय्यत दी।

(مصنف ابن شیبہ، کتاب الدعاء، مایدعوبہ الرجل اِذا الخ، رقم الحدیث۲۹۹۷، الجزء٦، صفحہ نمبر۱۱۵، مکتبہ الرشد ریاض)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! मुन्दरिजए बाला दुआ़एं बैतुल ख़ला से निकलने के बा'द पढ़ी जाएं सिर्फ़ एक दुआ़ पढ़ ली जाए तो काफ़ी है। लेकिन अगर दोनों को पढ़ लिया जाए तो नूरुन अ़ला नूर है। ग़ौर कीजिये जब पहली दुआ़ पढ़ी तो अल्लाह तआ़ला जो ग़फ़्फ़ार है उस की बारगाह में अ़र्ज़ किया

www.dawateislami.net

गया : ऐ ईमान वालों की बख़्शिश फ़रमाने वाले मैं भी ईमान वाला हूं और तेरी रहमत का मोह़ताज हूं। ऐ **अल्लाह** मुझे बख़्श दे मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दे और बन्दए आ़जिज़ का अ़मल भी येही होना चाहिये कि हमेशा बन्दा नवाज़ से अपनी मग़फ़िरत की इल्तिजा करता रहे गोया दुआ़ पढ़ कर बन्दा इस बात की शहादत देता है कि ऐ **अल्लाह** न तो मैं तेरी ज़ाते बाक़ी को भूला हूं और न ही अपनी ज़ाते फ़ानी को पस तुझे सिफ़ते ग़फ़्फ़ार से याद किया अब तू अपनी रह़मत से मुझे गुनाहों की ज़ह़मत से बचा कर अपनी जवारे रह़मत में जगह अ़ता फ़रमा और मेरी मग़फ़िरत फ़रमा कर ह़याते जावेदानी अ़ता फ़रमा।

और जब दूसरी दुआ़ पढ़ी तो दुआ़ए मग़फ़िरत के साथ साथ उस ज़ाते मुक़द्दसा का शुक्र अदा किया जो सारी ख़ूबियों का मालिक है और उसे हर बुराई व उ़यूब से मुनज़्ज़ा और मुबर्रा माना और उस के साथ येह ए'लान भी किया कि ऐ मेरे रब मुझे क़ज़ाए ह़ाजत की वज्ह से जो तक्लीफ़ थी तू ने ही उसे दफ़्अ़ किया।

घर में दाख़िल होते वक़्त की दुआ़

﴾1﴿ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَيْرَ الْمَوْلَجِ وَخَيْرَ الْمَخْرَجِ

तर्जमा :- ऐ **अल्लाह** मैं तुझ से अन्दर आने और बाहर जाने की भलाई त़लब करता हूं।

﴾2﴿ بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا وَ بِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا وَعَلَى اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا

तर्जमा :- **अल्लाह** के नाम से हम अन्दर आए और **अल्लाह** के नाम से बाहर निकले और **अल्लाह** पर जो हमारा रब है हम ने भरोसा किया।

(ابو داؤد شریف، کتاب الأدب، باب مایقول الرجل اذا دکل بیته، رقم الحدیث ٥٠٩٦، الجلد الرابع صفحه نمبر ٤٢١ دار احیا التراث. راوی حضرت مالک اشعری رضی اللہ عنہ)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर कीजिये अगर हम रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'लीमात पर अ़मल करें तो हमारे लिये दुन्या अम्न

www.dawateislami.net

का गहवारा बन सकती है और आख़िरत में भी ब फ़ज़्ले ख़ुदा मामून होंगे। जब बन्दा इस दुआ़ को पढ़ता है तो वोह **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़ करता है कि ऐ मेरे मालिको मौला ! मैं तुझ से घर में आने की भलाई मांगता हूं। गोया अ़ब्द अपने मा'बूद से इल्तिजा कर रहा है कि मेरी ज़ात से मेरे घर में फ़ित्ना व फ़साद फैले और न दूसरा मेरी ज़ात को हदफ़ का निशाना बनाए।

इसी त़रह़ फिर बन्दा अ़र्ज़ करता है कि ऐ मालिको मुख़्तार : जहां मैं तुझ से घर में आने की भलाई मांगता हूं साथ ही घर से बाहर जाने की भलाई भी मांगता हूं गोया नियाज़ मन्द बन्दा अपने बे नियाज़ रब से येह इल्तिजा कर रहा है कि घर से बाहर निकलने पर दुन्या की शहवतें और लज़्ज़तें और शैत़ानी जाल मेरा इन्तिज़ार कर रहे हैं। या इलाहल आ़लमीन ! मैं आ़जिज़ व नातुवां हूं तू मुझे तमाम शहवानी व शैत़ानी शर से मह़फ़ूज़ फ़रमा क्यूंकि मेरा निकलना और दाख़िल होना तेरे नाम के साथ है पस तू अपने नामे मुबारक की बरकत से मुझे तमाम बुराइयों व फ़ह़्ह़ाशियों से मह़फ़ूज़ व मामून फ़रमा और आख़िर में येह कह कर कि तू ही हमारा रब (पालने वाला) है और हमारा तुझ पर ही भरोसा है अपनी अ़र्ज़ को कामिल व अक्मल करना है।

जब घर में दाख़िल हों तो येह दुआ़ पढ़ कर घरवालों को सलाम करना चाहिये अगर्चे सिर्फ़ बीवी ही घर में हो आज कल बड़ी अ़जीब बात है कि वोह लोग जो बाहर तो सलाम करते हैं लेकिन वोह बीवी जो उस की रफ़ीक़ए ह़यात है उस पर सलामती के लिये दुआ़ नहीं करते। या'नी उसे सलाम से मह़रूम रखते हैं। जानना चाहिये कि बीवी को सलाम करना मन्अ़ नहीं है बल्कि वोह भी इस की ह़क़दार है।

अगर घर में कोई भी मौजूद न हो तो यूं सलाम करे

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ ○

तर्जमा :- ऐ **अल्लाह** के नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप पर सलाम हो।

क्या अ़जब है कि सलाम क़बूल हो जाए और जवाब में सलामतियों और रह़मतों से नवाज़ा जाए। क्यूंकि हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूहे मुबारक मुसलमानों के घरों में मौजूद होती है। (ردالمحتار و مرقاة بحواله سُنّی بهشتی زیور)

www.dawateislami.net

अगर ऐसे वक़्त घर में दाख़िल हो कि अह़बाब सो रहे हों तो आहिस्ता से सलाम करे। आवाज़ बुलन्द न करे जैसा कि इब्तिदा में बयान किया गया कि घर में दाख़िल हो तो पहले दुआ़ पढ़े फिर दाख़िल हो कर घरवालों को सलाम करे। सलाम करने के बा'द का एक अ़मल तह़रीर किया जाता है जिस पर अ़मल कीजिये कि वोह रिज़्क़ की कुशादगी के लिये बड़ा मुफ़ीद है।

ह़ज़रते सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि एक शख़्स ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में आ कर अपनी मुफ़्लिसी व मोह़ताजी को बयान किया। आप ने फ़रमाया : जब तुम अपने घर में दाख़िल हुवा करो अगर वहां कोई मौजूद हो उस को सलाम कहो अगर कोई मौजूद न हो तो मुझ पर सलाम भेजो और एक बार सूरए इख़्लास पढ़ो। उस शख़्स ने ऐसा ही किया फिर **अल्लाह** तआ़ला ने उस को इतना मालो ज़र अ़ता फ़रमाया कि उस ने अपने पड़ोसियों और रिश्तेदारों की इआ़नत की। (या'नी माली इमदाद की) (بحواله قرطبی)

घर से निकलते वक़्त की दुआ़

بِسْمِ اللّٰہِ تَوَکَّلْتُ عَلَی اللّٰہِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ

(ابوداؤد شریف، کتاب الأدب، باب مایقولہ اذاخرج من بیتہ، رقم الحدیث ۵۰۹۵،
الجلدالرابع صفحہ نمبر ۴۲۰ دار احیاء التراث بیروت۔ راوی حضرت انس رضی اللہ عنہ)

तर्जमा :- **अल्लाह** के नाम से (घर से निकलता हूं) मैं ने **अल्लाह** पर भरोसा किया **अल्लाह** तआ़ला के बिग़ैर न त़ाक़त है (गुनाहों से बचने की) और न कुव्वत है (नेकियां करने की)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! घर से मुराद रहने की जगह है ख़्वाह वोह घर हो जिस में बाल बच्चों के साथ रहते हैं या मस्जिद का हुजरा या ख़ानक़ाह वग़ैरा जहां सूफ़िया त़लबा और मशाइख़ वग़ैरा रहते हैं ग़र्ज़ कि हर शख़्स अपने ठिकाने से निकलते वक़्त मज़्कूरए बाला दुआ़ पढ़ लिया करे।

(مراٰۃ المناجیح، کتاب اسماء اللّٰہ تعالیٰ، باب الدعوات فی الاوقات الفصل الثانی،
الجزء الرابع صفحہ نمبر ۴۸ ضیاء القرآن لاھور۔)

www.dawateislami.net

जब कोई मुसलमान अपने घर से निकलते वक़्त येह दुआ़ पढ़ लेता है तो ग़ैबी फ़िरिश्ता दुआ़ पढ़ने वाले को ख़िता़ब करते हुवे जो कलिमात कहता है ह़दीसे मुबारक में उन कलिमात को यूं इरशाद फ़रमाया गया है।

अल ह़दीस :- (ऐ दुआ़ पढ़ने वाले) तुझे हिदायत व किफ़ायत दी गई और तू मह़फ़ूज़ कर दिया गया। फिर शैता़न दूर भाग जाता है और उस से दूसरा शैता़न कहता है : तुझे उस शख़्स से क्या तअ़ल्लुक़ है जिसे हिदायत व किफ़ायत दी गई और जो मह़फ़ूज़ किया गया।

(ابو داؤد شریف، کتاب الأدب، باب مایقول اذا خرج من بیته، رقم الحدیث ٥٠٩٥، الجزء الرابع صفحه نمبر ٤٢٠ دار احیاء التراث بیروت.)

इस ह़दीस शरीफ़ की शर्ह़ करते हुवे साह़िबे मिरआत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस दुआ़ को पढ़ने पर ग़ैबी फ़िरिश्ता कहता है कि (ऐ दुआ़ पढ़ने वाले) तू ने (بِسْمِ اللهِ) की बरकत से हिदायत पाई और (تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ) के वसीले से किफ़ायत और (لَا حَوْلَ) के वासिते़ से ह़िफ़ाज़त। तीन चीज़ों पर तीन ने'मतें मिलीं। ह़क़ीक़त येह है कि हम जिस क़दर अल्लाह तआ़ला और उस के मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी करेंगे उसी क़दर हम पर अन्वारो तजल्लियात, इन्आ़मो इकराम के बादल बरसेंगे।

(مرأة المناجیح، کتاب اسماء اللّٰه تعالٰی، باب الدعوات فی الاوقات الفصل الثانی، الجزء الرابع صفحه نمبر ٤٨ ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاهور.)

मोमिन से मोमिन की मुलाक़ात के वक़्त की दुआ़

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ **तर्जमा :-** तुम पर सलामती हो।

(ابو داؤد شریف، کتاب الأدب، باب کیف السلام (ملخصًا)، رقم الحدیث ٥١٩٥، الجزء الرابع صفحه نمبر ٤٤٩ مطبوعه دار احیاء التراث بیروت. راوی حضرت ابو هریره رضی الله عنه)

www.dawateislami.net

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! मुलाक़ात के वक़्त सलाम करना सुन्नत है सलाम के लिये اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ भी कह सकते हैं मगर जम्अ़ का सीग़ा या'नी (اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ) कहना अफ़्ज़ल है। इस के इलावा जितने त़रीक़े अग़्यार के सलाम करने के हैं उन से बिल्कुल परहेज़ किया जाए और जो आ़म तौ़र पर मुसलमानों में दीगर त़रीक़े राइज हो गए हैं। मसलन आदाब अ़र्ज़ वग़ैरा से भी एह़तिराज़ ज़रूरी है।

सरवरे कौनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सलाम के बे शुमार फ़ज़ाइल बयान किये हैं चन्द अह़ादीस तह़रीर की जाती हैं :

ह़ज़रते इमरान बिन ह़सीन से रिवायत की है कि एक शख़्स नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आया और اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ कहा। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे जवाब दिया, वोह बैठ गया। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस के लिये दस नेकियां। फिर दूसरा शख़्स आया और उस ने اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ कहा। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब दिया, वोह बैठ गया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इस के लिये बीस नेकियां। फिर तीसरा शख़्स आया और उस ने اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ कहा। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब दिया, वोह बैठ गया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इस के लिये तीस नेकियां हैं (मुआ़ज़ बिन अनस की रिवायत में है कि फिर एक और शख़्स आया, उस ने कहा : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ وَمَغْفِرَتُهُ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इस के लिये चालीस नेकियां हैं)

लिहाज़ा हमें चाहिये कि हर मौक़अ़ व मह़ल पर सलाम से ग़फ़्लत न बरतें ताकि हम नेकियों से मह़रूम न रहें। क़ाबिले ग़ौर बात है कि अगर किसी की ख़ुशामद से हमें चन्द रूपों का फ़ाएदा हो तो हमारी ज़बान उस की ता'रीफ़ करते नहीं थकती मगर اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ कहना हमारी ज़बान पर भारी लगता है ह़ालांकि इस में हमारे लिये अज्रो सवाब है।

(ابوداؤدشریف، کتاب الأدب، باب کیف السلام، رقم الحدیث ٥١٩٥/٦،
الجزء الرابع صفحه نمبر ٤٤٩ مطبوعه داراحیاء التراث بیروت.)

www.dawateislami.net

मुसाफ़हा करते वक़्त की दुआ

मुसाफ़हा करते वक़्त दुरूद पढ़ना चाहिये ।

﴾1﴿ اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْہُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ

तर्जमा :- ऐ **अल्लाह** दुरूद भेज हमारे सरदार मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर और उन को क़ियामत के दिन ऐसी जगह में उतार जो तेरे नज़्दीक मुक़र्रब हो ।

(مدارج النبوت،باب نہم ذکر حقوق آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم،دربیان فوائد صلوۃ علی النبی،الجزء الاول صفحہ نمبر۳۲۶نوریہ رضویہ لاھور.)

﴾2﴿ یَغْفِرُ اللّٰہُ لَنَا وَلَکُمْ

तर्जमा :- **अल्लाह** तआ़ला हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए । (مشکوٰۃ)

फ़ज़ाइले मुसाफ़हा :- त़बरानी ने ह़ज़रते सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि फ़रमाया रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने : मुसलमान जब अपने मुसलमान भाई से मिले और हाथ पकड़े (या'नी सलाम के बा'द मुसाफ़हा) तो उन दोनों के गुनाह ऐसे गिरते हैं जैसे तेज़ आंधी में ख़ुश्क दरख़्त के पत्ते और उन के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं । अगर्चे समन्दर के झाग के बराबर हों ।

इमाम मालिक ने ह़ज़रते अ़त़ा ख़ुरासानी से रिवायत की, कि फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने : आपस में मुसाफ़हा करो दिल की कपट (कदूरतें-रन्जिशें) जाती रहेंगी ।

(مشکوٰۃشریف،کتاب الآداب،باب المصافحۃ والمعانقۃ الفصل الثالث صفحہ نمبر ۴۰۳ مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی.)

इब्नुन्नजार ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत की, कि फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने : जो मुसलमान अपने भाई से मुसाफ़हा करे और किसी के दिल में दूसरे की अ़दावत न हो तो

www.dawateislami.net

हाथ जुदा होने से क़ब्ल **अल्लाह** तआ़ला दोनों के गुज़श्ता गुनाहों को बख़्श देगा। लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम मह़ब्बत के साथ अपने भाई से सलाम व मुसाफ़ह़ा व मुआ़नक़ा करें। येह न हो कि ब ज़ाहिर तो शरीअ़त पर अ़मल करें और दिल में कदूरत और ह़सद हो कि येह ज़ाहिर व बात़िन में तज़ाद है और मोमिन की शान के ख़िलाफ़ है। कामिल व अक्मल मोमिन की शान येह है कि उस का ज़ाहिर व बात़िन यक्सां हो।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! सलाम के बा'द मुसाफ़ह़ा करना चाहिये और दोनों हाथों से मुसाफ़ह़ा करना सुन्नत है और बुज़ुर्गाने दीन का इसी पर अ़मल रहा है। तिरमिज़ी शरीफ़ की ह़दीस है कि इरशाद फ़रमाया : पूरी तह़िय्यत (सलाम) येह है कि मुसाफ़ह़ा किया जाए। इस ह़दीस के रावी ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।

(ترمذی شریف، کتاب الاستیئذان والآداب،باب ماجاء فی المصاتحة،رقم الحدیث ۲۷۴۰،الجزء الرابع صفحه نمبر ۳۳۵دارالفکربیروت.)

मुसाफ़ह़ा का त़रीक़ा :- मुसाफ़ह़ा येह है कि एक शख़्स अपनी हथेली दूसरे की हथेली से मिलाए फ़क़त़ उंगलियों के छूने का नाम मुसाफ़ह़ा नहीं है। सुन्नत येह है कि दोनों हाथों से मुसाफ़ह़ा किया जाए दोनों के हाथों के दरमियान कपड़ा वग़ैरा ह़ाइल न हो।

(ردالمختار، کتاب الخطروالا باحة،باب الاستبراء وغیره،الجزء التاسع صفحه نمبر ۵۴۸مطبوعه امدادیه ملتان.)

बा'ज़ लोग मुसाफ़ह़ा करते वक़्त तकल्लुफ़ से काम लेते हैं और उंगलियों ही पर इक्तिफ़ा करते हैं। वोह इस बारे में ग़ौर करें कि इस त़रह़ मुसाफ़ह़ा की सुन्नत अदा नहीं होती। दा'वते फ़िक्र है कि अगर उन्हें दुन्यावी माल दिया जाए तो ऐसे पकड़ते हैं कि छोड़ने का नाम नहीं लेते। **अल्लाह** तआ़ला हमें कामिल त़रीक़े से शरीअ़त पर कारबन्द बना दे।

www.dawateislami.net

मुसाफ़ह़ा करते वक़्त मुसाफ़ह़ा करने वाले दुरूद शरीफ़ पढ़ें कि इस के बड़े फ़ज़ाइल हैं दुरूद शरीफ़ जो आसान लगे वोह पढ़ ले इस में कोई क़ैद नहीं है लेकिन जो दुरूद शरीफ़ पढ़ने के लिये इस बाब में तह़रीर किया गया है उस की बड़ी फ़ज़ीलत है और मुख़्तसर भी है। दुरूद सफ़ह़ा नम्बर 42 पर देखे जिस की फ़ज़ीलत में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : (وَجَبَتْ لَهٗ شَفَاعَتِیْ) तो उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब होगी।

(مدارج النبوت،باب نهم ذکر حقوق آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم،دربیان فوائد صلوۃ علی النبی،الجزء الاول صفحه نمبر ۳۲۶ نوریه رضویه لاهور.)

इस से बड़ी और क्या बात है कि हमें हु़ज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की शफ़ाअ़त नसीब हो। अल्लाह तआ़ला की बारगाह में दुआ़ है कि रब्बुल इ़ज़्ज़त हमें अपने मह़बूब की शफ़ाअ़त नसीब फ़रमाए।

किसी मुसलमान को हंसता देख कर पढ़ने की दुआ़

اَضْحَكَ اللّٰهُ سِنَّكَ **तर्जमा :-** अल्लाह तआ़ला तुझे हंसता रखे।

(بخاری شریف،کتاب بدءَ الخلق،باب صفة ابلیس و جنوده،الجزء الاول صفحه نمبر ۴۲۵ مطبوعه قدیمی کتب خانه کراچی.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब अपने किसी भाई को ख़ुश व ख़ुर्रम देखें तो उस के लिये येह दुआ़ करें। जो तह़रीर की गई है।

मा'लूम हुवा कि अपने मुसलमान भाई की ख़ुशी व फ़रह़त पर ह़सद न करे बल्कि उस के लिये दुआ़ करे कि तेरी ज़िन्दगी यूंही राह़त व मसर्रत के साथ बसर हो यहां येह बात याद रखनी चाहिये कि इस दुआ़ में हंसने से ठठ्ठा या क़ह्क़हा मुराद नहीं है क्यूंकि आवाज़ के साथ क़ह्क़हा मारना मकरूह है। यहां ज़ह़्क से मुराद तबस्सुम या बिग़ैर आवाज़ के साथ मुस्कुराना कि दांत और आ़म दाढ़ें नज़र आ जाएं।

हज़रते शैख़ इब्ने हजर رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं : तमाम हदीसों से साबित है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बड़ी से बड़ी हालतों और अक्सर औक़ात में तबस्सुम से आगे तजावुज़ नहीं फ़रमाते थे।

मुमकिन है कभी इस से तजावुज़ भी किया हो मगर ज़ह्क (तबस्सुम) की हद से आगे न बढ़े होंगे लेकिन येह क़ह्क़हा तो हरगिज़ नहीं हो सकता क्यूंकि येह मकरूह है और कसरत के साथ हंसने और इस में ज़ियादती करने से आदमी का वक़ार जाता रहता है।

बैहक़ी ने ब रिवायत हज़रते अबू हुरैरा नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ज़ह्क फ़रमाते थे तो दीवारें रौशन हो जाती थीं।

(مدارج النبوت،باب اول دربیان حسن وخلقت وجمال،بیان ضحک شریف،الجزء الاول صفحه نمبر ۹ نوریه رضویه لاهور.)

سُبْحٰنَ اللہ बेशक ऐसे शानो कमाल से हमारे नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अल्लाह तआला ने मुत्तसिफ़ फ़रमाया कि आप तबस्सुम फ़रमाते तो दीवारें रौशन हो जातीं, ज़ुल्मतें दूर हो जातीं। इस के बर अक्स अगर हम अपना मुंह खोल कर किसी के क़रीब हंसें तो वोह ज़रूर कहेगा : ऐ भाई ज़रा मुंह दूर रखें, बद बू आ रही है। लिहाज़ा याद रहे कि उम्मती उम्मती होता है और नबी नबी होता है। (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم)

मग़फ़िरत की दुआ देने पर जवाब

غَفَرَ اللہُ لَکَ **तर्जमा :-** अल्लाह तआला तेरी (भी) मग़फ़िरत फ़रमाए।

(مسلم شریف، کتاب البر والصلة،باب فضل صلة أصدقاء الأب الخ رقم الحديث ۲۵۵۰،الجزء ۴،صفحه نمبر ۱۹۷۹ داراحياء التراث بيروت.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जो मुसलमान भाई हमारा ख़ैरख़्वाह हो तो हमें भी लाज़िम है कि हम भी उस के ख़ैरख़्वाह हों। बल्कि जो हम से बुराई करे उस वक़्त भी हमारा अ़मल येह होना चाहिये कि हम उसे भलाई के साथ जवाब दें।

www.dawateislami.net

अल ह़दीस :- त़बरानी में है कि अफ़्ज़ल तरीन फ़ज़ीलत येह है कि जो तुझ से तोड़े तू उस से जोड़ और जो तुझे मह़रूम रखे तू उसे दे और जो तुझे गाली दे तू उस से दरगुज़र कर।

(مُکاشَفَۃُالقُلوب،الباب الثالث والحشرون فی صلۃ الرحم الخ،صفحہ نمبر ۷۷ مطبوعہ دارالکتب العلمیۃ بیروت.)

मोह़सिन का शुक्रिय्या अदा करने की दुआ

جَزَاكَ اللّٰهُ خَيراً **तर्जमा :-** **अल्लाह** तआ़ला तुझे (एह़सान करने की) जज़ाए ख़ैर दे (ترمذی شریف،کتاب البروالصلۃ،،باب ماجاء فی التجارب،رقم الحدیث)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जहां हमें येह हुक्म दिया गया है कि हम **अल्लाह** तआ़ला की अ़त़ाकर्दा ने'मतों की सिपास गुज़ारी में शुक्र गुज़ारी का दामन न छोड़ें वहां हमें येह भी ता'लीम दी गई है कि ब ज़ाहिर अगर हमारा कोई भाई हम पर एह़सान करे तो हम उस का भी शुक्रिय्या अदा करें और उस के लिये दुआ़ए ख़ैर भी करें। एह़सान फ़रामोशी से काम न लें।

अल ह़दीस :- مَنْ لَمْ يَشْكُرِ النَّاسَ لَمْ يَشْكُرِ اللّٰهَ٥

तर्जमा :- जिस शख़्स ने लोगों का शुक्रिय्या अदा न किया उस ने **अल्लाह** तआ़ला का शुक्रिय्या अदा न किया (अपने मोह़सिन के लिये दुआ़ करने का फ़ाएदा हमें येह बताया गया है कि दुआ़ करने वाले ने उस का ह़क़ अदा कर दिया।)

(ترمذی شریف،کتاب البروالصلۃ،باب ماجاء فی قبول الھدیۃ،الخ،رقم الحدیث ۱۹۶۲،الجزء الثالث صفحہ نمبر ۳۸۴دارالفکربیروت.)

अल ह़दीस :- तिरमिज़ी ने उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत किया कि फ़रमाया रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने : जिस के साथ एह़सान किया गया और उस ने एह़सान करने वाले के लिये येह कहा : جَزَاكَ اللّٰهُ خَيراً तो पूरी सना कर दी।

(ترمذی شریف،کتاب البروالصلۃ،باب ماجاء فی الثناء بالمعروف،رقم الحدیث ۲۰۴۲،الجزء الثالث صفحہ نمبر ۴۱۷دارالفکربیروت.)

www.dawateislami.net

हदया लेते वक़्त की दुआ

بَارَكَ اللّٰهُ فِيْ اَهْلِكَ وَمَالِكَ ۝

तर्जमा :- **अल्लाह** तआ़ला तेरे अह्लो माल में बरकत अ़ता फ़रमाए।

(बुख़ारी :- रावी ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! हदया देना बड़ी फ़ज़ीलत की बात है इस की ह़िक्मत हमें येह बताई गई है कि

अल ह़दीस :- इमाम बुख़ारी ने अल अदबुल मुफ़रिद में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत किया कि फ़रमाया रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने : बाहम हदया दो कि इस से मह़ब्बत होगी।

(الادب المفرد،باب قبول الهدية،رقم الحديث٢٥٧،صفحه نمبر ٦٨ ا مطبوعه دارالحديث بوهڑ گيٹ ملتان.)

अल ह़दीस :- तिरमिज़ी ने ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत किया कि फ़रमाया रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कि हदया दो कि इस से सीने का खोट दूर होता है और पड़ोस वाली औ़रत पड़ोसन के लिये कोई चीज़ ह़क़ीर न समझे अगर्चे बकरी का खुर हो। (बहारे शरीअ़त)

अल ह़दीस :-ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया कि नबिय्ये करीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ख़ुश्बू को वापस नहीं फ़रमाते और सह़ीह़ मुस्लिम में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि फ़रमाया रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने : जिस के पास फूल पेश किया जाए तो वापस न करे कि उठाने में हल्का है और बू अच्छी है। (بخاری شریف،کتاب الهبة وفضلها،باب مالايردمن الهدية)

हदये का क़बूल करना सुन्नत है। हमें चाहिये कि हम आपस में हदये को रवाज दें। ताकि हमारे अन्दर आपस में मह़ब्बत व मुवद्दत की फ़ज़ा क़ाइम हो। अगर्चे थोड़ी सी चीज़ मुयस्सर हो तो वोही बत़ौरे हदया दे दें येह न समझें कि ज़रा सी चीज़ क्या हदया की जाए या किसी ने थोड़ी चीज़ हदया की तो उसे नज़रे ह़क़ारत से न देखें बल्कि ख़ुलूस के साथ क़बूल कर लें।

www.dawateislami.net

سُبْحٰنَ اللہ इस्लामी ता'लीमात में कितनी ने'मतें मुज़्मर हैं। देखिये हमें ता'लीम दी गई कि जो हदया दे उस के अह्लो इ़याल मालो मनाल के लिये बरकत की दुआ़ करें। क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला के दिये हुवे माल को हदये की सूरत में ख़र्च करना भी नेकी का काम है और जो शख़्स अपना माल नेक काम में ख़र्च करे तो वोह माल उस के लिये ने'मत व रह़मत है गोया माल में बरकत की दुआ़ करे हदया लेने वाला येह बात **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़ करता है कि या रब्बल आ़लमीन तेरे इस बन्दे ने मुझे हदया दिया तेरे दिये हुवे माल को तेरे मह़बूब की ता'लीम के मुत़ाबिक़ ख़र्च किया तू इस के माल में और ज़ियादा बरकत दे। ताकि तेरी राह में माल ख़र्च करता रहे और अज्रो सवाब पाता रहे। बेशक जो अपने माल को **अल्लाह** तआ़ला की राह में ख़र्च करता है वोह **अल्लाह** तआ़ला का क़ुर्ब ह़ासिल करता है।

अल ह़दीस :- اَلسَّخِيُّ قَرِيْبٌ مِّنَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ النَّاسِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْجَنَّةِ بَعِيْدٌ مِّنَ النَّارِ o

तर्जमा :- सख़ी **अल्लाह** तआ़ला से क़रीब है, लोगों से क़रीब है, जन्नत से क़रीब है। आग (जहन्नम) से दूर है।

(ترمذی شریف، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی السخاء، رقم الحدیث ۱۹۶۸، الجزء الثالث صفحه نمبر ۳۸۷ دارالفکر بیروت.)

अदाए क़र्ज़ की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِيْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ

(المستدرک، کتاب الدعاء والتکبیر الخ، دعاقضاء الدین، رقم الحدیث ۲۵۱۶، الجزء الثانی صفحه نمبر ۲۳۰ دارالمعرفه بیروت.)

तर्जमा :- ऐ **अल्लाह** मुझे किफ़ायत दे, अपना ह़लाल रिज़्क़ दे कर ह़राम रिज़्क़ से बचा और मुझे अपने फ़ज़्ल के साथ अपने सिवा दूसरों से बे नियाज़ कर दे।

www.dawateislami.net

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! बिला ज़रूरत क़र्ज़ बिल्कुल न लें।

अल ह़दीस :- रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि मुसलमानों क़र्ज़ लेने से इजतिनाब करो क्यूंकि वोह रात के वक़्त रन्ज व फ़िक्र पैदा करता है और दिन को ज़िल्लत में मुब्तला करता है। (بیہقی فی شعب الایمان)

अगर ज़रूरतन क़र्ज़ ले तो लेते वक़्त वापस देने का इरादा रखे।

अल ह़दीस :- रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जो आदमी क़र्ज़ लेता है और उस को अदा करने का इरादा रखता है तो क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला उस की त़रफ़ से क़र्ज़ को अदा कर देगा। (या'नी **अल्लाह** तआ़ला क़र्ज़ ख़्वाह को राज़ी कर देगा) और जो क़र्ज़ ले कर अदा करने का इरादा नहीं रखता और उसी ह़ालत में मर जाता है तो क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला उस से इरशाद फ़रमाएगा कि ऐ मेरे बन्दे तू ने ख़याल किया था कि मैं अपने बन्दे का ह़क़ तुझ से नहीं लूंगा फिर मक़रूज़ की कुछ नेकियां क़र्ज़ ख़्वाह को दे दी जाएंगी और अगर मक़रूज़ ने नेकियां न की होंगी तो क़र्ज़ ख़्वाह के कुछ गुनाह ले कर मक़रूज़ को दे दिये जाएंगे। (حاکم)

इस दुआ़ में मोमिन के लिये बड़ी नसीह़त है कि अगर वोह कभी ज़रूरतन क़र्ज़ ले ले और ह़ालात साज़गार न रहें, ख़स्ता ह़ाली का डेरा लग जाए मगर फिर भी वोह अपने रब पर भरोसा रखते हुवे उस की बारगाह में येही अ़र्ज़ करता रहे कि **या रब्बल इ़ज़्ज़त !** तू ही **ख़ैरुर्राज़िक़ीन** है। मैं तेरी ही बारगाह में अ़र्ज़ करता हूं कि तू मुझे ह़लाल रिज़्क़ इस किफ़ायत के साथ अ़त़ा फ़रमा कि मैं क़र्ज़ से सुबुक दोश हो जाऊं।

ग़ौर कीजिये बन्दए मोमिन इस मआ़शी बद ह़ाली में भी ह़राम माल चोरी, डाके से गुरेज़ करता है और **अल्लाह** तआ़ला ही से ख़ुशी और क़र्ज़ की सुबुक दोशी के लिये अ़र्ज़ करता है। क्यूंकि मोमिन की शान येही होती है कि ह़ालात कैसे भी बिगड़ जाएं लेकिन वोह शरीअ़त का दामन नहीं छोड़ता।

www.dawateislami.net

अदाए क़र्ज़ पर क़र्ज़ख़्वाह की दुआ

اَوْ فَیْتَنِیْ اَوْفَی اللّٰہُ بِکَ ؀

तर्जमा :- **अल्लाह** तआ़ला तुझे पूरा सवाब अ़ता फ़रमाए कि (तू ने) मेरा पूरा क़र्ज़ अदा किया। (بخاری شریف، کتاب الوکالۃ،باب وکالۃ الشاھد الخ،رقم الحدیث)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस दुआ़ से मा'लूम हुवा कि क़र्ज़ ख़्वाह को जब मक़रूज़ उस का क़र्ज़ वापस लौटाए तो क़र्ज़ ख़्वाह मक़रूज़ के लिये सवाब की दुआ़ करे क्यूंकि मक़रूज़ की वज्ह से क़र्ज़ ख़्वाह को बेशुमार सवाब मिला येह उस का बदला है।

अल ह़दीस :- इरशाद फ़रमाया गया जिस ने तंगदस्त को एक मुअ़य्यन मुद्दत के लिये क़र्ज़ दिया तो मुक़र्ररा वक़्त आने तक क़र्ज़ ख़्वाह के लिये एक सदक़ा (या'नी एक सवाब का सवाब मिलेगा) है।

(मुस्नदे इमाम अह़मद :- रावी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

जिन के रिज़्क़ में **अल्लाह** तआ़ला ने कुशादगी दी है उन्हें चाहिये कि अपने ह़ाजत मन्द मुसलमान भाई की ह़ाजत के वक़्त काम आएं। इसी लिये क़र्ज़ देने की तरग़ीब दी गई है।

अल ह़दीस :- ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि फ़रमाया रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने : کُلُّ قَرْضٍ صَدَقَۃٌ ؀

तर्जमा :- हर क़र्ज़ सदक़ा (सवाब की चीज़) है।

(شعب الایمان،فی رجل مات وتک دینارًا،الخ،رقم الحدیث ۳۵۶۳،الجزء الثالث، صفحہ نمبر ۲۸۴ دارالکتب العلمیہ بیروت.)

लेकिन इस बात का ख़याल रखे कि वोह शख़्स जो जुवा खेलने का आ़दी है या नशाबाज़ है या धोकाबाज़ ग़ासिब है कि क़र्ज़ ले कर अदा न करेगा या पहले दो शख़्स जुवा खेल कर या नशा कर के माल ख़त्म कर देंगे, ऐसे आदमियों को क़र्ज़ न दें।

और येह भी मा'लूम हुवा कि मक़रूज़ जब क़र्ज़ख़्वाह को क़र्ज़ वापस लौटाए तो क़र्ज़ख़्वाह उस के लिये सवाब की दुआ़ करे क्यूंकि क़र्ज़ ले कर वापस कर देना येह भी बड़ी सआ़दत है कि क़र्ज़ का लौटाना फ़र्ज़ है और क़ुदरत के बा

www.dawateislami.net

वुजूद न देना ह़राम लिहाज़ा वोह ह़राम से बच कर क़र्ज़ अदा करता है। जिस में उस के लिये अज्रो सवाब है। क़र्ज़ ले कर अदा न करना बहुत क़बीह़ व शनीअ़ फ़े'ल है। जिस में दुन्या व आख़िरत की ज़िल्लत व रुस्वाई है।

अल ह़दीस :- अबू दावूद व निसाई शरीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रावी हैं कि फ़रमाया रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने : मालदार का क़र्ज़ अदा करने में ताख़ीर करना उस की आबरू और सज़ा को ह़लाल कर देता है। अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि कबीरा गुनाह जिस से **अल्लाह** तआ़ला ने मुमानअ़त फ़रमाई है उन के बा'द **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक सब गुनाहों से बड़ा येह है कि आदमी अपने ऊपर क़र्ज़ छोड़ कर मर जाए और उस के अदा के लिये कुछ न छोड़ा हो।

अलबत्ता हमारे अन्दर येह जज़्बा होना चाहिये कि अगर कोई हमारा भाई वापस देने के क़ाबिल न हो निहायत ही मुफ़्लिस व मोह़ताज हो तो हम भलाई से काम लें और क़र्ज़ को मुआ़फ़ कर दें। बिलाशुबा येह बहुत बड़ी सआ़दत है।

अल ह़दीस :- सह़ीह़ मुस्लिम में अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि फ़रमाया रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने : जिस को येह बात पसन्द हो कि क़ियामत की सख़्तियों से **अल्लाह** तआ़ला उसे नजात बख़्शे तो वोह तंग दस्त को मोहलत दे या मुआ़फ़ कर दे। (बहारे शरीअ़त)

(तफ़्सीली मसाइल व फ़ज़ाइल के लिये बहारे शरीअ़त हि़स्सा याज़्दहुम[11] देखिये)

गुस्सा आने के वक़्त की दुआ़

اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ

तर्जमा :- मैं शैत़ान मर्दूद से **अल्लाह** तआ़ला की पनाह चाहता हूं।

(बुख़ारी :- रावी ह़ज़रते सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! गुस्सा क्या है इस बारे में अच्छी त़रह़ ज़ेह्न नशीन रखिये कि गुस्सा ब ज़ाते ख़ुद न अच्छा है न बुरा दर ह़क़ीक़त गुस्से की अच्छाई और बुराई का दारो मदार मौक़अ़ और मह़ल की अच्छाई और बुराई पर है।

www.dawateislami.net

हज़रते बायज़ीद बिस्तामी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक मरतबा क़ब्रिस्तान से गुज़र रहे थे कि आप ने देखा कि एक नौजवान क़ब्रिस्तान में तम्बूरा (सितार नुमा साज़) से दिल बहला रहा है। आप ने उस पर अफ़्सोस किया और फ़रमाया : ऐ नौजवान येह इब्रत की जगह है। बजाए इस के कि तुम यहां आ कर इब्रत हासिल करते यहां गफ़्लत के काम में मश्गूल हो ? येह बात सुन कर उस नौजवान को गुस्सा आ गया और तम्बूरा हज़रते बायज़ीद बिस्तामी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सर पर दे मारा। तम्बूरा सर पर लगने से टूट गया। हज़रते बायज़ीद बिस्तामी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की नसीहत करने पर उस नौजवान को गुस्सा आ जाना बे मौक़अ़ था। उस नौजवान को बजाए गुस्से के नसीहत को सुन कर इस पर अ़मल करना चाहिये था। ऐसे गुस्से को ही हदीस में बुरा कहा गया है।

क्यूंकि ऐसे बेजा गुस्से से अक्सर औक़ात क़त्ल भी हो जाता है। भाई भाई की जुदाई हो जाती है मियां बीवी में अ़लाहिदगी हो जाती है लिहाज़ा ऐसे बे मौक़अ़ गुस्से से इजतिनाब करना चाहिये। जब बे महल गुस्सा आए तो उस से बचने का त़रीक़ा हमें बताया गया है और ऐसे गुस्से से अपने आप को महफ़ूज़ कर लेना बहुत बड़ी फ़ज़ीलत की बात है आइये अहादीस शरीफ़ की रौशनी में हम इस्तिफ़ादा करते हैं :

अल हदीस :- इरशाद फ़रमाया गया : गुस्सा शैत़ान की त़रफ़ से है और शैत़ान को आग से पैदा किया गया और आग पानी ही से बुझाई जाती है लिहाज़ा जब किसी को गुस्सा आए तो वुज़ू करे। दूसरी रिवायत में आया : जब किसी को गुस्सा आए और वोह खड़ा हो तो बैठ जाए। अगर गुस्सा चला जाए तो फ़बिहा वरना लेट जाए। (ابوداؤد شریف، کتاب الأدب، باب مايقال عند الغضب، رقم الحديث ۴۷۸۲، ۴۷۸۴، الجزء الرابع، صفحه نمبر ۳۲۷/۲۸ دار احیاء التراث بیروت.)

जो ऐसे बे महल और शैत़ानी गुस्सा आ जाने पर अपने आप को क़ाबू में रखता है बेशक वोह बहुत बड़ा पहलवान है और ऐसे गुस्से पर क़ाबू पा लेने में **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा व ख़ुशनूदी है।

अल ह़दीस :- इरशाद फ़रमाया गया : क़वी वोह नहीं जो पहलवान हो कि दूसरे को पछाड़ दे बल्कि क़वी वोह है जो (बे मह़ल) ग़ुस्से के वक़्त अपने आप को क़ाबू में रखे। दूसरी रिवायत में फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला की ख़ुशनूदी के लिये जिस बन्दे ने ग़ुस्से का घूंट पी लिया उस से बढ़ कर **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक कोई घूंट नहीं।

(बुख़ारी व अह़मद बह़वाला बहारे शरीअ़त)

(तफ़्सीली मा'लूमात के लिये बहारे शरीअ़त हि़स्सा शान्ज़्दहुम(16) का मुत़ालआ़ करें)

एक शख़्स ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िदमत में अ़र्ज़ की, कि ज़मीनो आस्मान में सब से सख़्त तरीन चीज़ क्या है ?

इरशाद फ़रमाया : हर शै से सख़्त तरीन चीज़ **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी और ग़ज़ब है कि उस से दोज़ख़ भी लरज़ती है।

उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया : **अल्लाह** तआ़ला के ग़ज़ब से बचने की क्या सूरत है ?

इरशाद फ़रमाया : ग़ुस्से पर क़ाबू पाना सीखो कि ग़ुस्सा **अल्लाह** तआ़ला के ग़ज़ब को दा'वत देता है। (مثنوی شریف)

याद रखिये बे मह़ल और बे मौक़अ़ ग़ुस्सा जिस की शरीअ़त ने मुख़ालफ़त की है उस ग़ुस्से के आने पर इन्सान शैत़ान के लिये गेंद की त़रह़ हो जाता है। फिर शैत़ान उस को जहां चाहता जैसे चाहता है भटकाए फिरता है येह ही वज्ह है कि ग़ुस्से में इन्सान अपने पराए और इ़ज़्ज़त व आबरू बल्कि ईमान व कुफ़्र में भी तमीज़ नहीं रखता।

अल्लाह तआ़ला हम सब को इस बुराई से मामून फ़रमाए। लिहाज़ा ऐसे मौक़अ़ पर **अल्लाह** तआ़ला की पनाह त़लब की जाए बेशक वोही हमें शैत़ान के ह़म्लों से मह़फ़ूज़ फ़रमाने वाला है।

www.dawateislami.net

वस्वसा दूर करते वक़्त की दुआ

اَللّٰہُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰہُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمْ یَلِدْ ۬ۙ وَ لَمْ یُوْلَدْ ۙ﴿۳﴾ وَ لَمْ یَکُنْ لَّہٗ کُفُوًا اَحَدٌ ﴿۴﴾

اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ

तर्जमा :- **अल्लाह** तआ़ला एक है, **अल्लाह** तआ़ला बे नियाज़ है, न उस से कोई पैदा हुवा और न वोह किसी से पैदा हुवा और न उस का कोई हम सर है, मैं शैत़ान मर्दूद से **अल्लाह** तआ़ला की पनाह त़लब करता हूं।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब दिल में वस्वसा आए चाहे ए'तिक़ाद के मुतअ़ल्लिक़ हो या आ'माल के तो इस दुआ़ को کُفُوًا اَحَدٌ तक पढ़ कर तीन मरतबा अपनी बाईं जानिब थुतकार दें और फिर اَعُوْذُ بِاللّٰہِ पढ़ें जब थुतकारने से क़ब्ल की दुआ़ पढ़ेगा तो वोह तमाम फ़ासिद वस्वसे जो अ़क़ाइद के मुतअ़ल्लिक़ होंगे नेस्तो नाबूद हो जाएंगे । क्यूंकि इस में **अल्लाह** तआ़ला की अह़दिय्यत व समदिय्यत का बयान है और जब तअ़व्वुज़ पढ़ेगा तो वोह सारे वस्वसे काफ़ूर हो जाएंगे जो आ'माल के मुतअ़ल्लिक़ हैं।

याद रहे कि शैत़ान जहां मुसलमान को क़ज़ा व क़द्र के मुतअ़ल्लिक़ गुमराह करने की कोशिशें करता है वहां वुज़ू नमाज़ वग़ैरा दूसरे आ'माल में भी वस्वसे डालता है। वल्हान एक शैत़ान है जो वुज़ू में वस्वसा डालता है। लिहाज़ा अगर किसी का वुज़ू हो और उसे शक है कि मेरा वुज़ू है या नहीं तो दोबारा वुज़ू करना बेहतर है, न करे तो भी ह़रज नहीं और अगर शैत़ान लईन के वस्वसे में मुब्तला हो तो हरगिज़ वुज़ू न करे । कि येह एह़तियात़ नहीं बल्कि शैत़ान की पैरवी है। (बहारे शरीअ़त ह़िस्सा दुवुम, वुज़ू के मुतफ़र्रिक़ मसाइल, वुज़ू तोड़ने वाली चीजें मुलख़्ख़सन 91 / 96 मत़बूआ़ मक्तबए रज़विय्या कराची)

इसी त़रह़ नमाज़ में भी शैत़ान वस्वसा डालता है।

अल ह़दीस :- बुख़ारी व मुस्लिम व इमाम मालिक व अबू दावूद व ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद

www.dawateislami.net

फ़रमाया : जब अज़ान कही जाती है शैत़ान गूज़ (रीह़ ख़ारीज करता हुवा) मारता हुवा भागता है। यहां तक कि अज़ान की आवाज़ उसे न पहुंचे, जब अज़ान पूरी हो जाती है चला आता है।

फिर जब इक़ामत कही जाती है फिर भाग जाता है जब पूरी हो लेती है फिर आ जाता है और ख़त़रा डालता है। कहता है फ़ुलां बात याद करो। फ़ुलां बात याद करो जो पहले याद न थी यहां तक कि आदमी को येह मा'लूम नहीं होता कि कितनी (रक्अ़त) पढ़ीं।

(بخاری شریف، کتاب التهجد،باب اذالم یدرکم صلّی الخ،الجزء الاول صفحه نمبر ۱۶۴ مطبوعه قدیمی کتب خانه کراچی.)

बा'ज़ लोगों को देखा गया है कि वोह नमाज़ पढ़ते पढ़ते फिर नमाज़ को पढ़ना छोड़ देते हैं। जब उन से इस की वज्ह पूछी जाती है तो जवाब यूं देते हैं कि जनाब क्या करें हम नमाज़ पढ़ते थे लेकिन जब भी हम नमाज़ के लिये खड़े होते तो त़रह़ त़रह़ के वस्वसे हमारे दिलों में आने शुरूअ़ हो जाते चुनान्चे, हम ने सोचा कि ऐसी नमाज़ क्या पढ़ें जिस में वस्वसे आएं ? ऐसे लोगों के लिये अ़र्ज़ है कि वोह क़ुरआन व अह़ादीस या अइम्मए किराम ही का कोई क़ौल हमें बता दें जिस में येह बात मज़्कूर हो कि जब नमाज़ में वस्वसे आएं तो नमाज़ छोड़ दे तो वोह ह़ज़रात येह क़ौल हरगिज़ पेश नहीं कर सकते हैं। उन्हों ने येह क़ियासे फ़ासिदा कैसे कर लिया ? क्या आप मुजतहिद हैं ? वैसे भी वाज़ेह़ हुक्म के होते हुवे क़ियास की इजाज़त हरगिज़ नहीं है।

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं नमाज़ में अपने लश्कर की तय्यारियों के मुतअ़ल्लिक़ सोचता हूं। इस क़ौल का येह मत़लब नहीं है कि ब ह़ालते नमाज़ सोचो बिचार करना चाहिये बल्कि मक़्सूद येह बताना है कि चूंकि इस से बचना बहुत दुश्वार है तो अगर नमाज़ की ह़ालत में किसी काम के मुतअ़ल्लिक़ ख़याल आ जाए तो इस से नमाज़ फ़ासिद नहीं होगी लेकिन इस का मत़लब हरगिज़ येह नहीं है कि दौराने नमाज़ सोच बिचार किया जाए बल्कि ह़त्तल मक़्दूर वस्वसों को दफ़्अ़ करने की कोशिश करे कि नमाज़ में

www.dawateislami.net

वस्वसा आने पर उस को दफ़्अ़ कर के नमाज़ में इन्हिमाक रखना येह भी सवाब है कि वोह नमाज़ी नफ़्से अम्मारा व शैत़ान से जिहाद करने वाला है। क्यूंकि येह दोनों चीजें नमाज़ी को नमाज़ से ग़ाफ़िल करने वाली हैं।

लिहाज़ा येह मस्अला याद रहे कि अगर नमाज़ के अरकान वग़ैरा बा क़ाइदगी के साथ अदा करता रहे और अगर दौराने नमाज़ किसी बात का ख़याल आ जाए और वोह सोचने लग जाए तो कोई ह़रज नहीं। लेकिन याद आने पर उसे दफ़्अ़ करे और नमाज़ की त़रफ़ तवज्जोह लगाए। हां अगर नमाज़ी नमाज़ में एक रुक्न की मिक्दार खड़ा सोचता रहा तो अब सज्दए सह्व करेगा। क्यूंकि अरकान में ताख़ीर हुई आख़िर में अ़र्ज़ है कि हमें वस्वसों को छोड़ना चाहिये न कि नमाज़ को छोड़ दें।

(فیوض الباری،ابواب التہجد،باب تفکر الرجل الخ(ملخصًا) الجزء الخامس پارہ ۵، صفحہ نمبر ۹/۶۰ ۵مطبوعہ مکتبہ رضوان لاہور.)

(तफ़्सीली मसाइल के लिये फ़ुयूज़ुल बारी फ़ी शर्हे सह़ीह़ बुख़ारी पारह पंजुम देखिये)

थकन के वक़्त की दुआ़

﴿1﴾ سُبْحٰنَ اللّٰهِ 33 बार तमाम पाकियां अल्लाह तआ़ला के लिये

﴿2﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ 33 बार तमाम ख़ूबियां अल्लाह तआ़ला के लिये

﴿3﴾ اَللّٰهُ اَكْبَرُ 34 बार अल्लाह तआ़ला बहुत बड़ा है

(بخاری شریف، کتب المناقب،باب مناقب علی رضی اللّٰہ عنہ،الجزء الاول، صفحہ نمبر ۵۲۶مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो! इस दुआ़ में तस्बीह़ व तह़मीद व तक्बीर सब की ता'दाद मिल कर सौ (100) बार होती है। इसे तस्बीह़े फ़ात़िमी भी कहते हैं। इस ज़िम्न में ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का वाक़िआ़ बयान किया जाता है।

मुस्नदे इमाम अह़मद में ब रिवायत ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا साबित है कि ह़ज़रते फ़ात़िमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के काशानए अक़्दस में इस ग़रज़ से आई कि वोह

www.dawateislami.net

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से एक बांदी हासिल करें जो ख़िदमत करे। मन्क़ूल है कि सय्यिदा फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के दस्ते मुबारक चक्की पीसने और पानी खींचने से सुर्ख़ हो गए थे और इन के चेहरए मुबारक का रंग झाड़ू देने के गुबार से और खाना पकाने के धुवें से मुतग़य्यिर हो गया था। चुनान्चे, जब वोह आई तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को घर में मौजूद न पाया। जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया :

मेरी साहिबज़ादी क्यूं आई थीं ? बताया गया बांदी मांगने आई थीं। इस के बा'द हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुद हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर तशरीफ़ ले गए और उन के सिरहाने बैठ कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ फ़ातिमा तुम बांदी चाहती हो ? हालांकि इस वक़्त कोई बांदी मौजूद नहीं है और जब कहीं से आए तो बताना हम तुम्हें इनायत फ़रमा देंगे। इस के बा'द फ़रमाया : ऐ फ़ातिमा ! दुन्यावी मेहनत व मशक़्क़त बहुत आसान है जिस तरह भी गुज़रे। ऐ फ़ातिमा हक़ तआला की बन्दगी और तक़्वा इख़्तियार करो और अपने शोहर की ख़िदमत गुज़ारी करो। मैं तुम्हें एक ऐसी चीज़ बताता हूं जो ख़ादिमा से बेहतर है वोह येह है कि सोने से पहले 33 मरतबा **अल्लाह** की तस्बीह करो और 33 मरतबा उस की हम्द करो और 34 मरतबा اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहो। (مدارج النبوت)

इस हदीस से हमें बहुत सी नसीहतें मिलीं एक येह है कि अगर शादीशुदा बेटी अपने वालिद से घरेलू परेशानियां ज़ाहिर करे तो वालिद को चाहिये कि उसे तसल्ली दे और सब्र की तल्क़ीन करे। अगर साहिबे हैसिय्यत हो तो उस की इआनत करे और उसे आख़िरत की फ़िक्र दिलाए मगर आज कल मुआमला इस के बर अक्स है कि ऐसी सूरत में बाप अपनी बेटी को घर रोक लेता है और उस के शोहर को बुरा भला कहता है। जिस से घर उजड़ जाते हैं। येह नादानी की बात है कि अपनी बेटी का घर उजाड़ कर समझता है कि मैं ने अपनी बेटी के साथ भलाई की है।

www.dawateislami.net

येह बात क़ाबिले ज़िक्र है कि बा'ज़ उमरा अपनी जिस्मानी थकन दूर करने के लिये ख़िदमत गार रखते हैं और इन्सान से अपने जिस्म की मालिश करवाते हैं, अपने जिस्म को दबवाते हैं और बा'ज़ लोग जो साहिबे हैसिय्यत नहीं वोह रातों को सड़कों पर फ़ुटपाथों पर मालिश वालों से मालिश करवाते हैं लेकिन उस वक़्त वोह अपने सतर का बिल्कुल ख़याल नहीं रखते कि इन के घुटने बल्कि रानें तक खुली रहती हैं इस फ़े'ल से बचना लाज़िमी है क्यूंकि अपना सतरे औ़रत (जिस्म का वोह हिस्सा जिस का छुपाना वाजिब है) दूसरे के सामने बिला ज़रूरत खोलना ह़राम है। ज़रा ग़ौर कीजिये कि अपनी मा'मूली सी थकन की ख़ातिर एक बड़े गुनाह में गिरिफ़्तार हो जाते हैं।

ख़िदमत गार या आ़म मालिश वालों की वज्ह से सिर्फ़ जिस्मानी तौ़र पर राह़त व सुकून मिलता है। लेकिन **अल्लाह** के ज़िक्र और सना करने से जिस्मानी के साथ साथ रूह़ानी राह़त भी ह़ासिल होती है।

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है :

اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ ؕ (قرآن مجید،سورۃ رعد آیۃ نمبر ۲۸،پارہ نمبر ۱۳)

तर्जमा :- सुन लो **अल्लाह** तआ़ला के ज़िक्र ही में दिलों का चैन है।

अल्लाह तआ़ला तमाम मुसलमानों को थकन दूर करने के नाजाइज़ त़रीक़ों से मह़फ़ूज़ फ़रमाए और शरीअ़त के मुत़ाबिक़ **अल्लाह** का ज़िक्र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। (आमीन)

छींक आने पर दुआ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ **तर्जमा :-** तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** तआ़ला के लिये हैं।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब किसी को छींक आए तो मुतज़क्किरा दुआ़ पढ़े कि येह दुआ़ सुन्नत की अदाएगी में किफ़ायत करती है।

www.dawateislami.net

﴾1﴿ साहिबे मिरआत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं जो कोई छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَالٍ ○ कहे और अपनी ज़बान सारे दांतों पर फेर लिया करे तो اِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ दांतों की बीमारियों से मह़फ़ूज़ रहेगा।

﴾2﴿ ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : जो कोई छींक आने पर यूं कहे : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ عَلٰى كُلِّ حَالٍ तो उसे कभी दाढ़ और कान का दर्द न होगा।

छींक के वक़्त अपना पूरा चेहरा या पूरा मुंह कपड़े या हाथ से ढांप लेना सुन्नत है कि इस से रुतूबत की छींटें न उड़ेंगी और अपने या दूसरे के कपड़े ख़राब न होंगे और छींक की आवाज़ ह़त्तल इमकान पस्त करना भी सुन्नत है। लिहाज़ा छींक की आवाज़ पस्त हो और اَلْحَمْدُ لِلّٰه की बुलन्द हो।

(مرأة المناجيح، كتاب الأدب، باب العطاس والتثاؤب، الفصل الثانى صفحه نمبر ٣٩٦ ضياء القرآن لاهور كراچى.)

बा'ज़ लोग बुलन्द आवाज़ से छींकते हैं उन को एह़तियात़ करनी चाहिये बिल ख़ुसूस लोगों के इजतिमाअ़ में और उस से ज़ियादा एह़तियात़ मस्जिद में करनी चाहिये।

छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ कहने वाले के लिये दुआ़

يَرْحَمُكَ الله **तर्जमा :-** **अल्लाह** तआ़ला तुझ पर रह़म फ़रमाए।

(بخارى شريف، كتاب الأدب، باب اذاعطس كيف يشمّتُ، الجزء الثامن، صفحه نمبر ٥٠ مطبوعه دارطوق النجاةبيروت.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब कोई छींकने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहे तो सुनने वाले पर जवाब देना वाजिब है।

(درمختار، كتاب الحظروالاباحة، باب الأستبراء، الجزء التاسع، صفحه نمبر ٥٩٣ مطبوعه مكتبه امداديه ملتان.)

या'नी वोह يَرْحَمُكَ الله ○ कहे।

www.dawateislami.net

छींक आने पर कोई जवाब देने वाला न हो तो उस वक़्त की दुआ

يَغْفِرُ اللّٰهُ لِيْ وَلَكُمْ ۝

तर्जमा :- **अल्लाह** तआ़ला मेरी और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए।

(مِراٰۃ المناجیح، کتاب الأدب، باب العطاس و التثاؤب، الفصل الاول، الجزء السادس صفحہ نمبر ۳۹۴ ضیاء القرآن لاھور.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! छींक आने पर जब कोई اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ कहे और कोई जवाब देने वाला न हो तो छींकने वाला मुतज़क्किरा दुआ़ पढ़े क्यूंकि फ़िरिश्ते उस की छींक का जवाब देते हैं छींकने वाला उन की निय्यत से दुआ़ करे।

(مِراٰۃ المناجیح، کتاب الأدب، باب العطاس و التثاؤب، الفصل الاول، الجزء السادس صفحہ نمبر ۳۹۴ ضیاء القرآن لاھور.)

ग़ाइब शख़्स की छींक पर जवाब देने की दुआ़

يَرْحَمُكَ اللّٰهُ اِنْ حَمِدْتَّ اللّٰهَ ۝

तर्जमा :- अगर तू ने **अल्लाह** की ह़म्द की हो तो **अल्लाह** तुझ पर रह़्म फ़रमाए।

(مِراٰۃ المناجیح، کتاب الأدب، باب العطاس و التثاؤب، الفصل الاول، الجزء السادس صفحہ نمبر ۳۹۴ ضیاء القرآن لاھور.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! किसी शख़्स ने दीवार के पीछे छींक मारी तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मुतज़क्किरा दुआ़ पढ़ी अलबत्ता अगर ऐसे शख़्स की आवाज़ के साथ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ की आवाज़ भी आ जाए तो फिर يَرْحَمُكَ اللّٰه या يَرْحَمُهُ اللّٰه कहे। लिहाज़ा मा'लूम हुवा कि जो छींक आने पर **अल्लाह** की ह़म्द न करे तो उसे जवाब नहीं दिया जाएगा जैसा कि अह़ादीस से पता चलता है।

www.dawateislami.net

अल हदीस :- हज़रते उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है वोह नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रावी, फ़रमाया : छींकने वाले को तीन बार जवाब दो फिर जो ज़ियादा करे तो अगर चाहो जवाब दो अगर चाहो तो जवाब न दो।

(ترمذی شریف، کتاب الأدب، باب ماجآء کم یشمّت العاطس، رقم الحدیث ۲۷۵۳، الجزء الرابع صفحہ نمبر ۳۴۲ دار الفکر بیروت.)

साहि़बे मिरआत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं मुसलमान को तीन छींकों का जवाब देना सुन्नत है मगर चौथी छींक का जवाब देना सुन्नत नहीं तुम्हारी मरज़ी पर है लेकिन अगर जवाब दिया तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ सवाब मिलेगा कि मुसलमान को दुआ़ देना इ़बादत है (दूसरी बात येह है कि ह़दीसे मुबारक में) येह इरशाद न हुवा कि खुद छींकने वाला चौथी छींक पर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहे या न कहे ज़ाहिर येह है कि कहे क्यूंकि ह़म्दे इलाही बेहतर ही है।

(مرآۃ المناجیح، کتاب الأدب، باب العطاس والتثاؤب، الفصل الثانی، صفحہ نمبر ۳۹۲ ضیاء القرآن لاھور کراچی.)

छींक का जवाब देने वाला अगर काफ़िर हो तो उस वक़्त की दुआ़

يَھْدِيْكُمُ اللّٰهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ

तर्जमा :- **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारा ह़ाल दुरुस्त करे। (ترمذی شریف، کتاب الأدب، باب ماجآء کیف تشمیت الخ، رقم الحدیث ۲۷۴۸، الجزء الرابع صفحہ نمبر ۳۳۹ دار الفکر بیروت.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! यहूद नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास छींका करते थे (या'नी दीदा दानिस्ता नाक में तिन्का डाल कर) इस उम्मीद पर कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन से फ़रमा दें। يَرْحَمُكُمُ اللّٰه या'नी **अल्लाह** तुम पर रह़म करे मगर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन कलिमात के बजाए (يَھْدِيْكُمُ اللّٰهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ) फ़रमाते पस मा'लूम हुवा कि रह़मत व मग़्फ़िरत सिर्फ़ मुसलमानों के लिये है अलबत्ता कुफ़्फ़ार के लिये हिदायत की दुआ़ कर सकते हैं कि वोह हिदायत पा कर ईमान क़बूल कर लें।

www.dawateislami.net

जब कोई छींक का जवाब दे तो छींकने वाले की उस के लिये दुआ

يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَ لَكُمْ **तर्जमा :** अल्लाह तआ़ला हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए। (ترمذی شریف، کتاب الأدب، باب ماجآء کیف تشمیت الخ، رقم الحدیث ۲۷۴۹، الجزء الرابع صفحه نمبر ۳۴۰ دار الفکر بیروت.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! छींकने वाले को اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ कहना सुन्नत और जो कोई दूसरा सुने उस को जवाब देना वाजिब फिर छींकने वाले को जवाब देने वाले के लिये दुआ़ करना मुस्तह़ब है या'नी वोह दुआ़ करे जो ऊपर ज़िक्र की गई।

चूंकि छींक अल्लाह तआ़ला की ने'मत है लिहाज़ा इस पर अल्लाह तआ़ला की ह़म्द करनी चाहिये बस इस ह़म्द से उस ने अल्लाह तआ़ला की ने'मत की क़द्र की लिहाज़ा सुनने वाले ने उसे दुआ़ दी इस त़ौर पर उस ने छींकने वाले पर एह़सान किया लिहाज़ा एह़सान का बदला एह़सान से अदा करते हुवे छींकने वाले ने जवाब देने वाले को दुआ़ दी ग़रज़ येह कि प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नतों में ह़िक्मतों के ख़ज़ीने पिन्हां हैं।

जमाही के वक़्त की दुआ़

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ٥

तर्जमा :- नहीं त़ाक़त (गुनाहों से बचने की) और नहीं क़ुव्वत (नेकियां करने की) मगर अल्लाह तआ़ला की मदद से जो बुलन्दो बाला अ़ज़मत वाला है।

अल ह़दीस :- जब कोई जमाही (या जमाई) लेता है तो इस से शैत़ान हंसता है। (بخاری شریف، کتاب الأدب، باب التثاؤب الخ، الجزء الثامن، صفحه نمبر ۵۰ مطبوعه دار طوق النجاة بیروت.)

www.dawateislami.net

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जमाही सुस्ती की अ़लामत है इस से जिस्म में जुमूद त़ारी होता है छींक रब तआ़ला को पसन्द है और जमाही शैत़ान को पसन्द है इस लिये ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ السَّلَام को जमाही कभी नहीं आई।

जमाही दफ़्अ़ करने की तीन तदबीरें हैं ﴾1﴿ जब जमाही आने लगे तो नाक के ज़रीए़ ज़ोर से सांस निकाल दे। ﴾2﴿ या नीचे का होंट दांतों में दबा ले ﴾3﴿ या येह ख़याल करे कि ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ السَّلَام को जमाही नहीं आती। जब जमाही न रुके तो बाएं हाथ की हथेली या उंगलियों की पुश्त मुंह पर रख ले क्यूंकि ह़दीसे मुबारक में इरशाद फ़रमाया कि :

जब तुम में से कोई जमाही लेने लगे तो अपना हाथ मुंह पर रख ले वरना शैत़ान दाख़िल हो जाता है।

(مسلم شریف،کتاب الزاھدوالرقائق،باب تشمیت العاطس و کراھیة التثاؤب،رقم الحدیث ۲۹۹۵،صفحہ نمبر۱۵۹۷ دارابن حزم بیروت.)

बा'ज़ लोग जमाही लेते वक़्त मुंह से क़ह्क़हा से मिलती जुलती अ़जीबो ग़रीब आवाज़ निकालते हैं येह ना पसन्दीदा है लिहाज़ा इस से एह़तियात़ की जाए बिलखुसूस मस्जिद में यूंही बा'ज़ लोग मस्जिद में डकार इस क़दर बुलन्द आवाज़ से लेते हैं गोया कि कोई बकरा ज़ब्ह़ किया जा रहा है ! खांसी के मुतअ़ल्लिक़ भी चाहिये कि मस्जिद में बिला उ़ज़्र न खांसे बल्कि उ़ज़्र की सूरत में भी येही कोशिश करे कि खांसी की आवाज़ बुलन्द न हो। **अल्लाह** तआ़ला हमें आदाबे मस्जिद की सआ़दत से बहरामन्द फ़रमाए। आख़िर में अ़र्ज़ है कि जमाही के वक़्त की दुआ़ मुझे किताबों में नहीं मिली ह़दीसे मुबारक की रौशनी में येह दुआ़ लिख दी कि ह़दीस से पता चलता है कि जमाही में शैत़ानी असर पाया जाता है लिहाज़ा शैत़ाने लईन को भगाने के लिये मज़्कूरा दुआ़ लिख दी गई है। जमाही लेते वक़्त हाथ रख लेने में एक ह़िक्मत येह भी है कि गर्दो ग़ुबार और कीड़े मकोड़े मुंह में दाख़िल न होंगे क्यूंकि इस वक़्त मुंह खुल जाता है।

कोई भी नया काम शुरूअ़ करते वक़्त की दुआ़

بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا ؕ اِنَّ رَبِّیْ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ

(قرآن مجید،سورۃھود آیۃ نمبر ۴۱،پارہ نمبر ۱۲ .)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह के नाम पर इस का चलना और इस का ठहरना बेशक मेरा रब ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है।

इ़ल्म में इज़ाफ़े की दुआ़

رَبِّ زِدْنِیْ عِلْمًا

(قرآن مجید،سورۃطٰہٰ آیۃ نمبر ۱۱۴،پارہ نمبر ۱۶ .)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब मुझे इ़ल्म ज़ियादा दे।

कुफ़्र की निशानी ﴿मसलन मन्दर, गिरजा, गुरुद्वारा वग़ैरा﴾ देखते वक़्त की दुआ़

اَشْهَدُ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ اِلٰهًا
وَّاحِدًا لَّا نَعْبُدُ اِلَّاۤ اِيَّاهُ

तर्जमा :- मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं। वोह यक्ता है उस का कोई शरीक नहीं। वोह मा'बूदे यक्ता है, हम इ़बादत नहीं करते मगर सिर्फ़ उसी की। (غنیۃ الطالبین)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! मन्दर हिन्दुओं की और गिरजा ईसाइयों की और गुरुद्वारा सिखों की पूजागाह का नाम है और येह लोग बिलाशुबा काफ़िर हैं और इन की पूजागाहें कुफ़्र की निशानियां हैं। यहां पर कुफ़्रो शिर्क होता है लिहाज़ा इन की इ़मारतों को देख कर येह दुआ़ जो ऊपर तह़रीर की है पढ़ी जाए।

हुज़ूर ग़ौसुल आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़दीस रिवायत फ़रमाई कि सरवरे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

www.dawateislami.net

जो कुफ़्र की कोई बात देखे या सुने और उस वक़्त मुन्दरिजए बाला दुआ़ पढ़े तो (أُعْطِیَ مِنَ الْاَجْرِ بِعَدَدِالْمُشْرِكِیْنَ وَالْمُشْرِكَاتِ) दुन्या में जितने मुशरिकीन मर्द व औ़रतें हैं उन सब की ता'दाद के बराबर उस के नामए आ'माल में नेकियां लिखी जाएंगी ।

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरेलवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया कि मन्दरों के घंटे और संख (नाक़ूस या'नी बड़ी कोड़ी जो मन्दरों में बजाई जाती है) की आवाज़ और गिरजा वग़ैरा की इमारत को देख कर भी येह दुआ़ पढ़े । (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़िस्सए दुवुम सफ़ह़ा नम्बर 268 मत़बूआ़ मुश्ताक़ बुक कोर्नर उर्दू बाज़ार)

अन्दाज़ा लगाइये कि रूए ज़मीन पर कितने मुशरिक मर्द व औ़रतें होंगी कि छटांक भर ज़बान को इत्तिबाए़ मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़रकत देने से करोड़हा नेकियां हमारे नामए आ'माल में लिख दी जाती हैं । ऐ आ़जिज़ इन्सान येह न सोच कि दुआ़ इतनी मुख़्तसर और अज्रो सवाब इतना कसीर ! बस येह बात हमेशा ज़ेह्न में रख कि जो ज़ाते मुक़द्दस सवाब अ़त़ा फ़रमाने वाली है वोह हर इ़ज्ज़ व नक़्स से मुनज़्ज़ा व मुबर्रा है । तू मांगते मांगते थक जाए लेकिन वोह ज़ाते मुक़द्दस देते देते न थके । उस की रह़मतों के ख़ज़ाने ला मह़दूद हैं ।

मुसीबत ज़दा को देखते वक़्त की दुआ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِہٖ
وَفَضَّلَنِیْ عَلٰی كَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِیْلًا

तर्जमा :- **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र है जिस ने मुझे इस मुसीबत से आ़फ़िय्यत दी जिस में तुझे मुब्तला किया और मुझे अपनी बहुत सी मख़्लूक़ पर फ़ज़ीलत दी । (ترمذی شریف، کتاب الدعوات،باب مایقول اذارأی مُبتَلٰی،رقم الحدیث ۳۴۴۲،الجزء الخامس صفحہ نمبر ۲۷۲ دارالفکربیروت.)

www.dawateislami.net

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! आ'ला ह़ज़रत फ़ाज़िले बरेलवी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि बरादरम मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान साहिब (رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) एक त़बीब को लाए। क्यूंकि मुझे बुख़ार बहुत शदीद था और कान के पीछे गिलटें (गांठ या ग़ुदूद वग़ैरा) हो गई थीं। उन दिनों शहर बरेली में मर्ज़े त़ाऊ़न ब शिद्दत था। त़बीब साहिब ने मुझे देख कर कई मरतबा कहा। येह वोही है (या'नी त़ाऊ़न है) मैं बिल्कुल कलाम नहीं कर सकता था इस लिये उन्हें जवाब न दे सका हालांकि मैं ख़ूब जानता था कि त़बीब साहिब ग़लत़ कह रहे हैं। न मुझे त़ाऊ़न है और न कभी اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ होगा। इस लिये कि मैं ने त़ाऊ़न ज़दा को देख कर वोह दुआ़ पढ़ ली है जो हु़ज़ूर सरवरे काइनात صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ता'लीम फ़रमाई।

आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स किसी मुसीबत ज़दा को देख कर दुआ़ (اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ عَافَانِیْ اِلخ) पढ़ेगा वोह उस बला और मुसीबत से मह़फ़ूज़ रहेगा। फिर आ'ला ह़ज़रत ने फ़रमाया कि हर इन्सानी व आस्मानी बला में मुब्तला को देख कर येह दुआ़ पढ़ सकता है। लेकिन तीन चीज़ों में येह दुआ़ न पढ़ी जाए।

﴾1﴿ **ज़ुकाम :-** कि इस की वज्ह से बहुत सी बीमारियों की जड़ कट जाती है।

﴾2﴿ **खुजली :-** कि इस से अमराज़े जिल्दिया और जुज़ाम वग़ैरा का इन्सिदाद हो जाता है।

﴾3﴿ **आशोबे चश्म :-** कि येह नाबीनाई को दफ़्अ़ करता है।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ, ह़िस्सए अव्वल सफ़्ह़ा नम्बर 33/4 मत़बूआ़ मुश्ताक़ बुक कोर्नर उर्दू बाज़ार।)

क्यूंकि ह़दीस शरीफ़ में फ़रमाया गया है कि इन तीन बीमारियों को मकरूह न रखो इस दुआ़ को पढ़ते वक़्त इस बात का ख़याल रखा जाए कि इतनी आवाज़ के साथ न पढ़े कि मुसीबत ज़दा सुन ले क्यूंकि बुलन्द आवाज़ के साथ पढ़ने से उस की दिल शिकनी होगी।

www.dawateislami.net

नया चांद देखते वक़्त की दुआ

اَللّٰھُمَّ اَھِلَّهٗ عَلَيْنَا بِالْيُمْنِ وَالْاِيْمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْاِسْلَامِ رَبِّيْ وَرَبُّكَ اللّٰهُ○

तर्जमा :- या इलाही इस चांद को हम पर बरकत के साथ और ईमान व सलामती और इस्लाम (ऐ पहली रात के चांद) मेरा और तेरा रब **अल्लाह** तआ़ला है । (ترمذی شریف، کتاب الدعوات، باب مایقول عندرؤیة الهلال، رقم الحدیث ۳۴۶۲، الجزء الخامس صفحه نمبر ۲۸۱ دارالفکربیروت.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! हिलाल पहली रात के चांद को कहते हैं । लिहाज़ा पहली रात के चांद को देख कर येह दुआ़ पढ़नी चाहिये । मुशरिकों के मा'बूदाने बात़िला बेशुमार थे और अब भी उन्हों ने अपने बहुत से झूटे मा'बूद बनाए हुवे हैं । नमरूद के ज़माने में लोग चांद को रब मानते थे । लेकिन रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उम्मती चांद देख कर उस के न सिर्फ़ रब होने का इन्कार करता है बल्कि मुशरिकों का भी रद्दे बलीग़ करता है कि ऐ चांद तू रब नहीं है । बल्कि तेरा और मेरा रब, रब्बे ज़ुल जलाल है जो ख़ालिके़ काइनात है बहुत से लोग तुझे मा'बूद मान कर गुमराह हुवे लिहाज़ा मैं इस बात को पेशे नज़र रखते हुवे अपने मालिके ह़क़ीक़ी ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस से अपने ईमान व इस्लाम की सलामती चाहता हूं और अ़क़ाइद के इ़लावा उन आ'माल की आरज़ू रखता हूं जिन से **अल्लाह** तआ़ला राज़ी हो कि मेरी ज़िन्दगी का मक़्सूद रिज़ाए इलाही है । क्यूंकि मैं उस नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उम्मती हूं जिस की अंगुश्ते मुबारका से चांद दो टुकड़े हुवा ।

मा'लूम हुवा कि इस दुआ़ को पढ़ कर बन्दए मोमिन **अल्लाह** तआ़ला की वह्दानिय्यत व रबूबिय्यत की शहादत देता है और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़्मतो ह़श्मत का इज़्हार करता है ।

जब भी चांद पर नज़र पड़े उस वक़्त की दुआ़

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شَرِّ هٰذَا الْغَاسِقِ○

तर्जमा :- मैं **अल्लाह** की पनाह त़लब करता हूं उस तारीक हो जाने वाले की बुराई से । (ترمذی شریف، کتاب التفسیر، باب ومن سورة المعوذتین، رقم الحدیث ۳۳۷۷، الجزء الخامس صفحه نمبر ۲۴۰ دارالفکربیروت.)

www.dawateislami.net

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ दिन में **अल्लाह** तआ़ला ने सूरज की ह़रारत से उजाले का इन्तिज़ाम किया है और इस में ह़िक्मत येह है कि सूरज की ह़िद्दत फ़स्लों और इन्सानों की ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी के लिये बहुत ज़रूरी है। इसी त़रह़ रात में चांद की चांदनी से रौशनी का इन्तिज़ाम फ़रमाया और इस में ह़िक्मत येह है कि रात का वक़्त आराम के लिये है। लिहाज़ा इस वक़्त में ठन्डी रौशनी का इन्तिज़ाम मुनासिब था जब चांद छुप जाता है तो तारीकियां चारों त़रफ़ फैल जाती हैं और लुटेरों की बन आती है। या तारीकी में इन्सान बुराई की त़रफ़ जल्द राग़िब होता है। लिहाज़ा **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में दुआ़ की जा रही है कि या इलाही मुझे डूबने वाले और अपने नफ़्स की बुराई से मामून व मह़फ़ूज़ फ़रमा।

आईना देखते वक़्त की दुआ़

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ حَسَّنْتَ خَلْقِیْ فَحَسِّنْ خُلُقِیْ ط

तर्जमा :- या **अल्लाह** तू ने मेरी सूरत तो अच्छी बनाई है मेरी सीरत (अख़्लाक़) भी अच्छी कर दे।

(صحیح ابن حبان،باب الادعیة،رقم الحدیث،ذکر مایستحب للمرء الخ الجزء)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह दुआ़ जो ब ज़ाहिर मुख़्तसर है लेकिन अगर इस की मा'नवी गहराइयों में जाएं तो हमें पता चलेगा कि येह दुआ़ अपने अन्दर कितनी जामेइय्यत व इफ़ादिय्यत लिये हुवे है। ग़ौर कीजिये कि जब बन्दए मोमिन आईने में अपना चेहरा देखे तो बारगाहे मुस्त़फ़वी से उसे येह ता'लीम दी गई है कि यूं दुआ़ करे : (اَللّٰھُمَّ اَنْتَ حَسَّنْتَ الخ)

سُبْحٰنَ اللہ जब बन्दए मोमिन अपना चेहरा आईने में देखता है तो बारगाहे इलाही में यूं अ़र्ज़ करता है कि या **अल्लाह** जिस त़रह़ तू ने मेरी सूरत अच्छी बनाई है पस मेरी सीरत भी अच्छी बना दे गोया येह बताया गया कि मोमिन की शान येह है कि यहां वोह अपनी सूरत को आईने में देखता है तो वहां अपनी सीरत के ख़ूबतर होने की भी इल्तिजा करता है। क्यूंकि

www.dawateislami.net

अस्लुल उसूल चीज़ सीरत व किरदार का जामेअ़ कमालात से मुत्तसिफ़ हो जाना ही है और येह बात हम में जब ही पैदा हो सकती है जब हम अपनी सीरत को सीरते नबवी के आईनए मुक़द्दसा में ढाल लें।

اَللّٰهُ اَكْبَر हमारे नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अख़्लाक़ क्या था ! हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से किसी ने पूछा कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अख़्लाक़ क्या था ? तो आप ने मुख़्तसर मगर जामेअ़ अल्फ़ाज़ में जवाब इनायत फ़रमाया :

كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْآن ○

तर्जमा :- हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अख़्लाक़ कुरआन था।

या'नी कुरआने पाक ने जिन महासिन औसाफ़ और मकारिमे अख़्लाक़ को अपनाने का हुक्म दिया है हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन से कमाल दरजा मुत्तसिफ़ थे और जिन बेकार बातों और फ़ुज़ूल कामों से बचने की तरग़ीब दी है हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन सब से पूरी तरह मुनज़्ज़ा व मुबर्रा थे। गोया हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अफ़्आ़ले जमीला व ख़िसाले हमीदा के मुजस्समए पैकर थे। लिहाज़ा उम्मतियों पर लाज़िम है कि वोह अपने नफ़्स का मुहासबा करें और अपने किरदार को अख़्लाक़े हसना से मुज़य्यन करें। क्यूंकि येह सब से बड़ी सआ़दत है। इरशादे नबवी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है :

اِنَّ اَكْمَلَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِيْمَانًا اَحْسَنُهُمْ خُلُقًا ○

तर्जमा :- यक़ीनन मोमिनों में ब लिहाज़े ईमान ज़ियादा कामिल वोह है जो अख़्लाक़ में उन से (या'नी दूसरे मोमिनों से) बेहतर हो।

बयान येह हो रहा था कि मोमिन आईने में अपनी सूरत देख कर अपनी सीरत की भी फ़िक्र करे और उसे संवारने की सअ़्य करे। मगर आज का नौजवान जब आईने के सामने खड़ा होता है तो वोह अपने सरापा में गुम हो जाता है और उस की येह फ़िक्र होती है कि मेरी सूरत की ज़ीनत में कोई कसर न रह जाए। उस के हाथ बालों को संवारते संवारते नहीं थकते।

और दुआ़ए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बजाए फ़िल्मी गीत की गुनगुनाहट होती है। येह दुआ़ हमें इस बात का दर्स देती है कि भाई ! अपनी सीरत की भी फ़िक्र कर ऐसा न हो कि कहीं तेरी ख़ूब सूरती बद किरदारी की वज्ह से दुन्या व आख़िरत में ज़िल्लत व रुस्वाई का सबब बन जाए। (العياذ بالله)

सितारों को देखते वक़्त की दुआ़

رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝

तर्जमा : ऐ हमारे रब तू ने इस को बेकार न बनाया। पाकी तेरे लिये। पस हमें दोज़ख़ की आग से बचा। (قرآن مجید، سورۃ آل عمران آیۃ نمبر ۱۹۱، پارہ نمبر ۴.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि बा'ज़ रिवायतों में आया है कि जिस ने सितारों को देखा और उस के अ़जाइबात और **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत में तफ़क्कुर कर के आयत (رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ الخ) पढ़ी तो उस के नामए आ'माल में आस्मान के सितारों की ता'दाद के बराबर नेकियां लिखी जाएंगी।

हो सकता है कि किसी के ज़ेहन में येह बात आ जाए कि ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की नेकियों के बारे में फ़रमाया गया है कि उन की नेकियां सितारों के बराबर हैं और हम सिर्फ़ येह मुख़्तसर दुआ़ पढ़ें और हमें सितारों की ता'दाद के बराबर नेकियां मिल जाएं तो यूं हमें مَعَاذَ الله उन की बराबरी ह़ासिल हो जाएगी। ह़ालांकि ऐसी कोई बात नहीं। मा'लूम होना चाहिये कि बड़े से बड़ा वली भी किसी अदना सह़ाबी के मर्तबे को नहीं पहुंच सकता है तो फिर मा व शुमा किस गिनती में हैं। बल्कि इस को यूं समझिये कि नेकियों की ता'दाद में बराबरी से हमसरी लाज़िम नहीं आती कि ता'दाद का बराबर होना अलग बात है और उन के सवाब का कम या ज़ियादा होना अलग बात है। मसलन

ह़दीसे पाक में फ़रमाया गया कि जो ख़ानए का'बा के त़वाफ़ के क़स्द से घर से चले और ऊंट पर सुवारी करे तो जो क़दम उठाता और रखता

www.dawateislami.net

है **अल्लाह** तआ़ला उस के बदले नेकी लिखता है और ख़ता मिटाता है और दरजा बुलन्द फ़रमाता है। (बैहक़ी :- रावी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

मा'लूम हुवा कि ख़ानए का'बा की त़रफ़ उठने वाला हर क़दम नेकी का मुस्तह़िक़ और ख़ता की मुआफ़ी और दरजे की बुलन्दी का बाइ़स है। मगर जिस का क़दम जिस क़दर इख़्लास के साथ उठेगा उतना ही ज़ियादा क़ुर्बे ख़ुदावन्दी ह़ासिल होगा। लिहाज़ा वोह इतना ही ज़ियादा मर्तबा व फ़ज़ीलत वाला होगा। समझने के लिये इस मिसाल को ले लें कि लोहे के चालीस गिलास एक एक किलो के हैं और एक एक किलो के चालीस गिलास सोने के हैं। ब ज़ाहिर तो ता'दाद बराबर है लेकिन इन की क़ीमत में ज़मीनो आस्मान का फ़र्क़ है। लिहाज़ा ता'दाद की बराबरी देख कर अगर कोई लोहे के गिलास वाले को सोने के गिलास वाले के बराबर समझ ले तो येह उस की नादानी होगी।

मुर्ग़ की बांग सुन कर पढ़ने की दुआ़

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْۤ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ

तर्जमा :- या इलाही मैं तुझ से तेरे फ़ज़्ल का सुवाल करता हूं।

(बुख़ारी :- रावी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़दीस शरीफ़ में आता है कि जब मुर्ग़ के बोलने की आवाज़ सुनो तो **अल्लाह** तआ़ला से उस का फ़ज़्ल मांगो। क्यूंकि मुर्ग़ उस वक़्त फ़िरिश्ते को देखता है। बे शुमार परन्दे इस दुन्या में मौजूद हैं लेकिन किसी दूसरे परन्दे के बोलने पर किसी दुआ़ के पढ़ने की रिवायत नहीं मिलती (واللہ اعلم) मगर मुर्ग़ के बोलने पर दुआ़ की ता'लीम दी गई और इस की इ़ल्लत येह बताई गई कि वोह फ़िरिश्ता देखता है और फ़िरिश्ते नूरी मख़्लूक़ हैं। गुनाहों से पाक होते हैं, मा'सूम होते हैं। **अल्लाह** तआ़ला हमें भी गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

www.dawateislami.net

गधे के रेंकने ﴿आवाज़﴾ पर पढ़ने की दुआ

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

तर्जमा :- मैं **अल्लाह** तआ़ला की पनाह मांगता हूं शैत़ान मर्दूद से ।

(तिरमिज़ी :- रावी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ)

कुत्ते के भौंकने पर पढ़ने की दुआ

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

तर्जमा :- मैं **अल्लाह** तआ़ला की पनाह मांगता हूं शैत़ान मर्दूद से ।

(तिरमिज़ी :- रावी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़दीस शरीफ़ में आया है कि जब कुत्ते को भोंकते और गधे को रेंकते सुनो तो तअ़व्वुज़ पढ़नी चाहिये । मुन्दरिजए बाला तअ़व्वुज़ के इ़लावा दूसरा तअ़व्वुज़ भी पढ़ ले तो कोई ह़रज नहीं और **अल्लाह** तआ़ला की पनाह मांगने की इ़ल्लत येह बताई गई कि येह दोनों जानवर शैत़ान को देखते हैं ।

मा'लूम हुवा कि जब जानवरों के शैत़ान को देखने पर **अल्लाह** तआ़ला की पनाह मांगने की ता'लीम दी गई हो तो येह बात औला तर हुई कि जब किसी को शैत़ानी फ़े'ल करते देखे तो पनाह त़लब करे और ह़स्बे इस्तित़ाअ़त बुराई करने वाले को बुराई से रोके ।

त़लबे बारां की दुआ

اَللّٰهُمَّ اسْقِنَا ○ اَللّٰهُمَّ اَغِثْنَا ○

तर्जमा :- या इलाही हमें पानी दे । या इलाही हमें बारिश दे ।

(بخاری شریف، کتاب الاستسقآء فی المسجدالجامع وباب الاستسقآء فی خطبۃالجمعہ،صفحہ نمبر ۱۳۷/۸ مطبوعہ قدیمی کتب خانہ)

www.dawateislami.net

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब क़हूत़ साली हो और बारिश की ज़रूरत हो तो मज़्कूरा दुआ़ पढ़े । अगर पहली दुआ़ पढ़ ली तो भी काफ़ी है । मगर हर एक दुआ़ को तीन मरतबा पढ़ना बेहतर है ।

इब्ने माजा की रिवायत ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया जो लोग नाप और तोल में कमी करते हैं वोह क़हूत़, ज़ालिम बादशाह और शिद्दते मौत (या'नी मौत की सख़्ती) में गिरिफ़्तार होते हैं अगर चौपाए न होते तो उन पर बारिश न होती ।

अल ह़दीस :- सह़ीह़ मुस्लिम में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : क़हूत़ इसी का नाम नहीं कि बारिश न हो । बड़ा क़हूत़ तो येह है कि बारिश हो और ज़मीन पर (वोह बारिश) कुछ न उगाए । मा'लूम हुवा कि मुआ़मलात व इ़बादात में कोताही की सूरत में क़हूत़ की वई़द है । चाहे वोह बारिश न होने की सूरत में हो या दीगर त़रीक़ों से ।

नमाज़े इस्तिस्क़ा :- इस्तिस्क़ा की नमाज़ जमाअ़त से जाइज़ है । मगर जमाअ़त सुन्नत नहीं चाहे तन्हा पढ़े या जमाअ़त के साथ पढ़े ।

नमाज़े इस्तिस्क़ा के लिये पुराने या पैवन्द लगे कपड़े पहन कर ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ व तवाज़ोअ़ के साथ बर्हना सर पैदल जाएं और नंगे पेर हों तो बेहतर है । नमाज़ के लिये जाने से पहले सदक़ा व ख़ैरात करें और तीन दिन पहले से रोज़े रखें और तौबा व इस्तिग़्फ़ार करें फिर मैदान में जाएं और वहां पर भी तौबा करें । सिर्फ़ ज़बानी तौबा काफ़ी नहीं बल्कि दिल से तौबा करें और जिन के हुक़ूक़ ज़िम्मे हैं उन को अदा करें । या मुआ़फ़ कराएं । बूढ़ों, बच्चों, कमज़ोरों के तवस्सुल से दुआ़ करें और सब आमीन कहें । ग़रज़ कि तवज्जोए रह़मत के तमाम अस्बाब मुहय्या करें और तीन दिन मुतवातिर जंगल को जाएं और दुआ़ करें और येह भी हो सकता है कि इमाम दो रक्अ़त जह्र (या'नी बुलन्द आवाज़) के साथ नमाज़ पढ़ाए और बेहतर येह है कि पहली रक्अ़त में سَبِّحِ اسْمَ और दूसरी रक्अ़त में هَلْ اَتٰكَ पढ़े और नमाज़ के

www.dawateislami.net

बा'द ज़मीन पर खड़ा हो कर ख़ुत्बा पढ़े और दोनों ख़ुत्बों के बा'द जल्सा करे। या एक ही ख़ुत्बा पढ़े और ख़ुत्बे में दुआ़ तस्बीह़ व इस्तिग़फ़ार करे और इस्नाए जल्सा में चादर लौटाए या'नी ऊपर का किनारा नीचे और नीचे का ऊपर कर दे। ख़ुत्बा ख़त्म कर के लोगों की त़रफ़ पीठ और क़िब्ला की त़रफ़ मुंह कर के दुआ़ मांगे। बेहतर वोह दुआ़एं हैं जो अह़ादीस में वारिद हैं उन में से एक दुआ़ बयान की जाती है :

दुआ़ :- اَللّٰھُمَّ اسْقِنَا غَیْثًا مُّغِیْثًا مَّرِیْئًا مَّرِیْعًا نَّافِعًا غَیْرَ ضَارٍّ عَاجِلًا غَیْرَ اٰجِلٍ O

(ابو داؤد شریف، کتاب الاستسقآء، باب رفع الیدین الخ، رقم الحدیث ۱۱۶۹، الجزء الاول صفحہ نمبر ۴۳۰ مطبوعہ داراحیاء التراث بیروت.)

तर्जमा :- या अल्लाह हमें ऐसी बारिश का पानी पिला जो ख़ूब बरसने वाली हो, नफ़्अ़ पहुंचाने वाली हो, नुक़्सान पहुंचाने वाली न हो, जल्दी बरसने वाली हो, देर से आने वाली न हो।

अल ह़दीस :- सुनने अबू दावूद में जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी, कहते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि हाथ उठा कर येह दुआ़ की (या'नी मज़्कूरा दुआ़) आप ने येह दुआ़ पढ़ी ही थी कि बादल घिर आए। (या'नी बारिश शुरूअ़ हो गई)

बादल आता हुवा देखते वक़्त की दुआ़

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّ مَا فِیْہِ O

तर्जमा :- या इलाही मैं तेरी पनाह मांगता हूं उस चीज़ के शर से जो इस में (या'नी बादलों से बरसने वाली वोह बारिश जो जानी व माली नुक़्सान का बाइस बने) (अबू दावूद :- रावी ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब बादल आता देखे तो मुतज़क्किरा दुआ़ पढ़े। क्यूंकि तजरिबा व मुशाहदा तो येह है कि बादल अपने साथ बारिश ले कर आते हैं। लेकिन हम येह नहीं जानते कि उन बादलों से बरसने

www.dawateislami.net

वाली बारिश हमारे लिये सूदमन्द है या कि नुक़्सान देह। लिहाज़ा बन्दगी का तक़ाज़ा येह है कि अपने मा'बूद की बारगाह में इल्तिजा की जाए कि ऐ तमाम जहानों के पालने वाले अगर येह बादल बरसात का बाइस बने तो ऐसी बारिश हो जो माली व जानी नुक़्सान का बाइस न बने। बल्कि हमारे लिये मुफ़ीद तरीन हो।

बादल के खुलते वक़्त की दुआ

اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ؕ

तर्जमा :- तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** तआ़ला के लिये हैं जो सारे जहानों का पालने वाला है। (अबू दावूद :- रावी ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब बादल आए और बारिश न हो बल्कि बादल छट जाएं तो **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र करे क्यूंकि हो सकता था कि इन बादलों से बरसने वाली बारिश हमारे लिये नफ़्अ़ बख़्श न होती बल्कि नुक़्सान देह होती लिहाज़ा बादल के खुल जाने पर **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द करे और हमेशा इस बात पर ए'तिक़ाद रखे कि **अह़कमुल ह़ाकिमीन** के हर फ़े'ल में ह़िक्मतों के ख़ज़ीने पोशीदा हैं।

बारिश के वक़्त की दुआ

اَللّٰھُمَّ سُقْيًا نَّافِعًا ط

तर्जमा :- या इलाही ऐसा पानी बरसा जो नफ़्अ़ पहुंचाए।

(سنن البیھقی الکبریٰ، کتاب صلوۃ الخسوف،باب طلب الاجابۃعندنزول الغیث،رقم الحدیث ۶۴۶۱،الجزء الثالث صفحہ نمبر ۳۶۲مکتبہ دارالبازمکہ المکرمہ)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब बारिश बरसना शुरूअ़ हो जाए तो मज़्कूरा दुआ़ पढ़े। क्यूंकि ज़ियादा बारिश फ़स्लों, मकानों और बिल ख़ुसूस वोह मकान जो कच्चे होते हैं उन के लिये नुक़्सान का बाइस हो सकती है। लिहाज़ा जब बारिश हो रही हो तो **अल्लाह** तआ़ला से होने वाली बारिश का नफ़्अ़ मांगे।

www.dawateislami.net

बारिश की ज़ियादती के वक़्त की दुआ

اَللّٰھُمَّ حَوَالَیْنَا وَلَا عَلَیْنَا اَللّٰھُمَّ عَلَی الْاٰکَامِ وَالْجِبَالِ وَالظِّرَابِ وَالْاَوْدِیَۃِ وَمَنَابِتِ الشَّجَرِ

(بخاری شریف،ابواب الاستسقآء،باب الستسقآء فی المسجدالجامع،الجزء الاول ،صفحہ نمبر ۱۳۸ مطبوعہ قدیمی کتب خانہ،کراچی)

तर्जमा :- या इलाही हमारे इर्द गिर्द बरसा हम पर न बरसा या इलाही टीलों और पहाड़ों और नालों और दरख़्त उगने के मक़ामात पर (या'नी जहां जानी व माली नुक़्सान होने का अन्देशा न हो)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब बारिश इस क़दर हो जाए कि अब उस की ज़ियादती नुक़्सान का बाइस बन सकती है तो **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में मुतज़क्किरा दुआ़ के ज़रीए़ इल्तिजा करे ताकि बारिश की ज़ियादती नुक़्सान का सबब न बन सके।

बादल की गरज और बिजली की कड़क के वक़्त की दुआ

اَللّٰھُمَّ لَا تَقْتُلْنَا بِغَضَبِکَ وَلَا تُھْلِکْنَا بِعَذَابِکَ وَعَافِنَا قَبْلَ ذٰلِکَ ○

(ترمذی شریف،کتاب الدعوات،باب مایقول اذاسمع الرَّعْدَ،رقم الحدیث ۳۴۶۱،الجزء الخامس صفحہ نمبر ۲۸۱ دارالفکربیروت.)

तर्जमा :- या इलाही तू अपने ग़ज़ब से हम को क़त्ल न फ़रमा और अपने अ़ज़ाब से हमें हलाक न फ़रमा और उस के आने से क़ब्ल हमें आ़फ़िय्यत दे।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब बादल ज़ोर से गरजते हैं और बिजली की कड़क कानों को लर्ज़ा देती है तो ऐसे मौक़अ़ पर होने वाली बारिश अक्सर तूफ़ान की सूरत इख़्तियार कर लेती है जो हलाकत व तबाही का बाइस बनती है। लिहाज़ा ऐसे मौक़अ़ पर मज़्कूरा दुआ़ पढ़े ताकि **अल्लाह** तआ़ला हमें हर आस्मानी व ज़मीनी बलाओं से आ़फ़िय्यत दे।

www.dawateislami.net

आंधी के वक़्त की दुआ

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ خَیْرَھَا وَخَیْرَ مَا فِیْھَا
وَخَیْرَ مَا اُرْسِلَتْ بِهٖ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ
شَرِّھَا وَشَرِّ مَا فِیْھَا وَشَرِّ مَا اُرْسِلَتْ بِهٖ

तर्जमा :– या इलाही मैं तुझ से इस (या'नी आंधी) की और जो कुछ इस में है और जो कुछ इस के साथ भेजी गई है उस की भलाई का सुवाल करता हूं और मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस (आंधी) के शर से और उस चीज़ के शर से जो कुछ इस में है और उस के शर से जिस के साथ येह भेजी गई है।

(مسلم شریف، کتاب صلوۃ الستسقآء، باب التعوّذ عند رؤیۃ الریح الخ رقم الحدیث ۸۹۹، صفحہ نمبر ۴۴۲ دار ابن حزم بیروت.)

दर्स :– प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब आंधी चले तो मज़्कूरा दुआ पढ़े। अगर अंधेरा भी छा जाए तो सूरते मुअ़व्वज़तैन (या'नी सूरतुन्नास व सूरतुल फ़लक़) भी पढ़े।

सूरज गहन और चांद गहन के वक़्त की दुआ

اَللّٰهُ اَكْبَر

तर्जमा :– **अल्लाह** तआ़ला बहुत बड़ा है। (बिलाशुबा तमाम बड़ाइयां **अल्लाह** तआ़ला के लिये हैं) (बुख़ारी, रावी ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا)

दर्स :– प्यारे इस्लामी भाइयो ! अय्यामे जाहिलिय्यत में सूरज या चांद गहन (जिसे ग्रहन भी कहते हैं) हो जाता तो कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन इस मौक़अ़ पर ऐसे ए'तिक़ाद का इज़्हार करते थे जिस में बूए शिर्क पाई जाती थी। इस के बर अ़क्स हमारे आक़ा व मौला ने ऐसे मौक़अ़ पर **अल्लाह** की बड़ाई बयान करने और उस के सामने सजदा रेज़ होने की ता'लीम फ़रमाई। ताकि शिर्क का रद्दे बलीग़ हो और इस बात का इज़्हार हो कि तमाम ताक़तें और क़ुव्वतें **अल्लाह** तआ़ला के क़ब्ज़ए क़ुदरत में हैं और

www.dawateislami.net

उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं नमाज़ के इ़लावा ऐसे मौक़अ़ पर **अल्लाह** की रिज़ा के लिये सदक़ा व ख़ैरात करे।

सूरज गहन की नमाज़ :- सूरज गहन की नमाज़ सुन्नते मुअक्कदा है और जमाअ़त के साथ पढ़ना मुस्तह़ब है। अगर जमाअ़त से पढ़ी जाए तो तमाम शराइत़ जो नमाज़े जुमुआ़ के लिये हैं सिवाए ख़ुत़बे के वोह इस नमाज़ के लिये भी हैं। नमाज़े कुसूफ़ उस वक़्त पढ़ें जब सूरज को गहन लगा हो तो थोड़ा या ज़ियादा बल्कि गहन वाले सूरज पर अब्र आ जाए जब भी पढ़ें। अलबत्ता अगर गहन ख़त्म हो गया हो तो अब नमाज़ नहीं पढ़ेंगे।

इसी त़रह़ ऐसे वक़्त में सूरज को गहन लगा जब नमाज़ पढ़ना मकरूह है या'नी ज़वाल और तुलूए़ आफ़्ताब और ग़ुरूबे आफ़्ताब के वक़्त नमाज़े कुसूफ़ पढ़ना जाइज़ नहीं। सूरज गहन की दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े। जिस त़रह़ नफ़्ल पढ़ते हैं। इस नमाज़ के लिये न अज़ान है न इक़ामत और न बुलन्द आवाज़ से क़िराअत। दो रक्अ़त से ज़ियादा भी पढ़ ली जाएं तो ह़रज नहीं। नमाज़ को तूल देने के लिये त़वील सूरत पढ़े। वरना तख़्फ़ीफ़ करे। अलबत्ता दुआ़ को तूल दे। इमाम दुआ़ के लिये मिम्बर पर न जाए। सूरज गहन की नमाज़ के वक़्त अगर जनाज़ा आ जाए तो पहले नमाज़े जनाज़ा पढ़े बा'द में नमाज़े कुसूफ़ पढ़े।

चांद गहन की नमाज़ :- चांद गहन के वक़्त की नमाज़ में जमाअ़त नहीं। मुसलमान इनफ़िरादी त़ौर पर नमाज़ पढ़ें। चांद गहन की नमाज़ भी नफ़्ल नमाज़ की त़रह़ पढ़ी जाती है और वक़्त के लिये वोही मस्अला है जो सूरज गहन के बयान में तह़रीर किया गया है। इस के इ़लावा बा'ज़ मवाक़ेअ़ और भी हैं कि इस वक़्त दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ना मुस्तह़ब है। ﴾1﴿ तेज़ आंधी आए ﴾2﴿ दिन में सख़्त तारीकी हो जाए ﴾3﴿ रात में ख़ौफ़नाक रौशनी हो जाए ﴾4﴿ लगातार कसरत से बारिश बरसे ﴾5﴿ ब कसरत औले बरसें (या'नी बर्फ़ की मानिन्द छोटे छोटे गोले) जो ख़ुसूसन फ़स्लों को तबाह करते हैं ﴾6﴿ आस्मान तेज़ सुर्ख़ हो जाए ﴾7﴿ आस्मानी बिजलियां गिरें ﴾8﴿ ब

www.dawateislami.net

कसरत तारे टूटें ﴾9﴿ ताऊन या दूसरी वबा फैल जाए ﴾10﴿ ज़लज़ले आएं ﴾11﴿ दुश्मन का ख़ौफ़ हो ﴾12﴿ दहशतनाक वाक़िआ हो जाए। (बहारे शरीअत, अल जुज़्ए अव्वल, हिस्सए चहारुम सफ़्हा नम्बर 435 गहन की नमाज़ का बयान मत्बूआ मक्तबए रज़्विय्या आराम बाग़ कराची।)

ग़र्ज़ कि बन्दए मोमिन हर मुसीबत पर नमाज़ के ज़रीए अल्लाह की मदद त़लब करे और शुक्र बजा लाए। बे सब्री का इज़्हार न करे।

तुलूए आफ़्ताब के वक़्त की दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَقَالَنَا یَوْمَنَا هٰذَا وَلَمْ یُهْلِكْنَا بِذُنُوْبِنَا ○

तर्जमा :- अल्लाह तआला का शुक्र है जिस ने आज के दिन हमें मुआफ़ी दी और हमारे गुनाहों के सबब हमें हलाक न किया।

(مسلم شریف، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب ترتیل القراءۃ الخ رقم الحدیث.....دار ابن حزم بیروت)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब सूरज निकल आए तो मज़्कूरा दुआ पढ़े कोई शख़्स नहीं जानता कि मैं कब मरूंगा ? सिवाए उन के जिन्हें अल्लाह तआला मुत्तलअ़ कर दे। लिहाज़ा मोमिन दिन की इब्तिदा को पाए तो शुक्रे इलाही बजा लाए कि अल्लाह तआला ने अपने अय्याम में से एक यौम और अ़ता फ़रमाया। इस ने'मत का शुक्र यूं करे कि तौबा से अपने गुनाहों की सियाही को धोए और अ़मले इख़्लास से अपने नामए आ'माल को मुनव्वर करे और अ़हद करे कि जब तक ज़िन्दगी बाक़ी है अपनी ज़िन्दगी को अल्लाह तआला और उस के महबूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमांबरदारी में गुज़ारेगा। येही दुन्या व आख़िरत की फ़लाहो कामरानी का ताज है।

ग़ुरूबे आफ़्ताब के वक़्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ هٰذَا اِقْبَالُ لَیْلِكَ وَاِدْبَارُ نَهَارِكَ وَاَصْوَاتُ دُعَاتِكَ فَاغْفِرْلِیْ ○

(تصحیفات المحدثین، الجزء الاول صفحہ نمبر ۲۰۳، رقم الحدیث ۱۴۴، المطبعۃ العربیہ الحدیثۃ قاھرہ)

www.dawateislami.net

तर्जमा :- या इलाही येह रात के आने और दिन के जाने का वक़्त है और तेरे पुकारने वालों (मुअज़्ज़िनों) की आवाज़ (अज़ान) का वक़्त है। पस मुझे बख़्श दे।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! मग़रिब की अज़ान के वक़्त या'नी बा'दे ग़ुरूबे आफ़्ताब मज़्कूरा दुआ़ पढ़े। ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे येह दुआ़ (जो तह़रीर की गई) मग़रिब की अज़ान के वक़्त पढ़नी बतलाई।

सितारा टूटता देखते वक़्त की दुआ़

مَاشَآءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ (ابن السنی)

तर्जमा :- जो **अल्लाह** तआ़ला चाहे। कोई क़ुव्वत नहीं मगर **अल्लाह** तआ़ला की (मदद) से।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ दफ़्आ़ रात के वक़्त हमें आस्मान से सितारा टूटता हुवा दिखाई देता है। ऐसे वक़्त में मज़्कूरा दुआ़ पढ़नी चाहिये।

बाज़ार में दाख़िल होते वक़्त की दुआ़

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ط

(ترمذی شریف، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا دخل

السوق، رقم الحدیث ۳۴۳۹ الجزء الخامس صفحه نمبر ۲۷۱ دارالفکر)

तर्जमा :- अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह यक्ता है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाहत है और उसी के लिये ह़म्द है, वोही जिलाता और मारता है, वोह (ऐसा) ज़िन्दा है, जिसे मौत नहीं, तमाम भलाइयां उसी के दस्ते क़ुदरत में हैं और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।

www.dawateislami.net

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब बाज़ार में दाख़िल हो तो मुतज़क्किरा दुआ़ पढ़े । इस दुआ़ के पढ़ने की बहुत फ़ज़ीलत ह़दीस शरीफ़ में आई है ।

अल ह़दीस :- जो शख़्स बाज़ार में दाख़िल होते वक़्त (जो दुआ़ तह़रीर की गई) पढ़ेगा **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये दस लाख नेकियां लिखेगा और उस के दस लाख गुनाह मिटा देगा और दस लाख दरजे बुलन्द करेगा और उस के लिये एक घर जन्नत में बनाएगा ।

(ترمذی شریف، کتاب الدعوات،باب مایقول اذادخل الخ،رقم الحدیث ۳۴۴۰
الجزء الخامس صفحه نمبر ۲۷۱ دارالفکربیروت)

लिहाज़ा हर मुसलमान को चाहिये कि जब वोह बाज़ार में दाख़िल हो तो मुतज़क्किरा दुआ़ पढ़े । सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को बाज़ार में कुछ काम न भी होता तो बाज़ार चले जाते ताकि इस दुआ़ की फ़ज़ीलत को पाएं । या'नी सिर्फ़ दुआ़ पढ़ कर अज्रो सवाब पाने के लिये ।

फल लेते वक़्त की दुआ़

اَللّٰھُمَّ کَمَا اَرَیْتَنَا اَوَّلَہٗ فَاَرِنَا اٰخِرَہٗ ۝

तर्जमा :- या इलाही जिस त़रह़ तू ने हमें इस का अव्वल दिखाया है तू इस का आख़िर दिखा ।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब कोई फल का हदया पेश करे तो दुरूद शरीफ़ पढ़ कर फल को आंखों और होंटों पर लगाए और फिर मुतज़क्किरा दुआ़ पढ़े ।

अल ह़दीस :- बैहक़ी ने दा'वते कबीर में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की, कहते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा, जब नया फल हुज़ूर की ख़िदमते अक़्दस में पेश किया जाता तो उसे आंखों और होंटों पर रखते और येह दुआ़ (या'नी मुतज़क्किरा दुआ़) पढ़ते । फिर जो बच्चा ह़ाज़िर होता उसे देते । (ब ह़वाला बहारे शरीअ़त)

www.dawateislami.net

वुज़ू से पहले की दुआ

﴾1﴿ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तर्जमा :- **अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़मत वाला है । (ابو داؤد شریف، کتاب الطھارہ، باب التسمية على الوضوء، رقم الحديث ۱۰۱، الجزء الاول صفحه نمبر ۲۹ داراحیاء التراث بیروت)

﴾2﴿ بِسْمِ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ ○

तर्जमा :- **अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** तआ़ला के लिये

(المعجم الصغير، حرف الألف من اسمه احمد، ۱۹۲ الجزء ۱ صفحه نمبر ۱۳۱، المكتب الاسلامى بيروت.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! वुज़ू से पहले "بِسْمِ اللهِ" पढ़ने से वुज़ू में भी बरकत हो जाती है ।

दारे कुत़नी और बैहक़ी अपनी सुनन में अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रावी कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया जिस ने "بِسْمِ اللهِ" कह कर वुज़ू किया सर से पाउं तक उस का सारा बदन पाक हो गया और जिस ने बिग़ैर "بِسْمِ اللهِ" पढ़ कर वुज़ू किया तो उतना ही बदन पाक होगा जितने पर पानी गुज़रा । मा'लूम हुवा जिस ने "بِسْمِ اللهِ" पढ़ कर वुज़ू किया तो ऐसी बरकत हुई कि बदन के वोह ह़िस्से भी पाक हो गए जो वुज़ू में नहीं धोए गए । लेकिन इस से हमें क्या फ़ाएदा ह़ासिल हुवा तो यक़ीन जानिये इस में हमारा बहुत बड़ा फ़ाएदा है । वोह यूं समझिये इमाम मालिक व नसाई ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह मुनासिजी से रावी हैं कि हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया कि जब मुसलमान बन्दा वुज़ू करता है तो कुल्ली करने से मुंह के गुनाह झड़ जाते हैं और जब नाक में पानी डाल कर साफ़ किया तो नाक के गुनाह निकल गए और जब मुंह धोया तो उस के चेहरे के गुनाह निकले यहां तक कि पलकों के जब हाथ धोए तो हाथ के गुनाह निकले यहां तक कि नाख़ुनों के और जब सर का मस्ह़ किया तो सर के गुनाह निकले यहां तक कि कानों के और जब पाउं को धोया तो पाउं की ख़त़ाएं निकलीं यहां तक कि नाख़ुनों की । मा'लूम येह हुवा कि वुज़ू करने से

www.dawateislami.net

मुतवज़्ज़ी (वुज़ू करने वाला) के गुनाह झड़ते हैं मगर उन आ'ज़ा के जो वुज़ू में धोए जाते हैं लेकिन जब "بِسۡمِ اللّٰہِ" पढ़ी तो फ़रमाया गया कि तमाम बदन पाक हो गया। बस मा'लूम हुवा कि तमाम बदन के गुनाह निकल गए।

سُبۡحَانَ اللّٰہ ! येह बख़्शिशें येह फ़ज़ीलतें येह इनायतें मगर उन के लिये जो इत्तिबाए रसूल को अपनाते हैं जो तमाम गुलामियों को छोड़ कर सिर्फ़ और सिर्फ़ गुलामिये मुस्तफ़ा को क़बूल करते हैं क्यूंकि वोह इस हक़ीक़त को जानते हैं कि गुलामिये मुस्तफ़ा को पा कर तमाम गुलामियों से आज़ादी हासिल हो जाती है। ऐसे सच्चे गुलामों ही के लिये जहन्नम से आज़ादी का मुज़दए जांफ़िज़ा है।

याद रखिये कि वुज़ू से हासिल होने वाली नूरानिय्यत ऐसी क़ाइमी व दाइमी है कि क़ियामत के दिन भी ख़त्म न होगी। आ'ज़ाए वुज़ू से आसारे वुज़ू की ऐसी नूरानी शुआएं फूट रही होंगी जो दूसरी उम्मतों की आंखों को ख़ीरा कर रही होंगी क्यूंकि येह ए'ज़ाज़ सिर्फ़ मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत को हासिल है।

अल हदीस :– हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : क़ियामत के दिन मेरी उम्मत इस हालत में बुलाई जाएगी कि मुंह और हाथ पाउं आसारे वुज़ू से चमकते होंगे तो जिस से हो सके चमक ज़ियादा कर ले।

(بخاری شریف، کتاب الوضوء، باب فضل الوضوء والغُرُّ الخ الجزء الاول صفحه نمبر ۲۵ مطبوعه قدیمی کتب خانه کراچی)

अल हदीस :– हज़रते सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जिस ने "بِسۡمِ اللّٰہِ" न पढ़ी उस का वुज़ू नहीं। (या'नी वुज़ू कामिल नहीं)

(ابن ماجه شریف، کتاب الطهارة، باب التسمیة فی الوضوء، رقم الحدیث ۳۹۸، الجزء الاول صفحه نمبر ۲۴۲ دار المعرفه بیروت.)

लिहाज़ा वुज़ू "بِسۡمِ اللّٰہِ" पढ़ कर शुरूअ़ करें।

www.dawateislami.net

वुज़ू के दरमियान पढ़ने की दुआ

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ وَوَسِّعْ لِیْ فِیْ دَارِیْ وَبَارِكْ لِیْ فِیْ رِزْقِیْ ○

तर्जमा :- ऐ **अल्लाह** मुझे बख़्श दे और मेरे घर में बरकत व कुशादगी दे और मेरे घर रोज़ी में बरकत अ़ता फ़रमा।

(عمل الیوم واللیلة للنسائی،مایقول اذاتوضاء،رقم الحدیث ۸۰،الجزء الاول صفحہ نمبر ۱۷۲،مؤسستہ ارسالہ بیروت)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! वुज़ू करते वक़्त इस दुआ़ की बहुत ही फ़ज़ीलत है। ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये वुज़ू का पानी ले कर आया। आप ने वुज़ू शुरूअ़ किया और मैं ने सुना कि वुज़ू करते हुवे फ़रमा रहे थे (اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ الخ ○) मैं ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप येह दुआ़ पढ़ रहे थे ? आप ने इरशाद फ़रमाया : क्या मैं ने कोई चीज़ छोड़ दी ?

(عمل الیوم واللیلة للنسائی،مایقول اذاتوضاء،رقم الحدیث ۸۰،الجزء الاول صفحہ نمبر ۱۷۲،مؤسستہ ارسالہ بیروت)

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! मा'लूम हुवा कि येह दुआ़ ऐसी फ़ज़ीलत रखती है कि अगर वुज़ू करते हुवे इसे पढ़ा जाए तो गोया बन्दा, बन्दा नवाज़ से दुन्या व आख़िरत की तमाम भलाइयां मांग लेता है। بِسْمِ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہ पढ़ने की भी बड़ी फ़ज़ीलत है।

अल ह़दीस :- ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया कि ऐ अबू हुरैरा ! जब तुम वुज़ू करो तो ''بِسْمِ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہ'' पढ़ लिया करो कि जब तक तुम्हारा येह वुज़ू बाक़ी रहेगा उस वक़्त तक तुम्हारे मुहाफ़िज़ फ़िरिश्ते तुम्हारे लिये बराबर नेकियां लिखते रहेंगे। (معجم الصغیر للطبرانی، حرف الاف من اسمہ احمد،الجزء الاول صفحہ نمبر ۱۳۱،المکتب الاسلامی بیروت.رقم ۱۹۲)

www.dawateislami.net

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीस से इस दुआ़ की फ़ज़ीलत ब ख़ूबी मा'लूम होती है कि जब वुज़ू करने वाला इस दुआ़ को पढ़ लेगा तो उस का येह वुज़ू जब तक ख़त्म न होगा उस वक़्त तक बराबर किरामन कातिबीन उस के नामए आ'माल में नेकियां लिखते रहेंगे।

मस्जिद को देखते वक़्त की दुआ़

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَاحَبِیْبَ اللہ

(جذب القلوب الیٰ دیار المحبوب)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी शोहरए आफ़ाक़ तस्नीफ़ जज़्बुल क़ुलूब इल्ख़ में तह़रीर फ़रमाते हैं कि मस्जिद के पास से गुज़रते वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ना मुस्तह़ब है लिहाज़ा मस्जिद को देखते वक़्त की दुआ़ में एक आसान और मशहूरो मा'रूफ़ सीग़े वाला दुरूद लिख दिया है अगर्चे इस के इ़लावा कोई और दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहे तो वोह भी पढ़ सकता है।

मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ़एं

﴾1﴿ بِسْمِ اللّٰہِ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ ○

तर्जमा :- मैं **अल्लाह** के नाम से (दाख़िल होता हूं) और रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर सलाम हो।

(ابن ماجہ شریف، کتاب المساجد والجماعات، باب الدعاء عند دخول المسجد، رقم الحدیث ۷۷۱، الجزء الاول صفحہ نمبر ۴۲۵)

﴾2﴿ اَللّٰھُمَّ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِکَ ○

तर्जमा :- या **अल्लाह** मेरे लिये अपनी रह़मत के दरवाज़े खोल दे।

(ابن ماجہ شریف، کتاب المساجد الخ، باب الدعاء، الخ، رقم الحدیث ۷۷۲، الجزء الاول صفحہ نمبر ۴۲۶ مطبوعہ دار المعرفہ بیروت)

www.dawateislami.net

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ وَافْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ ○ ﴿3﴾

तर्जमा :- या **अल्लाह** मेरे गुनाहों को बख़्श दे और मेरे लिये अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे। (ابن ماجه شریف، کتاب المساجد الخ، باب الدعاء الخ، رقم الحدیث ۷۷۱، الجزء الاول صفحه نمبر ۲۵۴ مطبوعه دارالمعرفه بیروت)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! मस्जिद में दाख़िल होने के बाब में तीन दुआएं तह़रीर की हैं। इन में एक दुआ का पढ़ लेना काफ़ी और अगर तीनों दुआएं पढ़ना चाहे तो इसी तरतीब से पढ़े जैसे तह़रीर की गई हैं।

दुआ नम्बर तीन की फ़ज़ीलत में सह़ाबिये रसूल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इरशाद हमारे लिये बा मुराद ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त येह दुआ पढ़ते। कहते हैं कि जो इस दुआ को पढ़ेगा वोह तमाम दिन शैत़ान के शर से मह़फ़ूज़ रहेगा। (मिश्कात)

मस्जिद में दाख़िल होने का त़रीक़ा :-

जब भी मस्जिद में दाख़िल हो तो दायां क़दम अन्दर रख कर मस्जिद में दाख़िल हो और मस्जिद से निकलते वक़्त बायां क़दम बाहर रख कर मस्जिद से निकले।

नफ़्ली ए'तिकाफ़ की दुआ

نَوَيْتُ سُنَّةَ الْاِعْتِكَافِ لِلّٰهِ تَعَالٰى ○

तर्जमा :- मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की **अल्लाह** तआ़ला के लिये।

www.dawateislami.net

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! ए'तिकाफ़ की निय्यत कर लेने वाले या'नी मो'तकिफ़ को कि जब तक वोह मस्जिद में रहेगा बिग़ैर मह़नत ए'तिकाफ़ का सवाब मिलता रहेगा । येह ए'तिकाफ़ नफ़्ली है लिहाज़ा मस्जिद से ख़ारिज होते ही येह ए'तिकाफ़ ख़त्म हो जाएगा । चाहे मस्जिद से ह़ाजत के लिये निकले या बिला ज़रूरत ।

दूसरा फ़ाएदा मो'तकिफ़ को येह ह़ासिल होगा कि मस्जिद में खाना, पीना और सोना नाजाइज़ है । लिहाज़ा जब ए'तिकाफ़ की निय्यत कर ली होगी तो उस के लिये मस्जिद में खाना, पीना और सोना जाइज़ हो जाएगा । लेकिन ए'तिकाफ़ का मक़्सूद हुसूले सवाब हो फिर ज़िम्नन येह फ़ाएदा ह़ासिल होगा लेकिन आदाबे मस्जिद हमेशा पेशे नज़र रहे ।

ह़ज़रते नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाया करते थे कि जो शख़्स मस्जिदे जमाअ़त में (जहां पंज वक़्ता नमाज़ जमाअ़त से पढ़ाई जाती हो) मग़रिब और इ़शा के दरमियान ए'तिकाफ़ करे और नमाज़ व तिलावते कुरआन के सिवा कलाम न करे तो **अल्लाह** तआ़ला के ज़िम्मए करम पर है कि जन्नत में उस का मह़ल तय्यार करे । (كَشْفُ الغُمّه)

मस्जिद से निकलते वक़्त की दुआ़

﴾1﴿ بِسْمِ اللّٰهِ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰه ○

तर्जमा :- **अल्लाह** तआ़ला के नाम से (निकलता हूं) और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर सलाम हो ।

(ابن ماجه شريف، كتاب المساجد الخ باب الدعاء الخ رقم الحديث ١٧٧١ الجزء الاول صفحه نمبر ٤٢٥ دار المعرفه بيروت)

﴾2﴿ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ ○

तर्जमा :- ऐ **अल्लाह** मैं तुझ से तेरे फ़ज़्ल का सुवाल करता हूं ।

(مسلم شريف، كتاب صلوة المسافرين الخ،باب مايقول اذا الخ،رقم الحديث ٧١٣،صفحه نمبر ٣٦٠ دار ابن حزم بيروت)

www.dawateislami.net

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ وَافْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ فَضْلِكَ ○ ﴿3﴾

तर्जमा :- ऐ **अल्लाह** मेरे गुनाहों को बख़्श दे और मेरे लिये अपने फ़ज़्ल के दरवाज़े खोल दे। (ابن ماجه شریف، کتاب المساجد، باب الدعاء، رقم الحدیث ۷۷۱الجزء الاول صفحه نمبر ۴۲۵ دارالمعرفه بیروت)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! मस्जिद से जब निकले तो पहले बायां पाउं बाहर निकाले और इन दुआ़ओं में से कोई एक दुआ़ पढ़ ले और अगर तीनों दुआ़एं इसी तरतीब से पढ़ ले तो बहुत ही अच्छा है।

बा'ज़ लोग मस्जिद से निकलते वक़्त बायां पाउं निकालने की बजाए पहले दायां पाउं बाहर निकालते हैं इस वज्ह से कि पहले सीधा जूता या चप्पल पहनने की आ़दत होती है और येह आ़दत होनी भी चाहिये कि ह़दीस में येही आता है कि जूता पहनते वक़्त इब्तिदा दाएं से करें, लेकिन येह बात भी अपनी जगह अटल है कि मस्जिद से पहले बायां क़दम बाहर निकाले तो अब क्या त़रीक़ा इख़्तियार किया जाए कि दोनों बातों पर अ़मल हो जाए।

क्यूंकि मस्जिद से बाहर आते वक़्त पहले बायां क़दम निकालने का हुक्म फ़रमाया गया है। लिहाज़ा (जब फ़ाज़िले बरेलवी अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मस्जिद से बाहर निकलते) तो इस मौक़अ़ पर बायां क़दम बाएं जूते के बालाई ह़िस्से पर रखते फिर दायां पाउं बाहर निकाल कर पहले सीधा जूता पहनते और बा'द में उलटा जूता पहनते। इस त़रह़ दोनों बातों पर अ़मल हो जाता।

नमाज़े वित्र के बा'द की दुआ़

سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ ○

(ابوداؤد شریف، کتاب الوتر، باب فی الدعاء بعدالوتر، رقم الحدیث ۱۴۳۰، الجزء الثانی صفحه نمبر ۹۳ داراحیاء التراث العربی بیروت.)

www.dawateislami.net

तर्जमा :- "तमाम पाकियां उस बादशाह के लिये (जो तमाम जहानों का मालिके ह़क़ीक़ी है) जो ऊ़यूब से मुनज़्ज़ा व मुबर्रा है।"

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस दुआ़ को तीन मरतबा पढ़े और तीसरी मरतबा बुलन्द आवाज़ के साथ "اَلْقُدُّوس" में जो वाव मद्दाह है उसे तीन अलिफ़ के बराबर खींच कर पढ़े।

ग़ौर कीजिये जब बन्दए मोमिन इस बात का ए'लान करे कि मेरा मा'बूद वोह है जो हर त़रह़ के ऊ़यूब व नक़ाइस से पाक है और ख़ुद ऊ़यूब का मुजस्समा बन जाए तो येह बात क़ौल व अ़मल में मुवाफ़क़त के ख़िलाफ़ है। लिहाज़ा येह दुआ़ उसे इस बात का दर्स देती है कि वोह इस बात का अ़ह्द करे कि आइन्दा वोह अपने आ'ज़ा को तमाम ऊ़यूबो नक़ाइस से पाको साफ़ रखने की सअ़्य करेगा। ताकि वोह अपने मा'बूद की सिफ़ात का मज़्हर बन जाए। **अल्लाह** तआ़ला हमें इस पर इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमाए। वित्र की नमाज़ में दुआ़ए कुनूत पढ़ने के बा'द दुरूद पढ़ना अफ़्ज़ल है।

(درمختار،کتاب الصلوٰۃ،باب الوتر والنوافل،الجزء الثانی صفحہ نمبر ۴۴۲ مطبوعہ مکتبہ امدادیہ ملتان۔)

फ़ज्र की सुन्नतों के बा'द की दुआ़

اَللّٰھُمَّ رَبَّ جِبْرَئِیْلَ وَمِیْکَائِیْلَ وَاِسْرَافِیْلَ وَمُحَمَّدِنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اَعُوْذُبِکَ مِنَ النَّارِ ○

तर्जमा :- या इलाही जिब्राईल व मीकाईल और इस्राफ़ील व मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के परवर दगार मैं दोज़ख़ से तेरी पनाह मांगता हूं।

(مجمع الزوائد)

नमाज़े फ़ज्र के लिये निकले तो अस्नाए राह में पढ़ने की दुआ़

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ فِیْ قَلْبِیْ نُوْرًا وَّفِیْ بَصَرِیْ نُوْرًا وَّعَنْ سَمْعِیْ نُوْرًا وَّعَنْ یَّمِیْنِیْ

نُوْرًا وَّعَنْ شِمَالِیْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ لِّیْ نُوْرًا ○

(बुख़ारी :- रावी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

www.dawateislami.net

तर्जमा :- या इलाही मेरे दिल में और मेरी बीनाई में और मेरी समाअ़त में नूर कर दे और मेरे दाएं और मेरे बाएं नूर कर दे और मेरे पीछे नूर कर दे और मुझे सरापा नूर कर दे।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह दुआ़ बड़ी बा बरकत है मगर हम येह दुआ़ जब ही पढ़ सकते हैं जब हम घर में फ़ज्र की सुन्नतें पढ़ कर मस्जिद में नमाज़े फ़ज्र की अदाएगी के लिये ह़ाज़िर हों वैसे भी सुन्नत व नवाफ़िल घर में पढ़ना अफ़्ज़ल हैं।

ह़ज़रते शैख़ शिहाबुद्दीन सोहरवर्दी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि मैं ने जिस आदमी को इस दुआ़ पर मुदावमत करते देखा तो उस के पास एक बरकत और नूरानिय्यत मा'लूम होती थी। (عوارف المعارف)

हर नमाज़ के बा'द की दुआ़एं

﴾1﴿ بِسۡمِ اللّٰہِ الَّذِیۡ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ الرَّحۡمٰنُ الرَّحِیۡمُ اَللّٰھُمَّ اَذۡھِبۡ عَنِّی الۡھَمَّ وَالۡحُزۡنَ ○

(مجمع الزوائدومنبع الفوائد، کتاب الأذکار، باب الدُعاء فی الصلوۃ وبرورھا، رقم الحدیث ۱۶۹۷۱، الجزء العاشر صفحہ نمبر ۱۴۴ دارالفکر)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ने के बा'द दायां हाथ पेशानी या'नी सर के अगले ह़िस्से पर रखे और इस दुआ़ को पढ़े और हाथ खींच कर माथे तक लाए। اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सर दर्द से मह़फ़ूज़ रहेगा।

﴾2﴿ سُبۡحٰنَ اللّٰہِ 33 बार, اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ 33 बार, اَللّٰہُ اَکۡبَرُ 33 बार और لَاۤ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحۡدَہٗ لَا شَرِیۡکَ لَـہٗ وَ لَـہُ الۡحَمۡدُ وَ ھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ؕ एक बार पढ़े।

(मुस्लिम शरीफ़ :- रावी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ)

www.dawateislami.net

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस दुआ की बड़ी फ़ज़ीलत है। सहीह मुस्लिम में हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो हर नमाज़ के बा'द 33 बार سُبْحٰنَ اللّٰهِ, 33 बार اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ, 33 बार اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहे येह कुल निनानवे हुवे और येह कलिमए त़य्यिबा (لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ... اِلٰخ) पढ़ कर सौ (100 अ़दद की तस्बीह़) पूरा करे तो उस की तमाम ख़त़ाएं बख़्श दी जाएंगी अगर्चे समन्दर के झाग के मिस्ल हों। (ब ह़वाला बहारे शरीअ़त)

﴿3﴾ आयतुल कुर्सी, एक बार (सूरए बक़रह की आयत नम्बर 255 याद कीजिये)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! बैहक़ी शुअ़बुल ईमान में रावी कि ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इसी मिम्बर पर फ़रमाते सुना जो हर नमाज़ के बा'द आयतुल कुर्सी पढ़ ले उसे जन्नत में दाख़िल होने से कोई चीज़ मानेअ़ नहीं। सिवाए मौत के (या'नी इन्तिक़ाल के बा'द जन्नत में दाख़िल हो) क्यूंकि बिग़ैर मौत के जन्नत में दाख़िला मुमकिन नहीं। (مدارج النبوت)

﴿4﴾ رَبِّ اَعِنِّیْ عَلٰی ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ ۝

(ابو داؤد شریف، ابواب صلوۃ السفر، باب مایقول الرجل اذا سلم، رقم الحدیث، الجزء دار احیاء بیروت)

तर्जमा :- ऐ मेरे परवरदगार तू अपने ज़िक्रो शुक्र और हुस्ने इबादत पर मेरी मदद फ़रमा।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! इमाम अह़मद, अबू दावूद और निसाई रिवायत करते हैं कि मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरा हाथ पकड़ कर इरशाद फ़रमाया : ऐ मुआ़ज़ ! मैं तुझे मह़बूब रखता हूं। मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं भी हुज़ूर को मह़बूब रखता हूं। तो इरशाद फ़रमाया : तू हर नमाज़ के बा'द इसे कह लेना (رَبِّ اَعِنِّیْ ... اِلٰخ ۝) न छोड़ना। (ब ह़वाला बहारे शरीअ़त)

www.dawateislami.net

हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि येह ह़दीस उ़लमा के नज़्दीक मा'रूफ़ है और (وَاللّٰہُ اِنِّیْ لَاُحِبُّكَ) के साथ मुसलसल है और येह फ़क़ीर (या'नी अ़ल्लामा अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) भी उ़लमा के त़रीक़े पर इस की बरकत से मुशर्रफ़ होता है। (مدارج النبوّت)

﴾5﴿ اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْہِ ○

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ ○

(مدارج النبوّت)

तर्जमा :- मैं बख़्शिश चाहता हूं उस ज़ाते मुक़द्दस से जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। वोह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला और कारख़ानए आ़लम क़ाइम रखने वाला है और मैं उस की त़रफ़ रुजूअ़ करता हूं। या इलाही ! तू सलाम है और तुझ ही से सलामती है। ऐ बुज़ुर्गी व इ़ज़्ज़त वाले ! तू बरकत वाला है।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि नमाज़ के बा'द के अज़्कार में पहली दुआ़ इस्तिग़्फ़ार है। जैसे हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तीन मरतबा इन लफ़्ज़ों से पढ़ते : (اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ الَّذِیْ الخ)

और ह़ज़रते सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब नमाज़ से फ़ारिग़ होते या'नी सलाम कहते तो तीन बार इस्तिग़्फ़ार करते और दुआ़ मांगते।

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ ○

इस दुआ़ में जो इस्तिग़्फ़ार तह़रीर किया गया है इस की फ़ज़ीलत ह़दीस शरीफ़ में यूं भी बयान फ़रमाई गई है कि जो शख़्स बिस्तर पर लेटते वक़्त तीन बार इस्तिग़्फ़ार पढ़े तो उस के गुनाह अगर्चे दरया के झाग, दरख़्तों के पत्ते, आ़लिज (एक सह़रा का नाम है) की रैत या ज़माने के बराबर (या'नी दिनों के) हों बख़्श दिये जाएंगे।

www.dawateislami.net

नमाज़े फ़ज्र और मग़रिब के बा'द की दुआ

﴿1﴾ اَللّٰھُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ ٥

तर्जमा :- या इलाही मुझे दोज़ख़ की आग से बचा ।

(ابو دائود شریف، کتاب الأدب، باب مایقول اذاأصبح، رقم الحدیث ۵۰۷۹، الجزء الرابع صفحہ نمبر ۴۱۵دار احیاء التراث بیروت. صفحہ نمبر ۵۶۲باب فی العمرۃ مطبوعہ دافغانستان اسلامی امارات)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस दुआ की फ़ज़ीलत में आता है कि जो इसे नमाज़े फ़ज्र व मग़रिब के वक़्त सात मरतबा पढ़ेगा और उस दिन या रात में उस का विसाल हो जाए तो **अल्लाह** तआला उसे जहन्नम की आग से महफ़ूज़ रखेगा । मगर येह दुआ बिग़ैर किसी से बात किये पढ़नी चाहिये ।

अल हदीस :- हज़रते मुस्लिम बिन हारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को ख़ुसूसिय्यत के साथ तल्क़ीन फ़रमाई कि जब तुम मग़रिब की नमाज़ ख़त्म करो तो किसी से बात करने से पहले सात मरतबा येह दुआ पढ़ो (اَللّٰھُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ ٥) तुम ने मग़रिब के बा'द येह दुआ की और उसी रात में तुम को मौत आ गई तो दोज़ख़ से तुम्हारे बचाव का फ़ैसला कर दिया जाएगा ।

(المعجم الکبیر، من اسمہ مسلم، رقم الحدیث ۱۰۵۱، الجزء ۱۹، صفحہ نمبر ۴۳۳، مکتبۃ العلوم والحکم الموصل.)

और येही फ़ज़ीलत बा'द नमाज़े फ़ज्र पढ़ने की तल्क़ीन फ़रमाई ।

गोया अगर इस दुआ को बा'द नमाज़े फ़ज्र भी पढ़ा जाए और उस दिन मौत आ जाए तो पढ़ने वाले के लिये दोज़ख़ से बचाव का फ़ैसला कर दिया जाएगा । سُبْحَانَ اللّٰہ

﴿2﴾ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ ٥

لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ بِیَدِہِ الْخَیْرُ یُحْیِیْ وَیُمِیْتُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ٥

www.dawateislami.net

तर्जमा :- अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह यक्ता है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाहत (तमाम जहानों पर) है। उसी के लिये तमाम ता'रीफ़ें उसी के क़ब्ज़ए क़ुदरत में तमाम ख़ैरो भलाई है। वोही जिलाता और मारता है और वोही (ज़ाते मुक़द्दस) हर चीज़ पर क़ादिर है।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस दुआ़ की फ़ज़ीलत ह़दीस में यूं बयान फ़रमाई गई कि, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मग़रिब और सुब्ह़ (फ़ज्र) की नमाज़ के बा'द बिग़ैर जगह बदले और पाउं मोड़े दस बार येह दुआ़ पढ़े (لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ...الخ) तो उस के लिये हर एक के बदले (या तो हर दुआ़ के बदले या हर कलिमे के बदले وَاللّٰهُ اَعْلَمُ) दस नेकियां लिखी जाएंगी और दस गुनाह मुआ़फ़ किये जाएंगे और दस दरजे बुलन्द किये जाएंगे और येह दुआ़ उस के लिये हर बुराई व शैत़ाने रजीम से ह़िफ़्ज़ (ह़िफ़ाज़त) है और किसी गुनाह को ह़लाल नहीं कि उसे पहुंचे सिवाए शिर्क के और वोह सब से अ़मल में अच्छा है, मगर वोह जो इस से अफ़्ज़ल कहे। (लाज़िमी बात है जो ज़ियादा अ़मल करेगा उस का सवाब भी ज़ियादा होगा)

(तिरमिज़ी :- रावी ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ बह़वाला बहारे शरीअ़त)

नमाज़े चाश्त के बा'द की दुआ़

اَللّٰهُمَّ بِكَ اُحَاوِلُ وَبِكَ اُصَاوِلُ وَبِكَ اُقَاتِلُ ۝ (صحیح ابن حبان)

तर्जमा :- या इलाही मैं तेरी ही मदद से इरादा करता हूं और तेरी ही मदद से दुश्मन पर ह़म्ला करता हूं और तेरी ही मदद से जिहाद में लड़ता हूं।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! चाश्त की नमाज़ पढ़ने के बा'द इस दुआ़ को पढ़े इस के इलावा नमाज़े चाश्त से फ़ारिग़ होने के बा'द येह दुआ़ पढ़े। (اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَتُبْ عَلَیَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الْغَفُوْرُ ۝) एक सौ (100) बार पढ़ना भी मासूर है। (ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की ह़दीस में ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मन्क़ूल है।) (مدارج النبوّت)

www.dawateislami.net

चाश्त की कम अज़ कम दो रक्अ़त और ज़ियादा से ज़ियादा बारह रक्अ़तें हैं और अफ़्ज़ल बारह रक्अ़तें हैं। अहादीस में इस नमाज़ की बड़ी फ़ज़ीलत आई है। एक ह़दीस शरीफ़ में है कि जिस ने चाश्त की बारह रक्अ़तें पढ़ीं **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये जन्नत में सोने का महल बनाएगा। (ترمذی)

नमाज़े चाश्त का वक़्त आफ़्ताब बुलन्द होने से ज़वाल तक है। ज़वाल से पहले पहले येह नमाज़ पढ़ लेना चाहिये और बेहतर येह है कि चौथाई दिन चढ़े नमाज़े चाश्त को पढ़े। (आ़लमगीरी बह़वाला सुन्नी बहिश्ती ज़ेवर)

दो तरवीहा के दरमियान पढ़ने की दुआ़

سُبْحَانَ ذِی الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ

سُبْحَانَ ذِی الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ وَالْهَيْبَةِ وَالْقُدْرَةِ وَالْكِبْرِيَآءِ وَالْجَبَرُوْتِ

سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْحَيِّ الَّذِیْ لَا يَنَامُ وَلَا يَمُوْتُ سُبُّوْحٌ

قُدُّوْسٌ رَّبُّنَا وَرَبُّ الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوْحِ ط

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ نَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ نَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وَنَعُوْذُبِكَ مِنَ النَّارِ ○

(فتاوٰی شامی، کتاب الصلوۃ، باب الوتر والنوافل، الجزء الثانی صفحہ نمبر ۹۷ مطبوعہ مکتبہ امدادیہ ملتان۔)

तर्जमा :- पाक है मुल्क व मलकूत वाला। पाक है इ़ज़्ज़त व बुज़ुर्गी वाला। क़ुदरत व बड़ाई वाला। पाक है बादशाहे ह़क़ीक़ी जो ज़िन्दा है और मरता नहीं है। पाक मुक़द्दस है फ़िरिश्तों और रूह़ का मालिक। **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं। हम **अल्लाह** से मग़फ़िरत चाहते हैं। (ऐ **अल्लाह**) हम तुझ से जन्नत का सुवाल करते हैं जहन्नम से तेरी पनाह मांगते हैं।

अज़ान और इक़ामत के दरमियान वक़्फ़े में पढ़ने की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ○

तर्जमा :- इलाही मैं तुझ से आ़फ़िय्यत मांगता हूं दुन्या व आख़िरत की।

www.dawateislami.net

अल हदीस :- नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि अज़ान और इक़ामत के दरमियान वक़्फ़े की दुआ रद नहीं की जाती। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने बारगाहे मुस्तफ़वी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इस वक़्फ़े में क्या दुआ मांगा करें ? फ़रमाया (या'नी मुतज़क्किरा बाला दुआ ता'लीम फ़रमाई)

(ترمذی شریف، احادیث شتّٰی، باب فی العفو والعافیۃ، رقم الحدیث ۳۶۰۵، الجزء الخامس صفحہ نمبر ۳۴۲ دار الفکر بیروت.)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :-

اَلدُّعَاءُ لَا يُرَدُّ بَيْنَ الْاَذَانِ وَالْاِقَامَةِ ○

तर्जमा :- अज़ान और इक़ामत के दरमियान दुआ रद नहीं की जाती।

(ترمذی شریف، باب الصلوٰۃ باب ماجاء فی ان دعاء لا یرد، رقم الحدیث ۲۱۲، الجزء الاول صفحہ نمبر ۲۵۴ دار الفکر بیروت.)

अंगूठे चूमते वक़्त की दुआ

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه

قُرَّةُ عَيْنِيْ بِكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه

اَللّٰهُمَّ مَتِّعْنِيْ بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِ

तर्जमा :- ऐ **अल्लाह** के रसूल (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! आप पर **अल्लाह** तआला रहमते कामिला नाज़िल फ़रमाए। या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप मेरी आंखों की ठन्डक हैं। इलाही मुझे सुनने और देखने (की कुव्वत से) फ़ाएदा उठाने वाला कर।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब मुअज़्ज़िन अज़ान में पहली मरतबा اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه कहे तो सुनने वाला दोनों अंगूठे चूम कर दोनों आंखों पर रखे और इन अल्फ़ाज़ में दुरूद पढ़े या'नी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه फिर जब मुअज़्ज़िन दोबारा कहे : اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه तो दोबारा अंगूठे चूम कर आंखों पर रखे और येह कहे :

www.dawateislami.net

قُرَّةُ عَیۡنِیۡ بِكَ یَارَسُوۡلَ اللہِ اَللّٰھُمَّ مَتِّعۡنِیۡ بِالسَّمۡعِ وَالۡبَصَرِ

फ़ाएदा :- इस अ़मल पर मुदावमत करने से اِنۡ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कभी अन्धा न होगा और ज़ो'फ़े बसर अगर हुई तो दूर हो जाएगी।

(بشیر القاری شرح صحیح البخاری)

क़ुरआन पढ़ते वक़्त की दुआ़

اَعُوۡذُ بِاللہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ

तर्जमा :- मैं पनाह मांगता हूं **अल्लाह** की, शैतान मर्दूद से।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

فَاِذَا قَرَاۡتَ الۡقُرۡاٰنَ فَاسۡتَعِذۡ بِاللہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ۝

(قرآن مجید،سورۃ النحل آیۃ نمبر ۹۸،پارہ نمبر ۱۴)

तर्जमा :- तो जब तुम क़ुरआन पढ़ो तो **अल्लाह** की पनाह मांगो, शैतान मर्दूद से।

जब क़ुरआने पाक की तिलावत की जाए तो मज़्कूरए बाला तअ़व्वुज़ पढ़ा जाए कि इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ के नज़्दीक तअ़व्वुज़ के येही अल्फ़ाज़ होने चाहिये।

(تفسیر نعیمی،بحث اعوذباللہ،الجزء الاول صفحہ نمبر ۱۴،مطبوعہ مکتبہ نعیمی کتب خانہ گجرات)

अलबत्ता दूसरे अल्फ़ाज़ के साथ भी इस्तिआ़ज़ा जाइज़ है।

ख़त्मे क़ुरआन शरीफ़ की दुआ़

اَللّٰھُمَّ اٰنِسۡ وَحۡشَتِیۡ فِیۡ قَبۡرِیۡ اَللّٰھُمَّ ارۡحَمۡنِیۡ بِالۡقُرۡاٰنِ الۡعَظِیۡمِ وَاجۡعَلۡهُ لِیۡ اِمَامًا وَّنُوۡرًا وَّھُدًی وَّرَحۡمَۃً ط اَللّٰھُمَّ ذَکِّرۡنِیۡ مِنۡهُ مَانَسِیۡتُ وَعَلِّمۡنِیۡ مِنۡهُ مَاجَھِلۡتُ وَارۡزُقۡنِیۡ تِلَاوَتَهٗ اٰنَآءَ اللَّیۡلِ وَاَطۡرَافَ النَّھَارِ وَاجۡعَلۡهُ حُجَّۃً یَّا رَبَّ الۡعَالَمِیۡنَ

(الجامع الصغیر للسیوطی، الحدیث: ۱۵۷۱، ص ۱۰۴، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

तर्जमा :- इलाही मेरी क़ब्र में मेरी परेशानी को दूर फ़रमा और क़ुरआने अ़ज़ीम के वसीले से मुझ पर रह़्म फ़रमा और क़ुरआन को मेरे लिये पेश्वा और

www.dawateislami.net

बाइसे नूर और सबबे हिदायत बना और क़ुरआन में से जो कुछ मैं भूल गया हूं याद दिला और जो कुछ क़ुरआन में से मैं नहीं जानता वोह सिखला दे और रात दिन मुझे इस की तिलावत नसीब कर और (क़ियामत के दिन) इस को मेरे लिये दलील बना। ऐ आ़लम के परवरिश करने वाले ! मेरी दुआ़ क़बूल फ़रमा।

हर सूरत की इब्तिदा से पहले पढ़ने की दुआ़

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! हर सूरत की तिलावत के वक़्त بِسْمِ اللّٰهِ शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है सिवाए सूरए बराअत (सूरए तौबा) के अलबत्ता अगर तिलावत की इब्तिदा ही सूरए बराअत से की है तो अब اَعُوْذُ بِاللّٰهِ के बा'द بِسْمِ اللّٰهِ पढ़ सकता है मगर वस्ल नहीं करे या'नी بِسْمِ اللّٰهِ पढ़ने के बा'द सांस तोड़ दे फिर सूरए बराअत की तिलावत करे। वस्ल की सूरत में بِسْمِ اللّٰهِ शरीफ़ जो आयते रह़मत है उस का सूरए बराअत की आयत से जो आयते ग़ज़ब है वस्ल हो जाएगा जो जाइज़ नहीं।

शबे क़द्र की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّیْ

तर्जमा :- इलाही तू बहुत मुआ़फ़ फ़रमाने वाला है। मुआ़फ़ करने को पसन्द फ़रमाता है पस मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दे।

(ترمذی شریف، کتاب الدعوات،بابٌ،رقم الحدیث ۳۵۲۴ ، الجزء الخامس صفحه نمبر ۳۰۶ دار الفکر بیروت.)

दुआ़ की क़बूलिय्यत पर शुक्र करने की दुआ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ بِعِزَّتِهٖ وَجَلَالِهٖ تَتِمُّ الصّٰلِحٰتُ ○

तर्जमा :- तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह तआ़ला के लिये जिस के ग़लबे व बुज़ुर्गी के सबब अच्छे काम पूरे हो जाते हैं।

(المستدرک علی الحاکم، کتاب الدعاء و التکبیر، الخ)

www.dawateislami.net

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब कोई इस्लामी भाई येह मह़सूस करे कि मेरी दुआ़ क़बूल हो गई जैसे बीमार अच्छा हो गया। या सफ़र से ख़ैरो आ़फ़िय्यत से लौट आया इसी त़रह़ कोई दूसरी ह़ाजत पूरी हो जाए तो **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र मज़्कूरए बाला अल्फ़ाज़ में करे।

कोई गुनाह कर बैठे तो सच्चे दिल से तौबा करते वक़्त की दुआ़

اَللّٰھُمَّ مَغْفِرَتُکَ اَوْسَعُ مِنْ ذُنُوْبِیْ وَرَحْمَتُکَ اَرْجٰی عِنْدِیْ مِنْ عَمَلِیْ

(المستدرک علی الحاکم، کتاب الدعاء والتکبیر،)

तर्जमा :- इलाही तेरा अ़फ़्वो दर गुज़र मेरे गुनाहों से बे ह़द व ह़िसाब बढ़ा हुवा है और मुझे अपने अ़मल के बजाए तेरी रह़मत ही से बहुत उम्मीद है।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों से ह़त्तल मक़दूर बचते रहना चाहिये कि गुनाहों की बीमारी बहुत ही ख़त़रनाक है, अगर ब तक़ाज़ए बशरिय्यत कोई गुनाह हो जाए तो उस की तलाफ़ी करे अगर हुक़ूक़ुल इ़बाद में से है तो उसे मुआ़फ़ कराए और ख़ुलूस के साथ बारगाहे ख़ुदावन्दी में तौबा करे और मज़्कूरए बाला दुआ़ पढ़े।

दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़

कसरत के साथ दुरूदो सलाम के नूरानी गुलदस्ते बारगाहे मुस्त़फ़वी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में पेश करना। (کتب عامه)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुशर्रफ़ होना इस से बड़ी मे'राज हमारे लिये और क्या हो सकती है ! लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम दुरूदो सलाम के नूरानी गजरे बारगाहे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में पेश करते रहें कि दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये येह एक बहुत अनमोल अ़मल है लेकिन इस बात

www.dawateislami.net

को भी न भूलें कि जिस ज़ाते मुक़द्दसा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम भेजें कभी भी उन की इताअ़त व पैरवी से मुन्ह़रिफ़ न हों या'नी अपनी ख़्वाहिशाते नफ़्सानी को फ़ना कर दें ताकि बक़ा ह़ासिल हो। इस मौक़अ़ पर सूफ़ियाए किराम के अक़्वाल में एक क़ौल अ़र्ज़ करता हूं। फ़रमाते हैं :

ऐ अ़ज़ीज़ : जब तू दुन्या से निकल कर क़ब्र में जाएगा तो तुझे दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم होगा। फिर तू दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का आरज़ू मन्द हो कर येह नहीं सोचता कि तू दुन्या में रह कर अगर दुन्या से निकल जाए (या'नी ख़िलाफ़े शरअ़ काम) तो तुझे दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم होगा।

बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में दुआ़ है कि तमाम इस्लामी भाइयों को दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दौलते सर्मदी अ़त़ा हो। आमीन

﴿یا رب العٰلمین بجاہ سیّد المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ و سلّم﴾

खाना सामने आए उस वक़्त की दुआ़

اَللّٰھُمَّ بَارِكْ لَنَا فِیْ مَا رَزَقْتَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ بِسْمِ اللّٰہِ ۝

तर्जमा :- या इलाही तू ने जो रिज़्क़ हमें अ़त़ा फ़रमाया है इस में हमारे लिये बरकत फ़रमा और हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा। **अल्लाह** के नाम से इब्तिदा करता हूं। (شمائل ترمذی شریف)

खाना खाने से पहले की दुआ़

﴿1﴾ بِسْمِ اللّٰہِ وَبِاللّٰہِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِہٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ یَا حَیُّ یَا قَیُّوْمُ

तर्जमा :- **अल्लाह** तआ़ला के नाम से कि जिस की बरकत से ज़मीनो आस्मान की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती। ऐ हमेशा ज़िन्दा (और) ऐ क़ाइम रहने वाले ! (दैलमी रावी ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ)

www.dawateislami.net

﴾2﴿ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

तर्जमा :- **अल्लाह** के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़्म वाला है।

(बुख़ारी, रावी ह़ज़रते अ़म्र बिन अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ)

﴾3﴿ بِسۡمِ اللّٰہِ وَعَلٰی بَرَکَۃِ اللّٰہِ ٥

तर्जमा :- **अल्लाह** तआ़ला के नाम से (खाता हूं) और **अल्लाह** की बरकत पर (ह़ाकिम, रावी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! खाना खाने से पहले इन दुआ़ओं में से कोई एक दुआ़ पढ़ लेना काफ़ी है। अब इन दुआ़ओं के बारे में एक अलग अलग मुख़्तसर बयान किया जाता है। पहली मुतज़क्किरा दुआ़ को पढ़ने की ह़दीस में बड़ी फ़ज़ीलत आई है।

अल ह़दीस :- दैलमी ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब खाए पिये तो येह कह ले (بِسۡمِ اللّٰہِ الَّذِی الخ) फिर उस (या'नी ग़िज़ा) से कोई बीमारी न होगी अगर्चे उस (ग़िज़ा चाहे खाने की हो या पीने की) में ज़हर हो।

अल ह़दीस :- इब्ने माजा ने अस्मा बिन्ते यज़ीद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) से रिवायत की है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में खाना ह़ाज़िर किया गया। हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने हम पर पेश फ़रमाया : हम ने कहा : हमें ह़ाजत नहीं है। फ़रमाया : भूक और झूट दोनों चीज़ों को इकठ्ठा न करो। (या'नी अगर भूक हो तो खा ले) वरना बरकत की दुआ़ करे येह कहना : "भूक नहीं" भूक और झूट को जम्अ़ करना है। सरासर नुक़्सान देह है। इसी त़रह़ जब खाना खाने को पूछा जाता है तो जवाब में بِسۡمِ اللّٰہِ करो वग़ैरा कहते हैं येह सख़्त ममनूअ़ है। इस वक़्त अगर खाना न चाहे तो बरकत की दुआ़ करे इसी त़रह़ बा'ज़ लोगों की आ़दत होती है कि जब उन्हें खाना खाने के लिये कहा जाता है तो भूके होने के बा वुजूद कह देते हैं कि हमें भूक नहीं है या खा कर आए

www.dawateislami.net

हैं लिहाज़ा याद रहे कि भूक व ख़्वाहिश के बा वुजूद येह बात करना झूट है और इस से दुन्या व आख़िरत का नुक़्सान है। (या'नी खाने से भी महरूम रहा और झूट बोल कर गुनाहगार हुवा)

इसी त़रह़ आज कल हम ग़ैरों की तक़्लीद में खड़े हो कर खाना खाते हैं। इस से मुसलमानों को इजतिनाब करना चाहिये। जब खड़े हो कर खाएंगे तो जूते कैसे उतारेंगे और हमारे पाउं ह़दीस के मुत़ाबिक़ राह़त कैसे पाएंगे ? गोया हम जूते न उतार कर अपने पाउं को राह़त देना नहीं चाहते। (फ़ज़ीलते दुआ़)

ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास कोई शख़्स ज़हर लाया और कहा अगर आप इस ज़हर को पी कर सह़ीह़ सलामत बाक़ी रहे तो हम जान लेंगे कि इस्लाम सच्चा दीन है आप ने بِسۡمِ اللّٰہِ पढ़ कर वोह ज़हर पी लिया और **अल्लाह** के फ़ज़्ल से कुछ असर न हुवा वोह शख़्स येह देख कर इस्लाम ले आया।

(تفسیر نعیمی ،الجزء الاول،بحث بسم اللّٰہ کے فوائد،صفحہ نمبر ۵۳مطبوعہ نعیمی کتب خانہ گجرات.)

अगर पहली दुआ़ याद न हो तो दूसरी दुआ़ पढ़ ले कि इस में कोई ह़रज नहीं है और बिलाशुबा सुन्नत अदा हो जाएगी। بِسۡمِ اللّٰہِ शरीफ़ के बड़े फ़ज़ाइल हैं। यहां सिर्फ़ एक वाक़िआ़ बयान किया जाता है।

बादशाहे रूम हरक़िल ने ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ख़त़ लिखा कि मुझे दर्दे सर की बहुत शिकायत है। कुछ इलाज कीजिये। आप ने उस के पास एक टोपी भेज दी जब बादशाह टोपी ओढ़ता तो दर्द जाता रहता था और जब उतार देता तो दर्द शुरूअ़ हो जाता उस को सख़्त तअ़ज्जुब हुवा। उस ने टोपी को खुलवाया तो उस में एक पर्चा निकला जिस पर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ लिखा था।

(تفسیر نعیمی ،الجزء الاول،بحث بسم اللّٰہ کے فوائد،صفحہ نمبر ۵۳مطبوعہ نعیمی کتب خانہ گجرات.)

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला की रह़मत से उम्मीद है कि जो खाना खाने से पहले بِسْمِ اللہ शरीफ़ पढ़े तो वोह दर्दे शिकम से मह़फ़ूज़ रहेगा।

फ़ज़ीलते दुआ़ नम्बर 3 :- एक मरतबा नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह ह़ज़राते शैख़ैन (या'नी ह़ज़रते अबू बक्र और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) एक अन्सारी के घर तशरीफ़ ले गए। इस पर उन अन्सारी (जो सह़ाबिये रसूल थे) ने आप की मेज़बानी का शरफ़ ह़ासिल किया और तरो ताज़ा छुवारे और गोश्त और ठन्डे व मीठे पानी से ख़ूब ख़ातिरो मदारत की। जब खुर्दो नोश से फ़ारिग़ हुवे तो हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से फ़रमाया कि क़सम है उस की जिस के हाथ में मेरी जान है क़ियामत के दिन इस ने'मत के बारे में सुवाल होगा। (صحیح مسلم شریف)

येह बात सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को दुश्वार मा'लूम हुई तो हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया जब तुम्हें ऐसी चीज़ मिले और तुम खाना शुरूअ़ करो तो ''بِسْمِ اللہِ وَعَلٰی بَرَکَۃِ اللہ'' कहो और जब सैर हो जाओ तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ ھُوَ اَشْبَعَنَا وَاَرْوَانَا وَاَنْعَمَ عَلَیْنَا وَاَفْضَلَ○ कहो बेशक येह कहना इस का (या'नी जो ग़िज़ा खाई) बदला है।

पहला लुक़्मा खाते वक़्त की दुआ़

یَا وَاسِعَ الْمَغْفِرَۃِ (شمائل ترمذی)

तर्जमा :- ऐ बहुत बख़्शने वाले (अपनी रह़मत से मेरी भी बख़्शिश फ़रमा)

हर लुक़्मा खाते वक़्त की दुआ़

یَا وَاجِدُ (حصن حصین)

तर्जमा :- ऐ बहुत बड़े ग़नी (बिलाशुबा मख़्लूक़ मोह़ताज है और ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ ग़नी है)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह तआ़ला के इस सिफ़ाती नाम को हर लुक़्मे के खाते वक़्त पढ़ लेना दिल में नूर पैदा करना है। **अल्लाह** तआ़ला हमारे दिलों को अपनी मा'रिफ़त से मुनव्वर फ़रमाए। (حصن حصین)

www.dawateislami.net

अक्सर ऐसा होता है कि खाना खाने के दौरान हमारा कोई अ़ज़ीज़ रिश्तेदार आ जाता है तो हम उसे ह़स्बे रवाज खाने की दा'वत देते हैं। क्यूंकि अगर खाने का न पूछा जाए तो त़ा'न किया जाता है कि फ़ुलां के घर गया और उन्हों ने खाने को पूछा तक नहीं। ह़ालांकि ऐसा न होना चाहिये। हो सकता है उस के पास वोही खाना हो और आप के शरीक कर लेने पर वोह भूका रह जाए और भूका रहने की वज्ह से वोह अपना काम सह़ीह़ त़ौर पर अन्जाम न दे सके।

अगर खाना खाने वाला दूसरे को खाने का पूछे तो मह़ज़ नुमाइश के त़ौर पर न पूछे कि दिल में खिलाने की आरज़ू न हो और ज़बान से खिलाने का इज़्हार करे। येह ज़ाहिरो बात़िन में तज़ाद है। इस से बचे और इस त़रह़ पूछने पर वोह खाने बैठ गया तो खाना भी खिलाया और सवाब से भी मह़रूम रह गया। लिहाज़ा जब दा'वते त़आ़म दे तो ख़ुलूस से दे। इस त़रह़ बा'ज़ लोगों में आ़दत है कि जब उन्हें खाने के लिये पूछा जाता है तो वोह जवाब में بِسۡمِ اللّٰہِ करो वग़ैरा कहते हैं। येह सख़्त ममनूअ़ है। उस वक़्त अगर खाना न चाहता हो तो बरकत की दुआ़ करे इसी त़रह़ बा'ज़ लोगों की आ़दत होती है कि उन को खाने के लिये कहा जाता है तो भूके होने के बा वुजूद कह देते हैं : हमें भूक नहीं है या खा कर आया हूं। लिहाज़ा याद रहे कि भूक व ख़्वाहिश के बा वुजूद येह बात करना झूट है और इस से दुन्या व आख़िरत का नुक़्सान है (या'नी खाने से मह़रूम रहा और झूट बोल कर गुनाहगार हुवा)

खाने के बा'द की दुआ़

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ الَّذِیۡۤ اَطۡعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مِنَ الۡمُسۡلِمِیۡنَ ؀ ﴿1﴾

तर्जमा :- **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र है जिस ने हमें खिलाया पिलाया और मुसलमानों में से बनाया।

(ابو داؤد شریف، کتاب الاطعمه، باب مایقول الرجل اذاطعم، رقم الحدیث ۳۸۴۹

، الجزء الثالث صفحه نمبر ۵۱۳ داراحیاء)

www.dawateislami.net

﴾2﴿ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هُوَاَشْبَعَنَا وَاَرْوَانَا وَاَنْعَمَ عَلَيْنَا وَاَفْضَلَ○

तर्जमा :-अल्लाह तआला का शुक्र है जिस ने हमें सैर और सैराब किया और हम पर इन्आमो फ़ज़्ल किया। (हाकिम, रावी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मदारिजुन्नुबुव्वह में फ़रमाते हैं कि खाने के बा'द येह दुआ़ (या'नी पहली मुतज़क्किरा दुआ़) पढ़ ली जाए काफ़ी है और दूसरी दुआ़ के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीस में आता है कि जब तुम सैर हो जाओ तो (दूसरी मुतज़क्किरा दुआ़) कहो बेशक येह कहना उस का (या'नी जो गिज़ा खाई) बदला है। (हाकिम)

दा'वत खाने के बा'द की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اَطْعِمْ مَنْ اَطْعَمَنِیْ وَاسْقِ مَنْ سَقَانِیْ

तर्जमा :- या इलाही उस को खिला जिस ने मुझे खिलाया और उस को पिला जिस ने मुझे पिलाया।

(مسلم شریف، کتاب الأشربه،باب اکرام الضیف الخ،رقم الحدیث۲۰۵۵،
صفحه نمبر۱۱۳۷ دارابن حزم بیروت.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर हम अपने किसी मुसलमान भाई के घर दा'वत में जाएं तो खाना खाने के बा'द **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द करें और फिर अपने मुसलमान भाई के लिये दुआ़ करें जिस का त़रीक़ा इस दुआ़ में हमें ता'लीम फ़रमाया गया है।

अल ह़दीस :- ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا कहते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जिस ने अपने भाई को पेट भर कर खाना खिलाया और पानी से उस की प्यास बुझाई तो **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत के दिन उस को जहन्नम से सात ख़न्दक़ों के फ़ासिले पर रखेगा और हर दो ख़न्दक़ों के दरमियान पांच सौ साल के सफ़र का फ़ासिला है।

www.dawateislami.net

हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام खाना तनावुल फ़रमाने के बा'द उंगलियों को चाट लिया करते थे इस से पहले कि रूमाल से पोंछते और बा'ज़ रिवायतों में चाटने और बरतन साफ़ करने का हुक्म भी आया है।

(مدارج النبوت،الجزء الاول،باب یازدھم درعبادات وطعام وشراب وغیرہ،صفحہ نمبر ۴۶۲ نوریہ رضویہ پبلشنگ لاھور.)

अल ह़दीस :- इमाम अह़मद व तिरमिज़ी व इब्ने माजा ने नौबशिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया जो खाना खाने के बा'द बरतन को चाट लेगा वोह बरतन उस के लिये इस्तिग़फ़ार करेगा। रुज़ैन की रिवायत येह भी है कि वोह बरतन येह कहता है कि **अल्लाह** तआ़ला तुझ को जहन्नम से आज़ाद करे जिस त़रह़ तू ने मुझ को शैत़ान से नजात दी।

उंगलियों को चाटने और बरतन को उंगलियों से चाटने में ह़िक्मत येह है कि ह़दीस में फ़रमाया गया : तुम्हें मा'लूम नहीं कि खाने के किस ह़िस्से में बरकत है लिहाज़ा हम उंगलियों पर लगे हुवे खाने को या बरतन में बचे हुवे खाने को साफ़ न करें यूंही छोड़ दें तो ऐन मुमकिन है कि खाने के उसी ह़िस्से में बरकत हो और हम उस से मह़रूम रह जाएं।

बा'ज़ रिवायत में है कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पहले बीच की उंगली चाट लेते थे इस के बा'द शहादत की उंगली इस के बा'द अंगूठा चाटते।

अल ह़दीस :- इब्ने माजा ने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब दस्तर ख़्वान चुना जाए तो कोई शख़्स दस्तर ख़्वान से न उठे जब तक दस्तर ख़्वान न उठा लिया जाए।

दस्तर ख़्वान उठाते वक़्त की दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ غَيْرَ مَكْفِيٍّ وَّلَا مُوَدَّعٍ وَّلَا مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبَّنَا ○

तर्जमा :- सब ता'रीफ़ें उ़म्दा बा बरकत ह़म्द **अल्लाह** तआ़ला के लिये है उस पर किफ़ायत हो और न उस को छोड़ा जाए और न उस से बे नियाज़ी हो ऐ हमारे रब (हमारी ह़म्द अपनी बारगाह में क़बूल फ़रमा)

www.dawateislami.net

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! खाने से मुकम्मल तौर पर फ़ारिग़ होने के बा'द दोनों हाथों को गिट्टों तक धोए कि येह सुन्नत है।

(بہار شریعت،الجزء الثالث،حصہ شانزدھم،حظر واباحت کابیان صفحہ نمبر ۱۸ ،مطبوعہ مکتبہ رضویہ آرام باغ کراچی.)

खाने से फ़ारिग़ हो कर हाथों को धोने के बा'द हाथ मुंह और सर का मस्ह़ कर ले या कपड़ा वग़ैरा हो तो हाथों को उस से पोंछ डाले।

अल ह़दीस :- तिरमिज़ी ने ह़ज़रते अ़कराश बिन जुवैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की, इस ह़दीस के आख़िर में आता है कि खाने से फ़ारिग़ होने के बा'द पानी लाया गया। हु़ज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने हाथ धोए और हाथों की तरी से मुंह और कलाइयों और सर पर मस्ह़ किया और फ़रमाया : अ़कराश जिस चीज़ को आग ने छुवा हो (या'नी जो चीज़ आग से पकाई गई हो) उस के खाने के बा'द येह वुज़ू (या'नी हाथ की तरी से मस्ह़ करना) है।

खाने के बा'द हाथ धोते वक़्त की दुआ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ یُطْعِمُ وَلَا یُطْعَمُ مَنَّ عَلَیْنَا فَهَدَانَا وَاَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَكُلَّ بَلَآءٍ اَبْلَانَا اَلْحَمْدُلِلّٰهِ غَیْرَ مُوَدَّعٍ وَّلَا مُكَا فَأٍ وَلَا مَكْفُوْرٍ وَّ لَا مُسْتَغْنًى عَنْهُ ٥ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَطْعَمَ مِنَ الطَّعَامِ وَسَقٰى مِنَ الشَّرَابِ وَكَسٰى مِنَ الْعُرْیِ وَهَدٰى مِنَ الضَّلَالَةِ وَبَصَّرَ مِنَ الْعُمْیِ وَفَضَّلَ عَلٰى كَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِیْلًا ٥ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ٥

(निसाई ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

तर्जमा :- अल्लाह तआ़ला का शुक्र है जो खिलाता है और ख़ुद नहीं खाता हम पर एह़सान किया कि हमें हिदायत दी और हमें खिलाया और हमें पिलाया और अच्छी ने'मत से हमें नवाज़ा। अल्लाह तआ़ला का ऐसा शुक्र है जो न छोड़ा गया है और न बदला दिया गया है और न नाशुक्री की गई है और न उस से बे परवाई की गई है। तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह तआ़ला के

www.dawateislami.net

लिये जिस ने खाने से पेट भरा और पीने से प्यास बुझाई और बरहंगी में कपड़ा पहनाया और गुमराही से हिदायत दी और अन्धे से बीना (बसारत वाला) किया और बहुत सी मख़्लूक़ पर फ़ज़ीलत दी। तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह तआ़ला के लिये जो तमाम जहानों का पालने वाला है।

खाना खाने से क़ब्ल بِسۡمِ اللّٰہِ भूल जाए तो क्या दुआ़ पढ़े ?

بِسۡمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ

(ابو دائود شریف، کتاب الاطعمة،باب التسمیة علی الطعام،رقم الحدیث ۳۷۶۷ الجزء الثالث صفحه نمبر ۴۸۷ دار احیاء)

तर्जमा :- अल्लाह तआ़ला के नाम से उस के पहले और उस के आख़िर।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीस से अन्दाज़ा लगाइये कि खाने से पहले अगर "بِسۡمِ اللّٰہِ" शरीफ़ भूल जाए तो ताकीद की गई कि जब याद आए तो इस त़रह़ दुआ़ पढ़ ले क्यूंकि खाने से पहले "بِسۡمِ اللّٰہِ" न पढ़ने से शैत़ान भी खाने में शामिल हो जाता है।

अल ह़दीस :- अबू दावूद ने ह़ज़रते उमय्या बिन मह़शी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की, कहते हैं : एक शख़्स बिग़ैर "بِسۡمِ اللّٰہِ" पढ़े खाना खा रहा था। जब खा चुका सिर्फ़ एक निवाला बाक़ी रह गया तो येह लुक़्मा उठाया और कहा "بِسۡمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ" रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तबस्सुम फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया कि शैत़ान इस के साथ खा रहा था जब इस ने अल्लाह का नाम ज़िक्र किया तो जो कुछ उस (शैत़ान) के पेट में था उगल दिया। (उगल देने के येह मा'ना भी हो सकते हैं कि بِسۡمِ اللّٰہِ कहने से खाने की जो बरकत चली गई थी वापस आ गई)

(بہار شریعت،الجزء الثالث،حصه شانزدهم،حظر و اباحت کابیان صفحه نمبر ۵ ،مطبوعه مکتبه رضویه آرام باغ کراچی.)

www.dawateislami.net

मरीज़ के साथ खाते वक़्त की दुआ

بِسۡمِ اللّٰهِ ثِقَةً بِاللّٰهِ وَتَوَكُّلًا عَلَيۡهِ ○

तर्जमा :- **अल्लाह** तआ़ला के नाम से उस पर ए'तिमाद और भरोसा करते हुवे (खाता हूं) (अबू दावूद :- रावी ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ लोगों को ऐसी बीमारी हो जाती है जिस से लोग घिन करते हैं। मसलन कोढ़ वग़ैरा ऐसे मरीज़ के साथ जब खाना खाए तो इस दुआ़ को पढ़ लें। मगर कमज़ोर ईमान वाला ऐसे मरीज़ के साथ खाने से परहेज़ करे। क्यूंकि अगर उस को भी येह मरज़ लाह़िक़ हो गया तो येही ख़याल करेगा कि अगर इस मरीज़ के साथ न खाता तो येह मरज़ न होता। लिहाज़ा येह दुआ़ इस बात का रद करती है कि बीमारी उड़ कर एक दूसरे को नहीं लगती बल्कि येह सब कुछ **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से है। क्यूंकि वोही मुअस्सिरे ह़क़ीक़ी है और कामिल व अक्मल मोमिन उसी की ज़ाते अक़्दस पर भरोसा करते हुवे तमाम छूत छात को पसे पुश्त डाल देता है।

पानी पीते वक़्त की दुआ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

(तिरमिज़ी :- रावी ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا)

पानी पीने के बा'द की दुआ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ

(तिरमिज़ी :- रावी ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर पानी पीने से पहले सिर्फ़ ''بِسۡمِ اللّٰهِ'' और पीने के बा'द اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ भी पढ़ ले तो कोई ह़रज नहीं है।

पानी बैठ कर पिये। खड़े हो कर पानी पीना मकरूहे तन्ज़ीही है। सिवाए दो पानी के या'नी **आबे ज़म ज़म** और **वुज़ू का बचा हुवा पानी**। ह़ज़रते अ़ल्लामा अमजद अ़ली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की तह़क़ीक़ है। (बहारे शरीअ़त) मिरआत शर्ह़े मिश्कात में ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : बुज़ुर्गों का झूटा भी खड़े हो कर पीना चाहिये। (وَاللّٰهُ اَعۡلَمُ)

www.dawateislami.net

अल ह़दीस :- सह़ीह़ मुस्लिम में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि खड़े हो कर हरगिज़ कोई शख़्स पानी न पिये, और जो भूल कर ऐसा कर गुज़रे वोह क़ै कर दे।

(بھار شریعت،الجزء الثالث،حصہ شانزدھم، پانی پینے کابیان صفحہ نمبر ۳۳،مطبوعہ مکتبہ رضویہ آرام باغ کراچی.)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि उन्हों ने एक शख़्स को खड़े हो कर पानी पीते देखा तो इरशाद फ़रमाया इस पानी को क़ै कर दे। उस शख़्स ने कहा कि क़ै किस लिये करूं ? तो ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : क्या तुम्हें अच्छा मा'लूम होता है कि तुम्हारे साथ बिल्ली पानी पिये ? उस शख़्स ने कहा : मैं इसे अच्छा नहीं समझता।

इस पर आप ने इरशाद फ़रमाया : बिलाशुबा तेरे साथ जिस ने पानी पिया वोह बिल्ली से भी बदतर है कि वोह शैत़ान है ! इस वाक़िए को नक़्ल फ़रमाते हुवे ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : लिहाज़ा जो खड़े हो कर पानी पिये उसे मुस्तह़ब है कि सरीह़ व सह़ीह़ ह़दीस के ब मूजिब क़ै कर दे, ख़्वाह भूल के पिये या क़स्दन और ह़दीस में भूलने की तख़्सीस इस बात की त़रफ़ इशारा है कि मोमिन से जिस चीज़ का तर्क अफ़्ज़ल व औला है वोह फ़े'ल उस से क़स्दन कैसे वाक़ेअ़ होगा ?

(مدارج النبوت،الجزء الاول،باب یازدھم درعبادات وطعام وشراب وغیرہ،صفحہ نمبر ۴۲۷ نوریہ رضویہ پبلشنگ لاھور.)

पानी पीने का बरतन सीधे हाथ में ले कर पानी पिये जैसा कि इब्ने माजा शरीफ़ की ह़दीस में आता है।

पानी पीने से पहले पानी को देख ले (या'नी इस लिये कि कोई कीड़ा या कचरा वग़ैरा न हो)

अल ह़दीस :- एक शख़्स ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की, कि बरतन में कभी कूड़ा (या'नी तिन्का वग़ैरा) दिखाई देता है। इरशाद फ़रमाया : उसे गिरा दो। (तिरमिज़ी)

www.dawateislami.net

जब पानी पिये तो بِسۡمِ اللّٰہ पढ़ ले। तीन सांस में पानी पिये और बरतन में सांस न ले।

अल ह़दीस :- मुस्लिम में ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बरतन में सांस लेने से मन्अ़ फ़रमाया है।

पानी चूस कर पिये (या'नी छोटे छोटे घूंट) ऊंट की त़रह़ एक ही सांस में ग़टाग़ट न पिये।

अल ह़दीस :- दैलमी ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि पानी को चूस कर पियो कि येह ख़ुश गवार और ज़ूद हज़्म है और बीमारी से बचाव है। पानी पीने के बा'द **अल्लाह** की ह़म्द बजा लाइये।

سُبۡحٰنَ اللّٰہ कितना अच्छा है वोह घराना और कितनी अच्छी है वोह तक़रीब जहां पर हुज़ूर सय्यिदे दो आ़लम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सुन्नत के मुत़ाबिक़ अह़बाब खाते और पीते हैं। क्यूंकि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बताए हुवे त़रीक़े के मुत़ाबिक़ ख़ुर्दो नोश करना आख़िरत में अज्रो सवाब का बाइ़स है और दुन्या में जिस्मानी इस्तिह़्काम का ज़रीआ़ और बरकत का मूजिब है। इस के साथ साथ मोमिन **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र और उस की ह़म्द करने का ए'ज़ाज़ ह़ासिल करता है।

अल ह़दीस :- ज़िया ने अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की, कि इरशाद फ़रमाया : आदमी के सामने खाने रखे जाते हैं और उठाने से क़ब्ल उस की मग़फ़िरत हो जाती है। इस की सूरत येह है कि जब खाना रखा जाए (या'नी जब खाए) तो (بِسۡمِ اللّٰہ) कहे और जब उठाया जाने लगे (या'नी जब खा चुके) तो اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ कहे।

(بهار شريعت،الجزء الثالث حصه شانزدهم،صفحه نمبر ۹،مطبوعه مكتبه رضويه آرام باغ كراچى.)

www.dawateislami.net

अल ह़दीस :- ज़िया ने अनस رضی اللہ تعالیٰ عنہ से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم ने इरशाद फ़रमाया **अल्लाह** तआ़ला उस बन्दे से राज़ी होता है कि जब लुक़्मा खाता है तो उस पर **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द करता है और पानी पीता है तो उस पर उस की ह़म्द करता है। (बहारे शरीअ़त)

बिलाशुबा **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा व ख़ुशनूदी वोही पाते हैं जो इत्तिबाए़ नबी صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم पर अपनी ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।

दूध पीने के बा'द की दुआ़

اَللّٰھُمَّ بَارِكْ لَنَا فِیْهِ وَزِدْنَا مِنْهُ

(ابو داؤد شریف، کتاب الأشربه،باب مایقول اذاشرب اللبن،رقم الحدیث ٣٧٣٠،الجزء الثالث صفحه نمبر ٤٧٦)

तर्जमा :- या इलाही हमारे लिये इस में बरकत दे और हमें इस से ज़ियादा इनायत फ़रमा।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! दूध एक ऐसी ग़िज़ा है जिस में खाने और पीने दोनों की ज़रूरत मुहय्या करने की तासीर है। इसी लिये बच्चा पैदा हो कर काफ़ी अ़र्सा दूध पर गुज़ारा करता है क्यूंकि खाने पीने की ज़रूरत फ़क़त़ दूध से पूरी हो जाती है। मा'लूम येह हुवा कि दूध ब ज़ाते ख़ुद बरकत वाली ने'मत है। जब बन्दा इस ने'मत को इस्ति'माल करे तो ता'लीम दी गई कि वोह बरकत की दुआ़ मांगे। फिर बात यहीं तक मह़दूद नहीं बल्कि फ़रमाया गया कि और ज़ियादा बरकत की दुआ़ मांगो क्यूंकि जिस ज़ात से तुम बरकत की इल्तिजा कर रहे हो वोह इस बात पर क़ादिर है।

इफ़्त़ार के वक़्त की दुआ़

اَللّٰھُمَّ لَكَ صُمْتُ وَعَلٰی رِزْقِكَ اَفْطَرْتُ ○

तर्जमा :- या इलाही मैं ने तेरी रिज़ा व ख़ुशनूदी के लिये रोज़ा रखा और तेरे दिये हुवे ह़लाल रिज़्क़ से रोज़ा इफ़्त़ार किया।

(ابو داؤد شریف، کتاب الصوم،باب القول عندالفطار،رقم الحدیث ٢٣٥٨،الجزء الثانی صفحه نمبر ٤٤٧ داراحیاء التراث بیروت)

www.dawateislami.net

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस दुआ़ से मा'लूम हुवा कि रोज़ा **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा व ख़ुशनूदी के लिये रखना चाहिये । नुमूदो नुमाइश के लिये रोज़ा रखना ऐसा है कि दिन भर भूका व प्यासा रहा और अज्रो सवाब कुछ न मिला । लेकिन बन्दए मोमिन की येह शान है कि वोह रोज़ा सिर्फ़ और सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा व ख़ुशनूदी के लिये रखता है और जब रोज़ा इफ़्त़ार करता है तो रिज़्क़े ह़लाल से रोज़ा इफ़्त़ार करता है । क्यूंकि वोह जानता है कि ह़राम रिज़्क़ की नुहूसत व ख़बासत बड़ी क़बीह़ व शनीअ़ है । इस मौक़अ़ पर एक वाक़िआ़ बयान किया जाता है । बड़ा ईमान अफ़रोज़ है । **अल्लाह** तआ़ला अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए ।

ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से किसी शख़्स ने अ़र्ज़ की, कि ऐ शैख़ ! इस्मे आ'ज़म के बारे में उ़लमा का बहुत इख़्तिलाफ़ है । आप **अल्लाह** के वली हैं इरशाद फ़रमाइये कि इस्मे आ'ज़म क्या है ? ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इरशाद फ़रमाया कि तू अपने पेट को ह़राम से पाक रख और अपने नफ़्स को बुरी ख़्वाहिशात से मह़फ़ूज़ रख फिर तू जिस नाम से **अल्लाह** तआ़ला को पुकारेगा वोही इस्मे आ'ज़म होगा । (या'नी तेरी दुआ़ **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन की बारगाह में मुस्तजाब होगी)

इफ़्त़ार के बा'द की दुआ़

ذَهَبَ الظَّمَاُ وَ ابْتَلَّتِ الْعُرُوْقُ وَثَبَتَ الْاَجْرُ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ ۝

तर्जमा :- प्यास बुझ गई और रगें तर हो गईं और اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ सवाब भी ज़रूर मिलेगा । (ابو داؤد شریف، کتاب الصوم، باب القول عند الفطار، رقم الحدیث ۲۳۵۷، الجزء الثانی صفحه نمبر ۴۴۷ دار احیاء التراث بیروت ۔)

दा'वत में इफ़्त़ार करते वक़्त की दुआ़

اَفْطَرَ عِنْدَكُمُ الصَّآئِمُوْنَ وَاَكَلَ طَعَامَكُمُ الْاَبْرَارُ وَصَلَّتْ عَلَيْكُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ۝

www.dawateislami.net

तर्जमा :- रोज़ादार तुम्हारे पास इफ़्तार करें नेक लोग तुम्हारा खाना खाएं और फ़िरिश्ते तुम्हारे लिये दुआ़ करें।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! बन्दए मोमिन जब किसी के हां रोज़ा इफ़्तार करे तो येह दुआ़ पढ़े इस दुआ़ में ग़ौर कीजिये कि रोज़ा इफ़्तार करने वाला अपने मेज़बान के लिये दुआ़ कर रहा है कि ऐ मेरे मेज़बान ! जैसे मैं ने तेरे यहां रोज़ा इफ़्तार किया है यूंही दूसरे नेक लोग भी तेरे यहां रोज़ा इफ़्तार करें क्यूंकि इस में तेरा माल ज़ाएअ़ न होगा बल्कि आख़िरत में येह माल जो तू ख़र्च करेगा तेरे लिये बेहतरीन ज़ख़ीरा होगा।

अल ह़दीस :- निसाई व इब्ने ख़ुज़ैमा ज़ैद बिन ख़ालिद رضی اللہ تعالٰی عنہ से रावी हैं कि फ़रमाया : जो रोज़ादार का रोज़ा इफ़्तार कराए या ग़ाज़ी का सामान कर दे उसे भी इतना ही सवाब मिलेगा।

(بہار شریعت، الجزء الاول، حصہ پنجم صفحہ نمبر ۱۳۲ مطبوعہ مکتبہ رضویہ آرام باغ کراچی.)

अल ह़दीस :- हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم ने फ़रमाया : (ऐ खिलाने वाले) तेरा खाना सिर्फ़ नेक ही खाएं। (मुकाशफ़तुल कुलूब)

आख़िर में इफ़्तार करने वाला मेज़बान के लिये दुआ़ करता है कि मैं **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़ करता हूं कि **अल्लाह** तआ़ला के मा'सूम फ़िरिश्ते तेरे लिये दुआ़ए ख़ैर करें। इस दुआ़ से हमें महब्बत व मुवद्दत का सबक़ मिलता है। मगर आज कल हालत कुछ यूं है कि मेज़बान का माल हड़प करने के बा'द इस बात का प्रचार करता फिरता है कि मियां ! फुलां के हां इफ़्तार पार्टी थी किराया ख़र्च कर के उस के वहां गए मगर खाने में कुछ भी न था। बस मा'मूली सा इन्तिज़ाम था इस से तो अच्छा घर ही में रोज़ा खोल लेता !

www.dawateislami.net

आबे ज़म ज़म पीते वक़्त की दुआ

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْۤ اَسْئَلُکَ عِلْمًا نَّافِعًا وَّرِزْقًا وَّاسِعًا وَّعَمَلًا مُّتَقَبَّلًا وَّشِفَآءً مِّنْ کُلِّ دَآءٍ ؕ

तर्जमा :- या इलाही मैं तुझ से इल्मे नाफ़ेअ़ का और रिज़्क़ की कुशादगी का और मक़्बूल अ़मल का और बीमारी से शिफ़ायाबी का सुवाल करता हूं।

(بہار شریعت،الجزء الاول،حصہ ششم صفحہ نمبر ۲۵ مطبوعہ مکتبہ رضویہ آرام باغ کراچی.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا जब आबे ज़म ज़म पीते तो येह दुआ फ़रमाते थे।

ख़ुदा करे हमें ह़ज की सआ़दत नसीब हो और हम आबे ज़म ज़म तक पहुंचें तो ख़ूब सैर हो कर पीने से पहले इस दुआ को पढ़ लें कि येह दुआ बड़ी जामेअ़ है। येह दुआ पढ़ने से पहले بِسْمِ اللّٰہِ पढ़ लें और आबे ज़म ज़म पीने के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ कहें। आबे ज़म ज़म खड़े हो कर क़िब्ला रू हो कर पीना मुस्तह़ब है।

(بہار شریعت،الجزء الاول،حصہ ششم صفحہ نمبر ۲۵ مطبوعہ مکتبہ رضویہ آرام باغ کراچی.)

इस मौक़अ़ पर आप का जो मक़्सद हो वोह दिल में रखिये। क्यूंकि इस पानी की तासीर है कि जिस मक़्सद के लिये पिया जाए वोह मक़्सद **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्ल से पूरा होगा गोया आबे ज़म ज़म ऐसा बा बरकत है कि इस को जिस मक़्सद के लिये भी पिया जाए वोह उसी मक़्सद के लिये है। अगर आज कोई हम से कहे कि तुम जिस मक़्सद से हमारे पास आओगे तो तुम्हारा वोही मक़्सद पूरा होगा तो हमारे येह मक़ासिद होंगे कि हमें कार चाहिये। कोठी चाहिये और सरमाया चाहिये वग़ैरा या'नी दुन्या की त़रफ़ हमारा ध्यान होगा। मगर जो **अल्लाह** तआ़ला के नेक व पाकीज़ा बन्दे होते हैं वोह हर लम्ह़ा आख़िरत की फ़िक्र में रहते हैं चुनान्चे, ऐसा ही एक वाक़िआ़ है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ ने आबे ज़म ज़म पीने का इरादा किया तो क़िब्ला रू हो कर कहा : या इलाही ! हम

www.dawateislami.net

से इब्ने अबू मवाल ने मुह़म्मद बिन मुन्कदिर से और उन्हों ने ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत बयान की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि आबे ज़म ज़म जिस मक़्सद के वासिते़ भी पिया जाए उसी मक़्सद के लिये है। लिहाज़ा मैं आबे ज़म ज़म क़ियामत के दिन की प्यास के लिये पीता हूं और फिर पानी पी लिया। बेशक जो दुन्या में **अल्लाह** तआ़ला से डरता है वोह क़ियामत के दिन मह़फ़ूज़ व मामून होगा।

ह़दीसे क़ुदसी :- मैं अपने बन्दे पर दो डर और दो अम्न जम्अ़ नहीं करता। जो दुन्या में मुझ से बे ख़ौफ़ रहा उसे क़ियामत में डराऊंगा।

(مکاشفۃ القلوب،الباب الثانی فی الخوف من اللّٰہ تعالٰی أیضًا،صفحہ نمبر ۲۱ مطبوعہ دار الکتب العلمیہ بیروت.)

मेज़बान के घर से चलते वक़्त मेहमान की मेज़बान के लिये दुआ़

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيْمَا رَزَقْتَهُمْ وَاغْفِرْ لَهُمْ وَارْحَمْهُمْ ۝

तर्जमा :- इलाही तू जो उन्हें रोज़ी दे उस में बरकत दे और उन्हें बख़्श दे और उन पर रह़्म फ़रमा। (مسلم شریف،کتاب الأشربہ،باب استحباب وضع النوی الخ رقم الحدیث ۲۰۴۲،صفحہ نمبر ۱۱۳۰ دار ابن حزم بیروت.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे आक़ा नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन बुस्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद साह़िब के पास तशरीफ़ लाए तो उन्हों ने खाना और खजूर के ह़ल्वे से नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मेहमान नवाज़ी की। اَللّٰہُ اَکْبَر कितने ख़ुश नसीब मेज़बान हैं कि **अल्लाह** तआ़ला के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मेहमान नवाज़ी से मुशर्रफ़ हुवे ! ह़ुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जब रुख़्सत होने लगे तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन बुस्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिदे गिरामी ने बारगाहे नबवी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में दुआ़ की दरख़्वास्त की तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के लिये दुआ़ फ़रमाई। (या'नी वोह दुआ़ जो लिखी गई है)

www.dawateislami.net

बद हज़्मी के वक़्त की दुआ

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ○ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ○

(قرآن مجید،سورۃ المرسلٰت آیۃ نمبر ۴۳،۴۴،پارہ نمبر ۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- खाओ और पियो रचता हुवा अपने आ'माल का सिला बेशक नेकों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस शख़्स को बद हज़्मी की शिकायत हो वोह इस आयते करीमा को पढ़ कर अपने हाथ पर दम कर के उसे अपने पेट पर फेरे और खाने वग़ैरा पर दम कर के खाना खाया करे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ बद हज़्मी की शिकायत दूर हो जाएगी।

लिबास उतारते वक़्त की दुआ

بِسْمِ اللهِ **तर्जमा :- अल्लाह** तआ़ला के नाम से (कपड़े उतारता हूं)

(इब्ने अबी शैबा बह़वाला ह़िस्ने ह़सीन :- रावी ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़दीस शरीफ़ में इरशाद फ़रमाया गया कि जब कपड़े उतारे तो जिन्नों की आंखों और उस की (या'नी कपड़े उतारने वाले की) बरहंगी के दरमियान पर्दा है कि بِسْمِ اللهِ कहे।

मा'लूम हुवा कि हम अगर बिग़ैर दुआ़ के कपड़े उतारेंगे तो हमारा बर्हना जिस्म जिन्नों की निगाहों में रहेगा और उन से ज़रर पहुंचने का अन्देशा लाह़िक़ हो सकता है। लेकिन जब दुआ़ पढ़ने के बा'द कपड़े उतारे जाएंगे तो दुआ़ की बरकत से हमारे और जिन्नों के दरमियान पर्दा हो जाएगा और वोह हमारे सतर को न देख सकेंगे। येह दुआ़ कपड़े उतारने से क़ब्ल पढ़ें।

सतरे औ़रत नाफ़ के नीचे से घुटनों के नीचे तक है। या'नी इस ह़िस्से का छुपाना फ़र्ज़ है। नाफ़ इस में दाख़िल नहीं।

(दुर्रे मुख़्तार, बह़वाला हमारी नमाज़)

औ़रतों के लिये सारा बदन सतरे औ़रत है या'नी इस का छुपाना फ़र्ज़ है सिवाए चेहरे की टिकली और हथेलियों और पाउं के तल्वों के।

www.dawateislami.net

अब आप अन्दाज़ा लगाइये कि जिस जिन्स का नाम ही औ़रत है (या'नी छुपाने की चीज़) वोह औ़रत आज कल किस त़रह़ अपने आप को उजागर कर रही है और बे ह़याई को मुआ़शरे में फैला रही है। जिस की सारी ज़िम्मेदारी उन के सर परस्तों पर आ़इद होती है इस से येह भी न समझा जाए कि सिर्फ़ सर परस्तों ही की पकड़ होगी और वोह औ़रत जो बे ह़याई का मुजस्समा बनी हुई है छुटकारा ह़ासिल करेगी ऐसा नहीं है। बल्कि बे ह़याई का प्रचार करने वाली औ़रत को भी सज़ा मिलेगी और अगर अपनी क़ुव्वतो त़ाक़त के मुत़ाबिक़ उस औ़रत के सर परस्त ने उसे बे ह़याई से न रोका तो वोह भी क़ाबिले सज़ा होगा।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो औ़रतें लिबास पहन कर भी नंगी ही रहती हैं, दूसरों को रुझाती हैं और ख़ुद भी दूसरों पर माइल होती हैं और बुख़्ती ऊंट (एक क़िस्म का बड़ा ऊंट) की त़रह़ नाज़ से गर्दन टेढ़ी कर के चलती हैं और हरगिज़ जन्नत में दाख़िल न होंगी। (या'नी अगर मुसलमान औ़रत है तो सज़ा पाने से पहले दाख़िले जन्नत न होगी) और न जन्नत की बू पाएगी (बल्कि बे ह़याई के जुर्म की पादाश में दाख़िले जहन्नम कर दी जाएगी) (مسلم شریف، کتب اللباس و الزینة،باب النساء الکاسیات العاریات الخ،رقم الحدیث۲۱۲۸،صفحه نمبر۱۱۷۷ دارابن حزم بیروت.)

फ़ुक़हाए किराम फ़रमाते हैं : औ़रत के सर से निकले हुवे बाल (कंघी करने से जो बाल निकलते हैं) और पाउं के कटे हुवे नाख़ुन भी ग़ैर मर्द न देखे।

(फ़तावा शामी बह़वाला इस्लामी ज़िन्दगी)

इस बात से अन्दाज़ा लगाइये कि औ़रत के लिये पर्दा कितना ज़रूरी है ! सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का इरशाद है :

अपनी औ़रतों को ऐसे कपड़े न पहनाओ जो जिस्म पर इस त़रह़ चुस्त हों कि सारे जिस्म की बनावट नुमायां हो। (अल मबसूत़, बह़वाला

www.dawateislami.net

हमारी नमाज़) लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम अपने मुआ़शरे से बे ह़याई को ख़त्म करें और ईमान का तक़ाज़ा भी येही है।

चुनान्चे, इरशादे ह़बीबे किब्रिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है।

अल ह़दीस :- اَلْحَيَآءُ مِنَ الْاِيْمَانِ○ **तर्जमा :-** ह़या ईमान से है।

(المعجم الأوسط،من اسمه محمد،الجزء الخامس صفحه نمبر ۱۹۳،رقم الحديث ۵۰۵۵،مطبوعه دار الحرمين القاهره.)

दूसरी जगह इरशाद फ़रमाया :

अल ह़दीस :- اَلْحَيَآءُ شُعْبَةٌ مِّنَ الْاِيْمَانِ○ **तर्जमा :-** ह़या ईमान की शाख़ है।

(الصحيح المسلم،كتاب الايمان،باب بيان عدد الايمان الخ رقم الحديث ۵۸،صفحه نمبر ۳۹مطبوعه دارابن حزم بيروت.)

लिबास पहनते वक़्त की दुआ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ كَسَانِىْ هٰذَا الثَّوْبَ وَ رَزَقَنِيْهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِّنِّىْ وَ لَا قُوَّةٍ

(ابو داؤد شريف،كتاب اللباس،باب مايقول اذالبس ثوباجديدًا،رقم الحديث ۴۰۲۳.الجزء الرابع صفحه نمبر ۲۰ داراحياء)

तर्जमा :- तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** तआ़ला के लिये जिस ने मुझ को येह कपड़ा पहनाया और मेरी क़ुव्वतो त़ाक़त के बिग़ैर मुझ को अ़त़ा फ़रमाया।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस दुआ़ में बन्दा कितनी आ़जिज़ी व इन्किसारी का इज़्हार कर रहा है कि दुआ़ पढ़ने वाला परवरदगारे आ़लम की बारगाहे अक़्दस में अ़र्ज़ कर रहा है : या इलाहल आ़लमीन ! जो लिबास मैं ज़ेबे तन कर रहा हूं उसे तू ने बिग़ैर मेरी क़ुव्वत के अ़त़ा फ़रमाया है।

ह़ालांकि मुसलमान मेह़नत व मशक़्क़त की ह़लाल कमाई से कपड़ा ख़रीद कर सिलवाता है। इतनी मुश्किलात के बा वुजूद मोमिने सादिक़ अ़र्ज़ करता है : या इलाही ! येह लिबास तू ने ही अपने फ़ज़्लो करम से अ़त़ा फ़रमाया है क्यूंकि अगर ज़रा सी भी अ़क़्ले सलीम हो तो येह बात सूरज की

www.dawateislami.net

शुआ़ओं से भी ज़ियादा रौशन है कि इन्सान और उस के आ'ज़ाए जवारेह़, अ़क़्लो शुऊ़र सब को अल्लाह तआ़ला ही ने तो तख़्लीक़ किया है। इस को क़ुव्वतो त़ाक़त का सर चश्मा भी अल्लाह तआ़ला ही ने अ़त़ा फ़रमाया है।

तो मा'लूम हुवा कि ह़क़ीक़त में येह अल्लाह तआ़ला ही का फ़ज़्लो करम है कि उस ने हमें ह़लाल कमाई से ख़रीदा हुवा लिबास अ़त़ा फ़रमाया। याद रहे कि ह़राम कमाई से ख़रीदे हुवे लिबास की नुह़ूसत बहुत क़बीह़ है।

अल ह़दीस :- ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, उन्हों ने फ़रमाया कि जो किसी कपड़े को दस दिरहम में ख़रीदे और उस में एक दिरहम भी ह़राम का हो तो जब तक वोह कपड़ा उस आदमी के बदन पर रहेगा अल्लाह तआ़ला उस की नमाज़ को क़बूल नहीं फ़रमाएगा। येह कह कर ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने अपनी दोनों उंगलियां अपने दोनों कानों में डाल कर येह फ़रमाया कि अगर मैं ने इस ह़दीस को हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से न सुना हो तो मेरे कान बहरे हो जाएं। (मिश्कात)

मुतज़क्किरा दुआ़ की फ़ज़ीलत में आता है कि जो इस दुआ़ को पढ़ेगा तो उस के अगले पिछले गुनाह (सग़ीरा) बख़्श दिये जाएंगे। (अबू दावूद)

नया लिबास पहनते वक़्त की दुआ़

﴿1﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ کَسَانِیْ مَآ اُوَارِیْ بِهٖ عَوْرَتِیْ
وَاَتَجَمَّلُ بِهٖ فِیْ حَیَاتِیْ

(ترمذی شریف، کتاب الدعوات، باب، رقم الحدیث ۳۵۷۱، الجزء الخامس صفحہ نمبر ۳۲۸ مطبوعہ دارالفکر بیروت.)

तर्जमा :- तमाम ख़ूबियां अल्लाह तआ़ला के लिये जिस ने मुझे वोह कपड़ा पहनाया जिस से मैं अपना सतर छुपाता हूं और ज़िन्दगी में उस से ज़ीनत करता हूं।

www.dawateislami.net

﴾2﴿ اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ كَسَوْتَنِيْهِ

اَسْاَلُكَ خَيْرَهٗ وَخَيْرَ مَا صُنِعَ لَهٗ وَاَعُوْذُ بِكَ

مِنْ شَرِّهٖ وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَهٗ

तर्जमा :- ऐ **अल्लाह** ! तेरा शुक्र है तू ने मुझे येह कपड़ा पहनाया, मैं तुझ से इस की भलाई और जिस ग़र्ज़ के लिये येह बनाया गया है उस की भलाई मांगता हूं और इस की बुराई और जिस ग़र्ज़ के लिये येह बनाया गया है उस की बुराई से तेरी पनाह त़लब करता हूं।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! इतना लिबास जिस से सतरे औ़रत हो जाए और गर्मी सर्दी की तक्लीफ़ से बचे फ़र्ज़ है और इस से ज़ाइद से ज़ीनत मक़्सूद हो और येह कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने दिया है तो उस की ने'मत का इज़्हार हो येह मुस्तह़ब है। (ردالمختار، بحوالہ بھار شریعت) इतना लिबास का होना जिस से सतरे औ़रत हो सके येह हम पर दीनी तक़ाज़ा है। मा'लूम हुवा कि लिबास दीनी ज़रूरत है कि इस के ज़रीए़ हम अपना सतरे औ़रत छुपा कर फ़र्ज़ पर अ़मल करते हैं और ह़राम से बचते हैं। क्यूंकि बिला उ़ज़्र दूसरों के सामने सतरे औ़रत खोलना ह़राम है। इस के इ़लावा अदाएगिये नमाज़ के लिये अहम ज़रूरत क्यूंकि लिबास मौजूद होते हुवे नंगे बदन नमाज़ नहीं हो सकती और इस के साथ साथ येह इन्सान की ज़ीनत भी है। लेकिन येह बात याद रहे कि उ़म्दा और अच्छा लिबास पहने तो ग़ुरूर और तकब्बुर को दिल में जगह न दे बल्कि मक़्सूद येह हो कि **अल्लाह** तआ़ला ने दिया है तो उस की ने'मत का इज़्हार हो। यहां येह बात भी बयान कर दी जाए तो बेहतर होगा कि जिस त़रह़ हम अपने बदन को लिबासे ज़ाहिरी से आरास्ता करते हैं इसी त़रह़ हमें चाहिये कि हम अपनी रूह़ को लिबासे तक़्वा से आरास्ता करें। مَعَاذَاللّٰه अगर हम ने लिबासे तक़्वा को गुनाहों के सबब तार तार कर

www.dawateislami.net

के रख दिया है तो अब भी वक़्त है कि **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन की बारगाह में ख़ालिस तौबा करें। ताकि वोह लिबासे तक़्वा जो तार तार हो गया है ऐसा रफ़ू हो जाए कि निशान भी बाक़ी न रहे।

लिबास पहनते वक़्त की दुआ़ के उ़नवान में जो दो दुआ़एं लिखी गई हैं उन में से एक का पढ़ लेना काफ़ी है। अगर दोनों पढ़ें तो ख़ूब तर है। पहली दुआ़ की तशरीह़ मुख़्तसर हो चुकी है। दूसरी दुआ़ की तशरीह़ इख़्तिसार के साथ बयान की जाती है। **अल्लाह** तआ़ला हमें ता'लीमाते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़क़ीक़त को समझने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। आमीन

हु़ज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ता'लीम फ़रमाई हुई दूसरी दुआ़ बड़ी जामेअ़ है। इस दुआ़ को पढ़ने वाला बन्दा गोया अपने मा'बूद की बारगाह में यूं अ़र्ज़ करता है कि या इलाही ! जो लिबास मैं ने ज़ेबे तन किया है उसे मेरे लिये भलाई और बाइ़से ख़ैर बना और जिस ग़र्ज़ के लिये बनाया है उस में भी मेरे लिये भलाई फ़रमा या'नी कपड़े में ख़ैर येह है कि आराम व राह़त मयस्सर हो और तक्लीफ़ देह चीज़ से मह़फ़ूज़ रहे। मसलन मौसिमे सर्मा में सर्दी से और मौसिमे गर्मा में सूरज की ह़िद्दत से और जिस ग़र्ज़ के लिये बनाया गया है उस में भी भलाई अ़त़ा हो। कपड़ा बदन छुपाने और ज़ेबो ज़ीनत की निय्यत से जिस में इज़्हारे ने'मत हो पहनने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और अपने फ़ज़्लो करम से निय्यते फ़ासिदा से मह़फ़ूज़ रख और इस के साथ साथ येह इल्तिजा भी की जा रही है कि इस कपड़े के शर से भी बचा या'नी कभी कभार ऐसा भी होता है कि आदमी कपड़े में उलझ कर गिर पड़ता है तो इस परेशानी से मामून फ़रमा और जिस ग़र्ज़ के लिये बनाया गया है उस की बुराई से आ़फ़िय्यत दे या'नी ऐसा न हो कि मैं नफ़्सानी ख़्वाहिशात से मग़्लूब हो कर अपने अन्दर ग़ुरूर व तकब्बुर को बसा लूं। ग़ौर कीजिये कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'लीमात पर अ़मल पैरा होने में हमारे नफ़्सों का कितना तज़्किया है। मगर अफ़्सोस आज हम ने इस के बर ख़िलाफ़ अ़मल कर के अपने दिलों को किस क़दर ज़ंग आलूद कर लिया है।

www.dawateislami.net

आज हमारे दिल ग़ुरूर व तकब्बुर बुग़्ज़ो इनाद नुमूदो नुमाइश से परागन्दा हैं। अगर हम चाहते हैं कि हमारे क़ुलूब हर बुराई से पाको साफ़ हो जाएं, हमारे ज़ाहिरो बातिन में मुवाफ़क़त हो जाए तो इस का वाहिद हल येह ही है कि हम ख़ुलूस के साथ मुत्तबेए रसूल صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बन जाएं।

अल हदीस :– तिरमिज़ी ने हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब क़मीज़ पहनते तो दाहने से शुरूअ़ फ़रमाते।

लिहाज़ा जब भी लिबास पहना जाए तो इब्तिदा दाईं तरफ़ से की जाए। मसलन कुर्ता पहने तो पहले दाहनी आस्तीन में हाथ डाले फिर बाईं आस्तीन में इस के बा'द गर्दन में और शल्वार वग़ैरा पहनते वक़्त पहले दाएं पांचे में पाउं दाख़िल करे फिर बाएं में और शल्वार या पाइजामा वग़ैरा बैठ कर पहने और लिबास उतारते वक़्त इस के बर अ़क्स करे मगर शल्वार या पाइजामा वग़ैरा अब भी बैठ कर उतारेगा। शल्वार वग़ैरा खड़े हो कर न पहने और मर्द इमामा बैठ कर न बांधे क्यूंकि हदीस शरीफ़ में है कि वोह ऐसे मरज़ में गिरिफ़्तार होगा जिस का इलाज नहीं। (सुन्नी बहिश्ती ज़ेवर)

इमामा खड़े हो कर बांधे बैठ कर इमामा न बांधना चाहिये इमामा मस्जिद में बांधे या ख़ारिजे मस्जिद हर सूरत में खड़े हो कर बांधे और खोले तो पेच दर पेच खोले जैसे बांधा था।

दोस्त को नया कपड़ा पहने देखते वक़्त की दुआ

تُبْلِیْ وَیُخْلِفُ اللّٰہُ ○

तर्जमा :– अल्लाह तआ़ला तुझे पहनना और फाड़ना नसीब करे (और) ज़ियादा दे। (अबू दावूद :– रावी हज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

नया इमामा या नई चादर पहनते वक़्त की दुआ

اَللّٰھُمَّ لَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ کَسَوْتَنِیْہِ اَسْئَلُکَ خَیْرَہٗ وَخَیْرَ مَا صُنِعَ لَہٗ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّہٖ وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَہٗ ○

(अबू दावूद, तिरमिज़ी :– रावी हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

www.dawateislami.net

तर्जमा :- या **अल्लाह** तमाम ता'रीफ़ें तेरे ही लिये हैं तू ने ही मुझे (येह चादर या इमामा) पहनाया है और मैं तुझ से इस की भलाई त़लब करता हूं और उस चीज़ की भलाई जिस के लिये येह बनाया गया है और मैं इस के शर से तेरी पनाह मांगता हूं और उस चीज़ के शर से भी जिस के लिये इस को बनाया गया।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला दुआ़ के सिलसिले में ह़दीस समाअ़त फ़रमा लें ताकि इस दुआ़ के पढ़ने की वज़ाह़त हो जाए और इसी तशरीह़ के तह़्त जूते या चप्पल पहनते वक़्त की दुआ़ की भी वज़ाह़त हो जाए।

अल ह़दीस :- عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ نِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ! کَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اِذَا سْتَجَدَّ ثَوْبًا سَمَّاهُ بِاسْمِهٖ عِمَامَةً اَوْ قَمِیْصًا اَوْرِدَ آءً یَقُوْلُ (या'नी दुआ़ पढ़ते जो पहले लिखी जा चुकी है)

तर्जमा :- ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, फ़रमाया : हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब कोई नया कपड़ा पहनते तो उस (कपड़े) का नाम लेते (या'नी) इमामा या क़मीज़ या चादर (वग़ैरा) और फ़रमाते (या'नी दुआ़ पढ़ते) (अबू दावूद, तिरमिज़ी)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते अ़ल्लामा इमाम मुह़िय्युद्दीन अबू ज़करिय्या यह़्या बिन शरफ़ नववी (सिने विलादत सिने 631 हिजरी) رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अपनी तस्नीफ़ रियाज़ुस्सालिह़ीन में मुतज़क्किरा ह़दीसे मुबारक को बाब (مایَقُوْلُ اِذَالَبِسَ ثَوْبًا جَدِیْدًا اَوْنَعْلاً اَوْنَحْوَهٗ) **तर्जमा :-** जब नया कपड़ा या जूता या इस तरह़ की दूसरी चीज़ पहने तो क्या कहे ? के तह़्त तह़रीर फ़रमाया है : लिहाज़ा मा'लूम हुवा कि जो चीज़ें भी पहनने के ज़ुमरे में आती हैं उन को पहनते वक़्त इस दुआ़ को पढ़े अगर्चे नए जूते या चप्पल हों जैसा कि आप ने रियाज़ुस्सालिह़ीन के बाब से अन्दाज़ा लगा लिया होगा।

आख़िर में जूते या चप्पल पहनने के मुतअ़ल्लिक़ चन्द बातें अ़र्ज़ की जाती हैं :

www.dawateislami.net

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब जूता पहने तो पहले दाहने पाउं में पहने और जब उतारे तो पहले बाएं पाउं का उतारे कि दाहना पहनने में पहले हो और उतारने में पीछे। (बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रते जाबिर और हज़रते अबू हुरैरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खड़े हो कर जूता पहनने से मन्अ़ फ़रमाया है। (तिरमिज़ी, इब्ने माजा)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! खड़े हो कर पहनने की मुमानअ़त उन जूतों के मुतअ़ल्लिक़ है जिन को खड़े हो कर पहनने में दिक़्क़त होती हो या'नी तस्मे वाले जूते वरना बिग़ैर तस्मे के जूते जिन को खड़े खड़े पहनने में दिक़्क़त नहीं होती यूंही चप्पल वग़ैरा लिहाज़ा इन को खड़े हो कर पहनने में कोई ह़रज नहीं इसी त़रह़ जूते पहनने से क़ब्ल इन को झाड़ लें ताकि कोई मूज़ी कीड़ा वग़ैरा अगर दाख़िल हो गया हो तो उस पर इत्तिलाअ़ हो जाए और जिस्मानी अज़िय्यत से मह़फ़ूज़गी रहे यूंही जिस वक़्त जूते उठाने की नौबत पेश आए तो उन्हें बाएं हाथ से उठाएं येह तमाम ता'लीमात अह़ादीस से साबित हैं। मज़ीद मा'लूमात के लिये बहारे शरीअ़त का सोलहवां ह़िस्सा देखिये।

सुर्मा डालते वक़्त की दुआ़

اَللّٰھُمَّ مَتِّعْنِیْ بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِ

(ہمارا اسلام، حصہ اول، سبق نمبر ۱۶، صفحہ نمبر ۴۰ مطبوعہ فرید بُک اسٹال اردوبازار لاہور.)

तर्जमा :- इलाही मुझे सुनने और देखने से बहरामन्द (फ़ाएदा उठाने वाला) कर।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! समाअ़त और बसारत दोनों **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की अ़त़ाकर्दा ने'मतें हैं लिहाज़ा हमें इन ने'मतों का जाइज़ इस्ति'माल करना चाहिये नाजाइज़ इस्ति'माल से एह़तिराज़ करें मसलन ग़ैर मह़रम औ़रत को देखना। फ़िल्म वग़ैरा देखना यूंही ग़ीबत सुनना और फ़ोह़श

www.dawateislami.net

बातें गाने बाजे वग़ैरा सुनना जब कि रग़बत के साथ हों । अलबत्ता इन ने'मतों की शुक्र गुज़ारी येह है कि हम आंखों और कानों का जाइज़ इस्ति'माल करें मसलन क़ुरआने पाक की ज़ियारत, उ़लमा व मशाइख़ की ज़ियारत वग़ैरा और कानों की क़ुव्वते समाअ़त को तिलावते क़ुरआन और ना'ते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और दीने इस्लाम की प्यारी प्यारी ता'लीमात को सुनने में इस्ति'माल करें ।

अल ह़दीस :- ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस्मिद सुर्मा लगाया करो कि वोह निगाह में जिला (रौशनी, चमक) देता है और (पलकों के) बाल उगाता है और इन्हों ने गुमान किया कि नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुर्मादानी थी जिस में से हर रात सुर्मा लगाते थे तीन सलाइयां इस आंख में और तीन उस आंख में (या'नी दाह्‌नी और बाईं चश्माने मुबारका में) (ترمذی شریف، کتاب اللباس، باب ماجاء فی الاکتحال، رقم الحدیث ۱۷۶۳، الجزء الثالث صفحہ نمبر ۲۹۴، دار الفکر بیروت.)

इस्मिद सुर्मे के बारे में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं मगर साह़िबे मिरआत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : ज़ियादा क़वी क़ौल येह है कि येह हल्के सुर्ख़ रंग का सुर्मा होता है जिसे अस्फ़हानी सुर्मा कहा जाता है ।

सुर्मा डालने का त़रीक़ा :- सब से पहले दाह्‌नी आंख में दो सलाइयां लगाए फिर बाईं आंख में तीन सलाइयां लगाए और आख़िर में फिर दाह्‌नी आंख में एक सलाई लगाए ताकि इब्तिदा भी दाह्‌नी त़रफ़ से हो और इन्तिहा भी ।

रात को सोते वक़्त सुर्मा लगाना फ़क़ीरी (ग़ुर्बत) और ज़ो'फ़े बसर को दूर करता है । दोपहर में सोते वक़्त सुर्मा लगाना सुन्नत नहीं है । अलबत्ता जुमुअ़ा की नमाज़ के लिये ईदैन के लिये सुन्नत है ।

(مرأة المناجیح، کتاب اللباس، باب الترجل، الفصل الثانی، (ملخصًا) الجزء السادس صفحہ نمبر ۱۸۰/۱۷۹ ضیاء القرآن لاہور.)

तेल लगाते वक़्त की दुआ़

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तर्जमा :- अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला ।

www.dawateislami.net

अल ह़दीस :- كُلُّ اَمْرٍذِیْ بَالٍ لَایُبْدَأُ فِیْـہِ بِبِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ فَهُوَ اَقْطَعُ

(ابن حبان. خطیب راوی حضرت ابو ہریرہ حضرت کعب بن مالک رضی اللہ عنہم)

तर्जमा :- शानदार काम की इब्तिदा بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ से बरकत हासिल कर के न की जाएगी वोह बे बरकत रहेगा। (بشیر القاری. شرح صحیح البخاری)

चूंकि तेल लगाते वक़्त की दुआ़ मुझे किताबों में नहीं मिली इस लिये मज़्कूरए बाला ह़दीस शरीफ़ तह़रीर की जिस में हर ज़ीशान काम से पहले بِسْمِ اللّٰهِ शरीफ़ पढ़ने की ता'लीम इरशाद फ़रमाई गई लिहाज़ा सुन्नत पर अ़मल पैरा होते हुवे सुन्नत के मुताबिक़ तेल लगाना बिला शको शुबा ज़ीशान काम है पस तेल लगाते वक़्त بِسْمِ اللّٰهِ शरीफ़ को पढ़ा जाए यूंही सुन्नत के मुताबिक़ नाखुन तराशते वक़्त भी और इसी त़रह़ हर ज़ीशान काम पर بِسْمِ اللّٰهِ पढ़ना बाइ़से बरकत और ह़दीस शरीफ़ पर अ़मल है लिहाज़ा हर अच्छे काम की इब्तिदा करते वक़्त अगर इस सिलसिले में कोई दुआ़ मज़्कूर न हो तो इसी ह़दीस पर अ़मल करते हुवे بِسْمِ اللّٰهِ शरीफ़ पढ़ी जाए।

आख़िर में तेल लगाने और नाखुन तराशने की सुन्नत बयान की जाती है।

तेल लगाने की सुन्नत :- नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब सरे अक़्दस में तेल लगाने का इरादा फ़रमाते तो बाएं हाथ की हथेली में बरतन से तेल उंडेलते और पहले अब्रूओं में तेल लगाते फिर आंखों पर या'नी पलकों पर फिर सर में तेल लगाते सर में तेल लगाते तो पहले पेशानी के रुख़ से शुरूअ़ फ़रमाते इसी त़रह़ जब दाढ़ी मुबारक में तेल लगाते तो पहले आंखों पर लगाते फिर दाढ़ी में लगाते और दाढ़ी मुबारक में तेल लगाते वक़्त पहले दाढ़ी मुबारक के उस हिस्से में तेल लगाते जो गर्दन से मिला हुवा है। (زاد المعاد)

बेहतर येह है कि सर के ऊपर हिस्से में जब तेल लगाए तो पहले दाहनी त़रफ़ लगाए फिर बाईं त़रफ़ यूंही जब कंघी करे तो पहले दाईं जानिब

www.dawateislami.net

करे फिर बाईं त़रफ़ क्यूंकि ह़ज़रते आइशा رضی اللہ تعالٰی عنہا फ़रमाती हैं कि हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم कंघी करने में दाहनी त़रफ़ से मुक़द्दम रखते।

(شمائل ترمذی،باب ماجاء فی ترجّل رسول اللہ ﷺ،رقم الحدیث ۲۴،الجزء الخامس صفحہ نمبر ۵۰۹دارالفکر بیروت.)

सुन्नत येही है कि सर के बाल बिखरे न रहें बल्कि उन में कंघी की जाए और बालों के दो ह़िस्से किये जाएं और मांग बीच सर में नाक के ऊपर से सीधी निकाली जाए आज कल फ़ेशन परस्त मर्द औ़रतें एक त़रफ़ से मांग निकालते हैं या'नी टेढी मांग येह ख़िलाफ़े सुन्नत है।

(مرأۃ المناجیح،کتاب اللباس،باب الترجل،الفصل الثانی،الجزء السادس صفحہ نمبر ۱۲۲ ضیاء القرآن پبلیکیشنز لاھور.)

मर्द को इख़्तियार है कि सर के बाल मुंडवाए या बढ़ाए और मांग निकाले हुज़ूरे अक़्दस صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم से दोनों चीज़ें साबित हैं। अगर्चे मुंडाना सिर्फ़ एह़राम से बाहर होने के वक़्त साबित है दीगर औक़ात में मुंडाना साबित नहीं। हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم के मूए मुबारक कभी निस्फ़ कान तक कभी कान की लौ तक होते और जब बढ़ जाते तो शानए मुबारक से छू जाते। (بھار شریعت،الجزء الثالث،حصہ شانزدھم،حظرواباحت کابیان،صفحہ نمبر ۱۹۸ مطبوعہ مکتبہ رضویہ آرام باغ کراچی.)

पूरे बाल रखने की सूरत में तेल लगाने और मांग निकालने की सुन्नत की अदाएगी भी हो जाती है और वैसे भी नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم ने आ़दतन बाल शरीफ़ रखे लिहाज़ा अफ़्ज़ल येही है कि बाल रखे जाएं और बालों को मुंडवाया न जाए अगर्चे मुंडवाना भी जाइज़ है। जब एह़राम से बाहर होते वक़्त बाल मुंडवाए तो पहले दाहनी त़रफ़ से मुंडवाए इस के बा'द बाईं त़रफ़ से जैसा कि ह़दीसे मुबारक से साबित है। (ریاض الصالحین)

सर के बालों में कंघी करने में इफ़रात़ व तफ़रीत़ से काम न लेना चाहिये या'नी न तो ऐसा करे कि हर वक़्त कंघी करने और बालों की ज़ैबाइश व आराइश करने ही में लगा रहे और न ऐसा करे कि बालों को यूंही उलझे

www.dawateislami.net

और बिखरे हुवे छोड़ दे क्यूंकि इन दोनों चीज़ों को अह़ादीस में पसन्द नहीं किया गया। अलबत्ता दाढ़ी के मुतअ़ल्लिक़ है कि अगर मर्द रोज़ाना दाढ़ी में कंघी करे तो कोई मुज़ाइक़ा नहीं बल्कि अशिअ़्अ़तुल्लमआ़त में फ़रमाया कि वुज़ू के बा'द दाढ़ी में कंघी करना फ़क़ीरी (ग़ुर्बत) को दूर करता है। इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इह़याउल उ़लूम में फ़रमाया कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रोज़ दाढ़ी शरीफ़ में दो बार कंघी फ़रमाते।

(مِرْاۃ المناجیح، کتاب اللباس، باب الترجل، الفصل الثانی، الجزء السادس صفحہ نمبر ۱۶۳ ضیاء القرآن لاھور.)

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की रिवायत में है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कसरत से सरे अक़्दस में तेल डाला करते थे।

(شمائل ترمذی، باب ماجاء فی ترجل رسول اللہ ﷺ، رقم الحدیث ۳۴، الجزء الخامس صفحہ نمبر ۵۰۹ دارالفکر بیروت.)

लिहाज़ा हमें चाहिये कि जब हम तेल लगाएं तो तसव्वुरे सुन्नत पेशे नज़र हो ताकि अज्रो सवाब पाएं और ज़िमनन येह फ़ाएदा भी ह़ासिल होगा कि तेल लगाना जिस्मानी त़ौर पर भी मुफ़ीद है बा'ज़ लोग कसरत से तेल इस त़ौर पर इस्ति'माल करते हैं कि क़मीज़ का कॉलर और गर्दन की त़रफ़ का कपड़ा निहायत ही मेला कुचैला हो जाता है येह नज़ाफ़त के ख़िलाफ़ है। क्यूंकि सादगी येह नहीं है कि लिबास मेला कुचैला हो बल्कि ह़क़ीक़त येह है कि लिबास साफ़ सुथरा होना चाहिये अगर्चे कम क़ीमत या पैवन्द लगा हो क्यूंकि नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

﴿1﴾ اَلنَّظَافَةُ مِنَ الْاِيْمَانِ۝ (पाकीज़गी ईमान से है)

﴿2﴾ اِنَّ اللّٰه تَعَالٰى طَيِّبٌ يُحِبُّ الطَّيِّبَ،نَظِيْفٌ يُحِبُّ النَّظَافَة

तर्जमा :- बेशक अल्लाह तआ़ला पाक साफ़ है और पाकी व सफ़ाई को पसन्द फ़रमाता है।

(ترمذی شریف، کتاب الأدب، باب ماجاء فی النظافة، رقم الحدیث ۲۸۰۸، الجزء الرابع صفحہ نمبر ۲۶۵ دارالفکر بیروت.)

www.dawateislami.net

अ़ल्लामा इब्ने ह़जर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : बालों को आरास्ता करना, साफ़ सुथरा रखना, दुरुस्त करना और कंघी करना पाकीज़गी और सुथरापन से तअ़ल्लुक़ रखता है इसी लिये येह मन्दूब है।

(شرح شمائل ترمذی از علامہ سید امیر شاہ قادری گیلانی)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस बात को अच्छी त़रह़ याद रखें कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तेल को अक्सर इस्ति'माल फ़रमाते थे मगर इस के बा वुजूद आप का लिबासे मुबारक मेला कुचैला न होता था चुनान्चे, एक ह़दीस शरीफ़ समाअ़त फ़रमा लें और एक सुन्नत भी सुन लें।

अल ह़दीस :- ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, वोह फ़रमाते हैं कि हु़ज़ूर सरवरे कौनो मकां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अक्सर सरे अक़्दस में तेल डाला करते थे और बसा औक़ात दाढ़ी मुबारक में कंघी किया करते थे और अक्सर सरबन्द (रूमाल की त़रह़ एक कपड़ा उस के लिये अ़रबी में क़िनाअ़ का लफ़्ज़ इस्ति'माल होता है) बांधते थे यहां तक कि सरे मुबारक पर बांधने का कपड़ा तेल वालों के कपड़े की त़रह़ हो जाता था।

(مشکوٰۃ شریف، کتاب اللباس ،باب الترجّل،الفصل الثانی صفحہ نمبر ۳۸۱ مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی.)

इस ह़दीसे मुबारक से मा'लूम हुवा कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सरे अक़्दस पर इ़मामा शरीफ़ के नीचे रूमाल की त़रह़ का कपड़ा बांधते। ताकि इ़मामा मुबारक और टोपी शरीफ़ तेल से मैली न हो। चूंकि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मिज़ाज शरीफ़ और त़बीअ़त शरीफ़ इन्तिहाई नज़ाफ़त पसन्द थी इस लिये इ़मामा मुबारक और टोपी शरीफ़ को भी तेल की चिकनाहट से बचाने के लिये और साफ़ सुथरा रखने के लिये येह कपड़ा इस्ति'माल फ़रमाते। इसी मज़्मून को मिरआत शर्हे मिश्कात में भी बयान किया गया है। (شرح شمائل ترمذی)

लिहाज़ा मा'लूम हुवा कि सर और इ़मामे के दरमियान रूमाल की त़रह़ एक कपड़ा रखना भी प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी सुन्नत और आ़मिल के लिये अज्रो रह़मत के इ़लावा बाइ़से नज़ाफ़त है।

www.dawateislami.net

हाथों के नाखुन तराशने का त़रीक़ा :- नाखुन तराशने का आसान त़रीक़ा जो हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मरवी है वोह येह है कि दाह्ने हाथ कि कलिमे की उंगली से शुरूअ़ करे और छुंगलिया पर ख़त्म करे फिर बाएं हाथ की छुंगलिया से शुरूअ़ करे और अंगूठे पर ख़त्म करे इस के बा'द अब सीधे हाथ के अंगूठे का नाखुन तराशे इस सूरत में नाखुन तराशने का अ़मल सीधे हाथ से शुरूअ़ हो कर सीधे हाथ ही पर ख़त्म होगा।

(درمختار، کتاب الحظر باب الاستبراء وغیرہ،الجزء التاسع صفحہ نمبر ۵۸۲ امدادیہ ملتان.)

पाउं के नाखुन तराशने का त़रीक़ा :- पाउं की उंगलियों के नाखुन दाह्ने पाउं की सब से छोटी उंगली से तराशने शुरूअ़ करे और तरतीब के साथ नाखुन तराशता हुवा बाएं पाउं की छोटी उंगली पर ख़त्म करे।

(ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، باب الاستبراء وغیرہ،الجزء التاسع صفحہ نمبر ۵۸۲ امدادیہ ملتان.)

जुमुआ़ के दिन नाखुन तराशना मुस्तह़ब है अलबत्ता नाखुन अगर ज़ियादा बढ़ गए हों तो जुमुआ़ के दिन का इन्तिज़ार न करे, क्यूंकि नाखुन तराशने, मूंछें तराशने, ज़ेरे बग़ल और ज़ेरे नाफ़ के बाल साफ़ करने की इन्तिहाई मुद्दत चालीस दिन है लिहाज़ा चालीस दिन से ज़ाइद न छोड़े क्यूंकि येह ममनूअ़ है।

अल ह़दीस :- जो जुमुआ़ के दिन नाखुन तरशवाए **अल्लाह** तआ़ला उस को दूसरे जुमुए़ तक बलाओं से मह़फ़ूज़ रखेगा और तीन दिन ज़ाइद या'नी दस दिन तक। (بهار شریعت،الجزء الثالث،حصہ شانزدهم صفحہ نمبر ۱۸۵،باب حجامت بنوانا اور ناخن ترشوانا، مطبوعہ مکتبہ رضویہ آرام باغ کراچی.)

इ़त्र लगाते वक़्त की दुआ़

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ (ماخوذ از حدیث)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! चूंकि इ़त्र लगाना भी सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत है और ज़ीशान काम है लिहाज़ा इ़त्र लगाते वक़्त

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰہ शरीफ़ पढ़ी जाए जैसा कि ह़दीसे मुबारक में फ़रमाया गया है कि "हर अच्छे काम की इब्तिदा بِسْمِ اللّٰہ से नहीं की जाएगी तो वोह बे बरकत होगा।"

(ख़ती़ब)

ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मेहंदी के फूल, मुश्क और ऊ़द की ख़ुश्बू बहुत पसन्द थी। (زادالمعاد)

हु़ज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام आख़िरे शब और सोने से बेदार हो कर क़ज़ाए ह़ाजत से फ़राग़त के बा'द वुज़ू फ़रमाते और फिर ख़ुश्बू लिबास मुबारक पर लगाते यूंही आप सरे अक़्दस पर भी ख़ुश्बू लगाया करते थे। (शमाइले तिरमिज़ी)

आख़िर में याद रहे कि इ़त्र लगाना उम्मतियों की ता'लीम के लिये था वरना ख़ुद सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सरापा अक़्दस ऐसी ख़ुश्बूओं से मुअ़त्त़र था कि काइनात की कोई ख़ुश्बू इस का मुक़ाबला नहीं कर सकती।

ह़ज़रते शैख़ अ़ल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वसाइलुल वुसूल में तह़रीर फ़रमाते हैं कि "इस्ह़ाक़ बिन राहविया رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे मुबारक से जो ख़ुश्बू आती थी वोह दूसरी तमाम ख़ुश्बूओं से मुख़्तलिफ़ होती थी और ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कसरत से पसीना आता था। चेहरए मुबारका पर पसीना आता तो मोतियों की त़रह़ मह़सूस होता और उस की ख़ुश्बू मुश्क और अज़्फ़र से भी ज़ियादा होती। (शर्हे शमाइले तिरमिज़ी)

ख़साइसे कुब्रा में बैहक़ी की रिवायत है वोह उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत करते हैं कि जिस दिन हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल शरीफ़ हुवा था उस दिन मैं ने अपना हाथ आप के सीनए मुबारका पर रखा था। अब बहुत जुमुए गुज़र चुके हैं कि मैं इसी हाथ से खाती भी हूं और इसे धोती भी हूं मगर वोह ख़ुश्बू अभी तक मेरे हाथ से नहीं गई।

(शर्हे शमाइले तिरमिज़ी)

www.dawateislami.net

गुलाब के फूल को सूंघते वक़्त की दुआ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللہ　　وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللہ

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! गुलाब का फूल सूंघते वक़्त आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर मुत़लक़न दुरूदे पाक पढ़ना चाहिये और यहां आसान तरीन दुरूदे पाक तह़रीर कर दिया है।

अल ह़दीस :- مَنْ شَمَّ الْوَرْدَ الْاَحْمَرَ وَلَمْ یُصَلِّ عَلَیَّ فَقَدْ جَفَانِیْ ۝

(نزھۃ المجالس، باب فضل الصلوۃ والتسلیم الخ، الجزء الثانی صفحہ نمبر ۱۰۸ مطبوعہ دارالکتب العلمیۃ بیروت.)

तर्जमा :- जिस ने गुलाब के फूल को सूंघा और मुझ पर दुरूद न पढ़ा उस ने मुझ पर जफ़ा की।

इस ह़दीसे पाक से मा'लूम हुवा कि फूल को सूंघते वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये ताकि जफ़ा के बजाए वफ़ा हो और اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ हर मरज़ की दवा हो।

निकाह़ के बा'द दुल्हा और दुल्हन के लिये दुआ

بَارَكَ اللہُ لَكَ وَبَارَكَ اللہُ عَلَیْكَ وَجَمَعَ بَیْنَكُمَا فِیْ خَیْرٍ ۝

तर्जमा :- अल्लाह तआ़ला तुझ को बरकत दे और तुझ पर बरकत नाज़िल फ़रमाए और तुम दोनों में भलाई रखे।

(ابوداؤد شریف، کتاب النکاح، باب مایقال للمتزوج، رقم الحدیث ۲۱۳۰، الجزء الثانی صفحہ نمبر ۳۵۱ دار احیاء التراث بیروت.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! निकाह़ होने के बा'द दुल्हा और दुल्हन के लिये बरकत की दुआ़ करनी चाहिये कि इन से हमारा दीनी रिश्ता और नसबी रिश्ता होता है और इस्लामी मुबारक बादी भी येही है कि निकाह़ होने के बा'द फ़रीक़ैन के लिये दुआ़ए बरकत की जाए। लेकिन अक्सर येह देखा

www.dawateislami.net

गया है कि दुल्हन से उस की सहेलियां और दुल्हा से उस के दोस्त अह़बाब बजाए इस के कि उन्हें बरकत की दुआ़ दें बड़े नाज़ेबा कलिमात कहते हैं जिन का तह़रीर करना ना मुनासिब है। हमें चाहिये कि फ़ुज़ूल गोई और दूसरी लग़्वियात के बजाए उन के लिये दुआ़ए बरकत करें।

शबे ज़िफ़ाफ़ ﴾सुहाग रात﴿ में मुलाक़ात की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ خَیْرَهَا وَخَیْرَمَا جَبَلْتَهَا عَلَیْهِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا جَبَلْتَهَا عَلَیْهِ○

तर्जमा :- या इलाही मैं तुझ से इस (या'नी बीवी) की भलाई और इस की फ़ित़री आ़दतों की भलाई मांगता हूं और तेरी पनाह मांगता हूं इस की बुराई से और इस की फ़ित़री आ़दतों की बुराई से।

(ابوداؤد شریف، کتاب النکاح، باب فی جامع النکاح، رقم الحدیث ۲۱۶۰، الجزء الثانی صفحہ نمبر ۲۶۳ داراحیاء التراث بیروت.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब पहली रात को अपनी ज़ौजा के पास जाए तो नर्मी के साथ मा'मूली से उस की पेशानी के बाल हाथ में ले कर येह दुआ़ पढ़े। अगर हम इस दुआ़ के मा'नों में ग़ौर करें तो इस में हमारे लिये कितना अम्नो सुकून का पैग़ाम है ! लिहाज़ा इस दुआ़ को इस ख़ुशी के मौक़अ़ पर पढ़ लें तो **अल्लाह** से उम्मीद है कि अपनी रह़मत से ज़ौजैन का तअ़ल्लुक़ ख़ैरो भलाई के साथ क़ाइमो दाइम रखेगा। गोया येह दुआ़ हमें दर्स देती है कि किसी भी वक़्त यादे इलाही से ग़ाफ़िल न हों बल्कि हर लह़ज़ा उस की रह़मत के त़लबगार रहें।

बीवी के साथ सोह़बत के वक़्त की दुआ़

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّیْطٰنَ وَجَنِّبِ الشَّیْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا○

(بخاری شریف، کتاب التوحید، باب السئوال بأسماء اللّٰہ تعالٰی الخ، الجزء التاسع صفحہ نمبر ۱۱۹ مطبوعہ دارطوق النجاۃ بیروت.)

तर्जमा :- अल्लाह के नाम से। या इलाही हमें शैत़ान से बचा और उसे (या'नी औलाद को) शैत़ान से बचा जो तू हमें अ़त़ा करे।

www.dawateislami.net

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब बीवी से सोह़बत का इरादा हो तो बरहंगी से पहले इस दुआ़ को पढ़े इस दुआ़ में इस बात की नसीह़त की जा रही है कि तुम्हारा अपनी बीवी के साथ ख़ल्वत करना तलज़्ज़ुज़ व नफ़्सानी ख़्वाहिशात के लिये न हो बल्कि इस से मक़्सूद येह हो कि हम बे ह़याई से मह़फ़ूज़ रहें और **अल्लाह** तआ़ला हमें नेक औलाद अ़ता फ़रमाए। इसी लिये शैत़ाने लईन से अपनी और अपनी होने वाली औलाद की मुह़ाफ़ज़त की दुआ़ **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन से की जा रही है ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं कि जो शख़्स सोह़बत के वक़्त येह दुआ़ पढ़ेगा और उस के लड़का पैदा हो तो शैत़ान उस को कभी ज़रर न पहुंचा सकेगा।

वक़्ते इन्ज़ाल की दुआ़

اَللّٰھُمَّ لَا تَجْعَلْ لِلشَّیْطَانِ فِیْمَا رَزَقْتَنِیْ نَصِیْبًا ۝

तर्जमा :- या इलाही शैत़ान के लिये ह़िस्सा न बना उस में जो (औलाद) तू मुझ को अ़ता करे।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब इन्ज़ाल हो तो इस दुआ़ को दिल में पढ़े। इस मौक़अ़ पर इस दुआ़ की ता'लीम देना भी इस बात की शहादत है कि इस्लाम कामिल व अक्मल दीन है। ताकि मुसलमान किसी भी मुआ़मले में किसी दूसरे मज़्हब का मोह़ताज न रहे और येह बात भी मा'लूम हुई कि मुसलमान हर ह़ाल में यादे इलाही में मस्रूफ़ रहे। अगर हम अपने अकाबिरीन के ह़ालाते ज़िन्दगी को देखें तो येह बात ब ख़ूबी मा'लूम होती है कि किसी साअ़त उन से यादे इलाही में ग़फ़्लत हो जाती तो वोह उस साअ़त की ज़िन्दगी को ज़िन्दगी नहीं बल्कि पस मुर्दगी तसव्वुर करते थे।

येह बात याद रखिये कि होने वाली (अगर मुक़द्दर में है) औलाद के लिये **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में दुआ़ यूं की जाए कि **अल्लाह** तआ़ला उसे शैत़ान से मह़फ़ूज़ रखे लेकिन जब औलाद पैदा हो जाए और

www.dawateislami.net

उसे शैत़ानी कामों से न रोके उसे اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْىٌ عَنِ الْمُنْكَر न करे तो बड़ी अ़जीब बात होगी। पस आगाह हो जाइये कि येह दुआ़ हमें आइन्दा के लिये भी लाइह़ए अ़मल और दा'वते फ़िक्र देती है।

जिमाअ़ करते वक़्त इन बातों का ज़रूर ख़याल रखिये

जिमाअ़ करते वक़्त कलाम मकरूह है बल्कि बच्चे के गूंगे या तोतले होने का ख़त़रा है। यूंही औ़रत की शर्मगाह पर नज़र न करे कि बच्चे के अन्धे होने का अन्देशा है और उस वक़्त मर्द व औ़रत कपड़ा वग़ैरा ओढ़ लें जानवरों की त़रह़ बरहना न हों कि बच्चे के लिये बेशर्म व बे ह़या होने का अन्देशा है। (आ़लमगीरी, फ़तावा रज़विय्या)

बच्चे की विलादत के बा'द की दुआ़

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ (या'नी अज़ान)

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ (या'नी इक़ामत)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब बच्चे की विलादत हो जाए तो मुस्तह़ब येह है कि उस के दाहने कान में अज़ान कहे और बाएं कान में इक़ामत कहे। चाहे मौलूद लड़का हो या लड़की और सातवें दिन उस का नाम रखा जाए और उस का सर मुंडा जाए और जो बाल बच्चे के सर से उतरें उन के वज़्न के बराबर चांदी या **अल्लाह** तआ़ला ने अगर रिज़्क़ में कुशादगी दी है तो सोना ख़ैरात करे।

बच्चे का अच्छा नाम रखना चाहिये औलाद भी **अल्लाह** तआ़ला की अ़त़ाकर्दा एक ने'मत है लिहाज़ा इस के मिलने पर शुक्र गुज़ारी के काम करना चाहिये न कि वोह काम जिस में **अल्लाह** और उस के रसूल की ना फ़रमानी हो। मसलन गाना बजाना वग़ैरा।

और अ़क़ीक़ा अपनी हैसिय्यत के मुत़ाबिक़ करे उधार लेने की ज़रूरत नहीं और न ही नुमूदो नुमाइश मक़्सूद हो।

www.dawateislami.net

तह्नीक का त़रीक़ा :- बच्चे की विलादत के बा'द खजूर या मीठी चीज़ ले कर इसे चबा कर बच्चे के तालू में मलें और ख़ैरो बरकत की दुआ़ करें। बेहतर येह है कि तह्नीक करने वाला मुत्तक़ी व परहेज़गार हो।

अ़क़ीक़े की दुआ़

اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ عَقِيْقَةُ ابْنِيْ

(.........................यहां पर लड़के का नाम लिया जाए)

دَمُهَا بِدَمِهٖ

وَلَحْمُهَا بِلَحْمِهٖ وَشَحْمُهَا بِشَحْمِهٖ وَعَظْمُهَا بِعَظْمِهٖ وَجِلْدُهَا بِجِلْدِهٖ وَشَعْرُهَا بِشَعْرِهٖ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا فِدَاءً لِّابْنِيْ مِنَ النَّارِ وَتَقَبَّلْهَا مِنْهُ كَمَا تَقَبَّلْتَهَا مِنْ نَّبِيِّكَ الْمُصْطَفٰى وَحَبِيْبِكَ اَحْمَدَ الْمُجْتَبٰى صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَ بِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ۝

और अगर लड़की का अ़क़ीक़ा हो तो येह दुआ़ पढ़ी जाएगी

اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ عَقِيْقَةُ بِنْتِيْ

(.........................यहां लड़की का नाम लिया जाए)

دَمُهَا بِدَمِهَا

وَلَحْمُهَا بِلَحْمِهَا وَشَحْمُهَا بِشَحْمِهَا وَعَظْمُهَا بِعَظْمِهَا وَ جِلْدُهَا بِجِلْدِهَا وَشَعْرُهَا بِشَعْرِهَا اَللّٰهُمَّ اِجْعَلْهَا فِدَاءً لِبِنْتِيْ مِنَ النَّارِ وَ تَقَبَّلْهَا مِنْهَا كَمَا تَقَبَّلْتَهَا مِنْ نَّبِيِّكَ الْمُصْطَفٰى وَحَبِيْبِكَ اَحْمَدَ الْمُجْتَبٰى صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَ مَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ۝

जब इस दुआ़ को पढ़ ले तो بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ पढ़ कर जानवर को ज़ब्ह़ करे।

www.dawateislami.net

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! अ़क़ीक़ा करना सुन्नते मुअक्कदा नहीं है। मगर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ौलो फ़े'ल से इस का सुबूत मिलता है। लिहाज़ा **अल्लाह** तआ़ला ने रिज़्क़ में वुस्अ़त दी है तो करे कि बच्चे के लिये बाइ़से बरकत है लड़के के लिये दो बकरे और लड़की के लिये एक बकरी ज़ब्ह़ करना सुन्नत है अगर सातवें दिन अ़क़ीक़ा न किया तो जब चाहे करे उ़म्र की क़ैद नहीं और जो अ़वाम में मश्हूर है कि जिस का अ़क़ीक़ा न हो वोह कुरबानी नहीं कर सकता बे अस्ल है। अगर कुरबानी वाजिब है तो कुरबानी का उस पर करना वाजिब है। अ़क़ीके़ से उस का तअ़ल्लुक़ नहीं इसी त़रह़ येह मस्अला जो मश्हूर है कि अ़क़ीके़ का गोश्त दादा-दादी, वालिदैन इसी त़रह़ नाना-नानी नहीं खा सकते बे अस्ल है। (तफ़्सीली मसाइल के लिये मुलाहज़ा करें : बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा पांज़दहुम)

बच्चे की पैदाइश के वक़्त दुश्वारी पर दुआ़

يَا خَالِقَ النَّفْسِ وَيَا مُخَلِّصَ النَّفْسِ مِنَ النَّفْسِ وَيَا مُخْرِجَ النَّفْسِ مِنَ النَّفْسِ خَلِّصْهَا ○

तर्जमा :- ऐ नफ़्स के पैदा करने वाले और ऐ नफ़्स को नफ़्स से नजात देने वाले और ऐ नफ़्स से नफ़्स को निकालने वाले इस (या'नी दर्दे ज़ेह में मुब्तला औ़रत) को आज़ाद कर दे। (مدارج النبوت، باب ششم معجزات

آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم، رقیہ عسر ولادت، الجزء الاول صفحہ نمبر ۲۳۵ نوریہ رضویہ)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ السَّلَام का गुज़र एक ऐसी औ़रत पर हुवा जिस का बच्चा रेह़्म (बच्चा दानी) में मर गया था। उस औ़रत ने अ़र्ज़ की : ऐ कलीमतुल्लाह (या'नी **अल्लाह** की बात मुराद ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ السَّلَام) मेरे लिये दुआ़ फ़रमाइये कि ह़क़ तआ़ला मुझे इस दुश्वारी से नजात दे। इस पर ह़ज़रते ई़सा रूहु़ल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने दुआ़ की (या'नी मुतज़क्किरा दुआ़ की) लिहाज़ा उस औ़रत के हां बच्चा बिला तक्लीफ़ तवल्लुद हो गया।

www.dawateislami.net

शैख़ मिरजानी عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं कि जब कोई औ़रत दर्दे ज़ेह में मुब्तला हो तो उस के लिये येह दुआ़ लिख कर दे।

तलबे औलाद की दुआ़

رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوَارِثِيْنَ

(قرآن مجید،سورۃ الانبیاء آیۃ نمبر ۸۹،پارہ نمبر ۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब मुझे अकेला न छोड़ और तू सब से बेहतर वारिस।

सफ़र शुरूअ़ करते वक़्त की दुआ़

اَللّٰهُمَّ بِكَ اَصُوْلُ وَبِكَ اَحُوْلُ وَبِكَ اَسِيْرُ ۝

तर्जमा :- या इलाही मैं तेरी ही मदद से ह़म्ला करता हूं और तेरी ही मदद से चलता हूं और तेरी ही मदद से फिरता हूं।

(बज़्ज़ार, रावी ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो! जब सफ़र का इरादा करे तो इस दुआ़ को पढ़ ले और दो रक्अ़त नमाज़ सफ़र की पढ़ ले नमाज़े सफ़र पढ़ने का त़रीक़ा वोही है जो दो रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल का है त़बरानी की ह़दीस में इरशाद फ़रमाया गया : किसी ने अपने अह्ल के पास उन दो रक्अ़तों से बेहतर न छोड़ा जो ब वक़्ते इरादए सफ़र उन के पास पढ़ें। (بہار شریعت،الجزء الاول،حصہ چہارم،نماز سفر و واپسئی سفر،الخ،صفحہ نمبر ۲۲ مطبوعہ مکتبہ رضویہ آرام باغ کراچی.)

इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि नमाज़े सफ़र घर में पढ़े। आईना, सुर्मा, कंघा और मिस्वाक अपने पास रखे कि सुन्नत है जब सफ़र को जाए तो जुमा'रात, पीर या हफ़्ते का दिन हो और सुब्ह़ का वक़्त मुबारक है और अह्ले जुमुआ़ को जुमुआ़ के दिन सफ़र करना अच्छा नहीं। (बहारे शरीअ़त)

अगर आसानी हो तो इन अय्याम में सफ़र करे वरना ज़रूरतन दूसरे दिनों में भी सफ़र कर सकता है। बस बन्दए मोमिन की नज़र इस त़रफ़ रहे कि मुअस्सिर (ह़क़ीक़ी कारसाज़) अल्लाह तआ़ला है।

www.dawateislami.net

सफ़र के वक़्त की दुआ

اَسْتَوْدِعُ اللہَ دِیْنَکَ وَاَمَانَتَکَ وَخَوَاتِیْمَ عَمَلِکَ○

तर्जमा :- **अल्लाह** के सिपुर्द करता हूं तेरे दीन और तेरी अमानत और तेरे अ़मल के ख़ातिमे को । (ابو داؤد شریف، کتاب الجہاد،باب فی الدُعاء عندالوداع رقم الحدیث ٢٦٠٠ ، الجزء الثالث صفحہ نمبر ٤٩ داراحیاء)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब सफ़र को जाए तो रुख़्सत करने वाला मुसाफ़िर के लिये येह दुआ़ करे । आज कल अक्सर देखा जाता है कि हमारा कोई अ़ज़ीज़ दूबई या कुवैत वग़ैरा जाता है तो हमारी ज़बान तो ह़रकत करती है लेकिन फ़रमाइश के लिये कि मेरे लिये फुलां चीज़ भेज देना या फुलां चीज़ वापसी पर लेते आना लेकिन इस दुआ़ को पढ़ने के लिये (जो मुसाफ़िर के लिये एक ह़िसार की मानिन्द है) हमारी ज़बान ह़रकत नहीं करती । इस दुआ़ में हमें बतलाया गया है कि सफ़र में जाने वाले अपने मुसलमान भाई के लिये ईमान की सलामती और ख़ातिमा बिल ख़ैर की दुआ़ करे क्यूंकि अक्सर सफ़र में ह़ादिसात होते रहते हैं ।

मुसाफ़िर की रुख़्सत करने वाले के लिये दुआ़

اَسْتَوْدِعُكَ اللہَ الَّذِیْ لَاتَخِیْبُ اَوْلَا تَضِیْعُ وَدَائِعُهٗ○

तर्जमा :- मैं तुझे **अल्लाह** के सिपुर्द करता हूं जिस के पास अमानतें बेकार या ज़ाएअ़ नहीं होती हैं। (त़बरानी, रावी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब रुख़्सत करने वाला मुसाफ़िर के लिये दुआ़ करे तो जवाब में मुसाफ़िर रुख़्सत करने वाले के लिये येह दुआ़ करे अगर रुख़्सत करने वाले ज़ियादा हो तो اَسْتَوْدِعُكَ اللہ की बजाए اَسْتَوْدِعُكُمُ اللہ कहे ।

www.dawateislami.net

सुवारी पर सुवार होते वक़्त की दुआ

بِسْمِ اللهِ **तर्जमा :-** अल्लाह के नाम से (सुवार होता हूं)

(ابوداؤد شریف، کتاب الجهاد، باب مایقول الرجل اذا رکب، رقم الحدیث ۲۶۰۲، الجزء الثالث صفحه نمبر ۴۹ داراحیاء التراث بیروت.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब घोड़े या ऊंट या मौजूदा राइज सुवारी मसलन बस या रेल वग़ैरा पर सुवार होने लगे तो पहली सूरत में रिकाब में पाउं रखते वक़्त और दूसरी सूरत में पाएदान पर पाउं रखते वक़्त येह दुआ पढ़े ।

सुवारी पर इतमीनान से बैठ जाने पर दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ سُبْحٰنَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَ
مَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ وَ اِنَّا اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ

(ابوداؤد شریف، کتاب الجهاد، باب مایقول الرجل، الخ، رقم الحدیث ۲۶۰۲، الجزء الثالث صفحه نمبر ۴۹ داراحیاء التراث بیروت.)

तर्जमा :- अल्लाह तआ़ला का शुक्र है पाक है वोह जिस ने हमारे लिये इसे (सुवारी को) मुसख़्ख़र किया और हम इस को फ़रमांबरदार नहीं बना सकते थे ।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब सुवारी के जानवर की पीठ पर बैठ जाए या बस या रेल वग़ैरा की सीट पर बैठ जाए तो येह दुआ पढ़े याद रहे कि अक्सर औक़ात रेल या बस में बैठने की जगह नहीं होती लिहाज़ा खड़े हो कर सफ़र करना पड़ता है लेकिन यहां पर खड़े हो कर भी येह दुआ पढ़े इस दुआ को पढ़ने के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ तीन बार और اَللّٰهُ اَكْبَر तीन बार और आख़िर में سُبْحَانَكَ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ فَاغْفِرْ لِیْ اِنَّهٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ O पढ़े ।

(ابوداؤد شریف، کتاب الجهاد، باب مایقول الرجل الخ، رقم الحدیث ۲۶۰۲، الجزء الثالث صفحه نمبر ۴۹ داراحیاء التراث بیروت.)

www.dawateislami.net

बेशक जो लोग सुवारी पर सुवार होते वक़्त **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र करते हैं उन के लिये बड़ा अज्रो सवाब है और **अल्लाह** तआ़ला उन की ह़िफ़ाज़त फ़रमाता है जो शख़्स किसी जानवर पर सुवार होते वक़्त بِسۡمِ اللّٰہِ और اَلۡحَمۡدُلِلّٰہِ पढ़ ले तो उस जानवर के उठते हुवे हर क़दम पर उस सुवार के ह़क़ में एक नेकी लिखी जाएगी। (تفسیر نعیمی،الجزء الاول،بحث بسم اللہ کے فوائد،صفحہ نمبر ۵۲،مطبوعہ نعیمی کتب خانہ گجرات.)

और इसी त़रह़ जो शख़्स कश्ती (बह़्री जहाज़) में सुवार होते वक़्त بِسۡمِ اللّٰہِ और اَلۡحَمۡدُلِلّٰہِ पढ़ ले तो जब तक वोह उस में सुवार रहेगा उस के लिये नेकियां लिखी जाएंगी। (تفسیر نعیمی،الجزء الاول،بحث بسم اللہ کے فوائد،صفحہ نمبر ۵۲،مطبوعہ نعیمی کتب خانہ گجرات.)

जो कोई सुवार चलते वक़्त ख़ाली हो कर (या'नी तमाम दीगर झमेलों से बच कर) **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मुतवज्जेह होता है तो **अल्लाह** तआ़ला उस के पीछे एक फ़िरिश्ता सुवार कर देता है। (या'नी फ़िरिश्ता उस की ह़िफ़ाज़त करता है) और अगर शर (या'नी बुरे शिआ़र जो ख़िलाफ़े शरअ़ होते हैं।) में मश्ग़ूल होता है तो उस के पीछे एक शैत़ान सुवार कर देता है। (त़बरानी)

कश्ती या बह़्री जहाज़ पर सुवार होने की दुआ़

بِسۡمِ اللّٰہِ مَجۡرٖىهَا وَمُرۡسٰىهَا ؕ اِنَّ رَبِّیۡ لَغَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ ۝

وَمَا قَدَرُوا اللّٰہَ حَقَّ قَدۡرِہٖ ۖ وَالۡاَرۡضُ جَمِیۡعًا قَبۡضَتُہٗ یَوۡمَ الۡقِیٰمَۃِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطۡوِیّٰتٌۢ بِیَمِیۡنِہٖ ؕ

سُبۡحٰنَہٗ وَتَعٰلٰی عَمَّا یُشۡرِکُوۡنَ ۝

(त़बरानी :- रावी ह़ज़रते ह़ुसैन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم)

तर्जमा :- **अल्लाह** तआ़ला के नाम की मदद से इस का चलना और ठहरना है बेशक मेरा रब बख़्शने वाला रह़्म वाला है और उन्हों ने **अल्लाह** की क़द्र जैसी चाहिये थी न की और ज़मीन पूरी क़ियामत के दिन उस की मुठ्ठी में है और आस्मान लपेटे हुवे उस के दाह्ने हाथ में होंगे। वोह पाक और बरतर है उस से जिसे उस का शरीक बताते हैं।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब कश्ती या बह्‌री जहाज़ पर सफ़र करें तो मुन्दरिजए बाला दुआ़ पढ़ें । इन के इलावा कलिमए शहादत भी पढ़ लें ।

एक दफ़्आ़ मनवड़ा का तब्लीग़ी दौरा था जिस की क़ियादत अमीरे दा'वते इस्लामी ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी مدَّظِلُّهُ العَالِی ने की । कश्ती के सफ़र में आप ने मुतज़क्किरा दुआ़ पढ़ने के बा'द कलिमए शहादत भी पढ़ाया । इस्तिफ़्सार करने पर इरशाद फ़रमाया कि कल बरोज़े क़ियामत येह पानी भी हमारे कलिमए शहादत पढ़ने की गवाही देगा ।

जब सफ़र शुरूअ़ कर दे उस वक़्त की दुआ़

اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ فِیْ سَفَرِنَا ھٰذَا الْبِرَّ وَ التَّقْوٰیO وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضٰی O اَللّٰھُمَّ ھَوِّنْ عَلَیْنَا ھٰذَا السَّفَرَ O وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَہٗO اَللّٰھُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِی السَّفَرِ وَ الْخَلِیْفَةُ فِی الْاَھْلِO اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَّعْثَاءِ السَّفَرِ وَ كَاٰبَةِ الْمَنْظَرِ وَ سُوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِی الْاَھْلِ وَالْمَالِ وَالْوَلَدِO

(صحیح مسلم،کتاب الحج،باب مایقول اذا...الخ،الحدیث۱۳۴۲،ص۷۰۰)

तर्जमा :- या इलाही हम अपने सफ़र में तुझ से नेकी व परहेज़गारी और तेरी ख़ुशनूदी के काम चाहते हैं । या इलाही हम पर हमारा सफ़र आसान कर दे और इस का फ़ासिला तै कर दे । इलाही तू ही सफ़र में मालिक और घरवालों के लिये निगहबान है । या इलाही मैं तुझ से सफ़र की मशक़्क़त और ना पसन्दीदा मन्ज़र और माल और अह्‌ल व औलाद में वापसी पर ख़राबी से पनाह मांगता हूं ।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब सफ़र शुरूअ़ कर दे तो इस दुआ़ को पढ़े और इसी सफ़र से लौटते वक़्त वापसी पर भी इसी दुआ़ को पढ़ कर येह कलिमात ज़ियादा करे ।

آئِبُوْنَ تَائِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ O

www.dawateislami.net

तर्जमा :- हम लौटने वाले हैं तौबा करने वाले हैं इबादत करने वाले हैं अपने रब की ह़म्द करने वाले हैं। (مسلم شریف،کتاب الحج،باب مایقول اذارکب الخ،رقم الحدیث ۱۳۴۵،صفحہ نمبر ۷۰۲ مطبوعہ دارابن حزم بیروت.)

सफ़र से ब ख़ैरिय्यत वापस आने की दुआ़

اِنَّ الَّذِیْ فَرَضَ عَلَیْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰى مَعَادٍ ؕ

(قرآن مجید،سورۃ القصص آیۃ نمبر ۸۵،پارہ نمبر ۲۰.)

जानवर को ठोकर लगते वक़्त की दुआ़

بِسْمِ اللّٰهِ

तर्जमा :- **अल्लाह** तआ़ला के नाम से (मदद चाहता हूं)

(निसाई :- रावी ह़ज़रते अबू मलीह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर सुवारी के जानवर को ठोकर लगे तो येह दुआ़ पढ़े । आज कल बस या दूसरी सुवारियों में सफ़र किया जाता है लिहाज़ा इस में अगर ब्रेक वग़ैरा लगे तो येह दुआ़ पढ़े । इस में कोई ह़रज नहीं । اِنْ شَآءَ اللّٰہ हादिसात से तह़फ़्फ़ुज़ का ज़रीआ़ होगा ।

बुलन्दी पर चढ़ते वक़्त की दुआ़

اَللّٰهُ اَكْبَر

तर्जमा :- **अल्लाह** तआ़ला सब से बड़ा है (बेशक सब बड़ाई उसी के लिये है ।)(बुख़ारी, रावी ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

बुलन्दी से उतरते वक़्त की दुआ़

سُبْحٰنَ اللّٰهِ (बुख़ारी, रावी ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! बुलन्दी पर चढ़े तो (اَللّٰهُ اَكْبَر) कहे और जब बुलन्दी से उतरे तो (سُبْحٰنَ اللّٰهِ) गोया इन दुआ़ओं में इस बात का दर्स दिया जा रहा है कि बुलन्दी पर चढ़ते वक़्त अपने नफ़्स में बड़ाई का तसव्वुर न रखे बल्कि बन्दए मोमिन के दिल में येह बात हमेशा रहे कि तमाम

www.dawateislami.net

बड़ाइयां अल्लाह तआ़ला के लिये हैं और जब नीचे उतरे तो अल्लाह पाक की पाकी बयान करे।

किसी मन्ज़िल में क़ियाम करने के वक़्त की दुआ़

"اَعُوْذُ بِکَلِمَاتِ اللّٰہِ التَّآمَّاتِ مِنْ شَرِّمَا خَلَقَ"

तर्जमा :- मैं अल्लाह तआ़ला के कलिमाते ताम्मा (कामिल) की पनाह लेता हूं उस चीज़ की बुराई से जो उस ने पैदा की है।

(ترمذی شریف،کتاب الدعوات،باب ماجاء مایقول اذا نزل
مَنْزِلًا،رقم الحدیث۳۴۴۸،الجزء الخامس صفحہ نمبر ۲۷۵دارالفکر بیروت.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब दौराने सफ़र किसी मक़ाम पर ठहरे तो इस दुआ़ को पढ़ ले। इस दुआ़ की फ़ज़ीलत में आता है कि इस दुआ़ को पढ़ लेने से जब तक वोह उस जगह से कूच नहीं करेगा उस वक़्त तक कोई चीज़ उसे ज़रर नहीं पहुंचाएगी जब दौराने सफ़र किसी मन्ज़िल पर ठहरे तो रास्ते में क़ियाम न करे और जितने अह़बाब सफ़र में हैं सब मिल जुल कर ठहरें।

अल ह़दीस :- सह़ीह़ मुस्लिम में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जब रात को मन्ज़िल पर उतरो तो रास्ते से बच कर ठहरो कि वोह जानवरों का रास्ता है और ज़हरीले जानवरों के ठहरने की जगह है। (بہارشریعت،الجزء الثالث،حصہ شانزدھم،
آداب سفر کا بیان،صفحہ نمبر ۲۵۰مطبوعہ مکتبہ رضویہ آرام باغ کراچی.)

अल ह़दीस :- अबू दावूद ने ह़ज़रते अबू सा'लबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि लोग जब मन्ज़िल पर उतरते तो मुतफ़र्रिक़ ठहरते, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम्हारा मुतफ़र्रिक़ हो कर ठहरना शैत़ान की त़रफ़ से है इस के बा'द सह़ाबा किसी मन्ज़िल पर उतरते तो मिल कर ठहरते।

(بہارشریعت،الجزء الثالث،حصہ شانزدھم،آداب سفر کا بیان،صفحہ نمبر ۲۵۰
مطبوعہ مکتبہ رضویہ آرام باغ کراچی.)

www.dawateislami.net

शहर देखते वक़्त की दुआ

اَسْئَلُكَ خَيْرَ مَا فِيْهَا وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا وَ شَرِّ مَا فِيْهَا ۝

तर्जमा :- मैं तुझ से इस (शहर, बस्ती या गाऊं) की भलाई और इस के अन्दर जो कुछ है इस की भलाई मांगता हूं और मैं तुझ से इस की और इस के अन्दर जो कुछ है इस की बुराई से पनाह मांगता हूं।

(त़बरानी, रावी ह़ज़रते लुबाबा बिन अबू रिफ़ाआ़)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब उस शहर को देखे जिस में क़ियाम करता है तो इस दुआ़ को पढ़ ले اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ उस शहर के लोगों से भलाई पाएगा और बुराई से मह़फ़ूज़ रहेगा।

शहर में दाखि़ल होते वक़्त की दुआ़

तीन बार اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهَا फिर

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا جَنَاهَا وَحَبِّبْنَا اِلٰى اَهْلِهَا وَحَبِّبْ صَالِحِىْ اَهْلِهَا اِلَيْنَا ۝ (طبرانی)

तर्जमा :- इलाही बरकत दे हमें इस (शहर या गाऊं) में या इलाही हमें इस (शहर या गाऊं) के समरात नसीब कीजिये और हमें इस के रहने वालों का मह़बूब कर दे और इस के नेक लोगों को हमारा दोस्त बना दे।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब शहर में दाखि़ल हों तो इस दुआ़ को पढ़ें। ग़ौर कीजिये कि इस दुआ़ के कलिमाते त़य्यिबात हमारे लिये कितने बा बरकत हो सकते हैं मगर उस वक़्त जिस वक़्त हम दुआ़ को पढ़ लें तो **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत से उम्मीद है कि हम जिस काम के लिये उस शहर में गए होंगे उस में बरकत होगी। चाहे वोह दीन का काम हो या रिज़्क़े ह़लाल का मुआ़मला और फिर दुआ़ की जा रही है कि या इलाही उस शहर के लोग मुझ से मह़ब्बत रखें ताकि मेरा वहां क़ियाम सह्ल हो जाए और उस के

नेक लोग मेरे हमनशीन बन जाएं। क्यूंकि अच्छा हमनशीन मिल जाना बहुत बड़ी ने'मत है। बुरे हमनशीन से बेहतर है कि आदमी तन्हाई को अपना ले।

अल ह़दीस :- बैहक़ी ने शुअ़बुल ईमान में इमरान बिन ह़त्ता़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की, कहते हैं कि मैं ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मिलने गया तो उन्हें काली कमली ओढ़े हुवे मस्जिद में तन्हा बैठे हुवे देखा। मैं ने कहा ऐ अबू ज़र येह तन्हाई कैसी, उन्हों ने कहा कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना कि तन्हाई अच्छी है बुरे हमनशीन से और सालेह़ हमनशीन तन्हाई से बेहतर है और अच्छी बात ख़ामोशी से बेहतर है और बुरी बात बोलने से चुप रहना बेहतर है। (बहारे शरीअ़त)

सफ़र में ख़ुशहाली की दुआ़

﴿1﴾ सूरए قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ एक मरतबा

﴿2﴾ सूरए اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ एक मरतबा

﴿3﴾ सूरए قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ एक मरतबा

﴿4﴾ सूरए قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ एक मरतबा

﴿5﴾ सूरए قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ एक मरतबा

तर्जमा :- (कन्ज़ुल ईमान फ़ी तर्जमतिल क़ुरआन) में इन पांचों सूरतों का तर्जमा देखिये।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! सफ़र शुरूअ़ करने से पहले इन पांचों सूरतों को पढ़े और उसी तरतीब से पढ़े जो ऊपर तह़रीर की गई है। इन सूरतों को بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ से पढ़ना शुरूअ़ करे और आख़िर में بِسْمِ اللّٰهِ ही पर ख़त्म करे या'नी हर सूरत की इब्तिदा में بِسْمِ اللّٰهِ शरीफ़ पढ़े और आख़िर में सूरह (النَّاسِ) पढ़ चुके तो फिर بِسْمِ اللّٰهِ पढ़े जो शख़्स इन सूरतों को सफ़र से पहले पढ़ ले तो उस के लिये सफ़र में ख़ुशह़ाली होगी।

www.dawateislami.net

अल ह़दीस :- रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ जुबैर (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) क्या तुम येह चाहते हो कि जब सफ़र में जाओ तो अपने दोस्तों से अच्छी ह़ालत में रहो। ह़ज़रते जुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : मेरे मां बाप आप पर कुरबान हो जाएं। जी हां (या'नी मैं इस बात को पसन्द करता हूं) तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तो फिर येह पांच सूरतें (या'नी सूरतुल काफ़िरून से सूरतुन्नास तक) पढ़ लिया करो और हर सूरत को بِسْمِ اللّٰهِ शरीफ़ ही से शुरूअ़ करो और بِسْمِ اللّٰهِ शरीफ़ ही पर ख़त्म करो। (दुर्रे मुख़्तार)

जब कोई शुगून दिल में खटके उस वक़्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ لَا يَأْتِيْ بِالْحَسَنَاتِ اِلَّا اَنْتَ وَلَا يَدْفَعُ
السَّيِّئَاتِ اِلَّا اَنْتَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِكَ

तर्जमा :- इलाही तेरे सिवा कोई भलाई नहीं लाता और तेरे सिवा कोई बुराई दूर नहीं करता और गुनाहों से बचने और नेकी करने की कुव्वत व ताक़त नहीं। मगर तेरी (मदद) से। (ابوداؤد شریف، کتاب الطب، باب فی الطِّیَرَۃِ رقم الحدیث ۳۹۱۹، الجزء الرابع، صفحہ نمبر ۲۵ داراحیاء التراث بیروت.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! बद शुगूनी की इस्लाम में कोई ह़क़ीक़त नहीं है। मसलन बा'ज़ लोगों को देखा गया है कि अगर उन के सामने से काली बिल्ली गुज़रे या'नी रास्ता काट कर गुज़र जाए तो कहते हैं कि हमारे लिये बुरा हुवा, हम जिस मक़्सद के लिये जा रहे थे वोह पूरा न होगा लिहाज़ा वापस घर लौट जाते हैं और दोबारा फिर जिस मक़्सद के लिये घर से निकले थे उस काम के लिये रवाना होते हैं।

याद रहे कि इस्लाम में ऐसे तवह्हुमात (वहम की जम्अ़) और बद शुगूनियों की कोई ह़क़ीक़त नहीं है। मुसलमानों ने येह अफ़्आ़ल हिन्दुओं, मुशरिकों से सीखे हैं। लिहाज़ा ऐसे तमाम तवह्हुमात व बद शुगूनियात से

www.dawateislami.net

इजतिनाब करना चाहिये अगर दिल में कभी ऐसी बात खटके तो मुतज़क्किरा दुआ़ को पढ़े कि इस दुआ़ में मुसलमानों को ता'लीम दी गई है कि मुअस्सिरे ह़क़ीक़ी अल्लाह तआ़ला है वोह जो चाहता है वोही होता है येही बात अगर बन्दए मोमिन हमेशा अपने पेशे नज़र रखे तो तमाम तवह्हुमात और बद शुगूनियात से छुटकारा हो जाए।

नज़रे बद लगने पर पढ़ने की दुआ़

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ حَرَّهَا وَبَرْدَهَا وَوَصَبَهَا ○

तर्जमा :- अल्लाह तआ़ला के नाम से या इलाही इस की गर्मी और सर्दी और इस की मुसीबत दूर कर दे।

(निसाई रावी ह़ज़रते जाबिर बिन रबीअ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब किसी को नज़र लग जाए या खुद अपने आप को ही नज़र लग जाए तो येह दुआ़ पढ़ कर दम करे नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि उन कलिमात से जो शरीअ़ते मुत़ह्हरा के ख़िलाफ़ न हों। दम (झाड़ फूंक) करना जाइज़ है।

जानवर को नज़र लग जाने पर पढ़ने की दुआ़

لَا بَأْسَ اَذْهِبِ الْبَأْسَ رَبَّ النَّاسِ اِشْفِ اَنْتَ الشَّافِیْ لَا یَكْشِفُ الضُّرَّ اِلَّا اَنْتَ ○

(इब्ने अबी शैबा :- रावी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ)

तर्जमा :- कोई डर नहीं है (ऐ) इन्सानों के रब बीमारी दूर कर दे और शिफ़ा दे दे क्यूंकि तू ही शिफ़ा देने वाला है। तेरे सिवा कोई नुक़्सान दूर नहीं कर सकता।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! मुतज़क्किरा दुआ़ दाब्बतुन (या'नी हर चोपाया जानवर बिलखुसूस वोह चोपाए जिन से सुवारी या बोझ लादने का काम लेते हैं इसी त़रह़ वोह चोपाए जिन से दूध ह़ासिल किया जाता है) को नज़र लगने पर पढ़ी जाए।

www.dawateislami.net

पढ़ने का त़रीक़ा येह है कि जिस जानवर को नज़र लगी हो उस के दाएं नथने में चार मरतबा और बाएं नथने में तीन बार फूंके फिर इस दुआ़ को पढ़े ।

आग बुझाने की दुआ़

اَللّٰهُ اَكْبَر

तर्जमा :- **अल्लाह** तआ़ला बहुत बड़ा है (बेशक तमाम बड़ाइयां उसी के लिये हैं) (अबू लैला रावी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब आग लगी देखे तो मुतज़क्किरा दुआ़ को बार बार पढ़े और इस के साथ जो अस्बाबे दुन्या आग बुझाने के लिये किये जाते हैं उन को बरूए कार लाए तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आग जल्द ही बुझ जाएगी ।

पेशाब बन्द हो जाने या पथरी हो जाने पर पढ़ने की दुआ़

رَبُّنَا اللّٰهُ الَّذِیْ فِی السَّمَآءِ تَقَدَّسَ اِسْمُكَ اَمْرُكَ فِی السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ كَمَا رَحْمَتُكَ فِی السَّمَآءِ فَجْعَلْ رَحْمَتَكَ فِی الْاَرْضِ وَاغْفِرْ لَنَا حُوْبَنَا وَ خَطَایَانَا اَنْتَ رَبُّ الطَّیِّبِیْنَ فَاَنْزِلْ شِفَآءً مِّنْ شِفَائِكَ وَرَحْمَةً مِّنْ رَّحْمَتِكَ عَلٰی هٰذَا الْوَجْعِ فَیَبْرَاُ ○

(ابو داؤد شریف، کتاب الطب، باب کیف الرقی، رقم الحدیث ۳۸۹۲، الجزء الرابع، صفحہ نمبر ۷ ۱ دار احیاء التراث بیروت.)

तर्जमा : हमारा रब **अल्लाह** तआ़ला है जिस का ज़ुहूर आस्मानों में है तेरा नाम पाक है । तेरा हुक्म आस्मानो ज़मीन में जारी है जिस त़रह़ तेरी रह़मत आस्मानों में है इसी त़रह़ अपनी रह़मत ज़मीन में कर दे और बख़्श दे हमारे गुनाह और ख़त़ाएं तू रब है अच्छे लोगों का पस उतार दे शिफ़ा अपने ख़ज़ानए शिफ़ा से और रह़मत अपने ख़ज़ानए रह़मत से इस दर्द पर कि येह अच्छा हो जाए ।

www.dawateislami.net

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब किसी का पेशाब बन्द हो जाए या किसी को पथरी हो जाए तो इस दुआ़ को पढ़ कर दम करे इक्सीरे आ'ज़म है।

जल जाने पर पढ़ने की दुआ़

اَذْهِبِ الْبَأْسَ رَبَّ النَّاسِ اِشْفِ اَنْتَ الشَّافِيْ لَاشَافِيَ اِلَّا اَنْتَ ۝

(निसाई रावी हज़रते मुहम्मद बिन हातिब)

तर्जमा :- ऐ इन्सानों के रब तक्लीफ़ दूर फ़रमा दे तू ही शिफ़ा देने वाला है तेरे सिवा कोई शिफ़ा देने वाला नहीं।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब कोई जल जाए तो मुतज़क्किरा दुआ़ पढ़ कर दम करे। येह बात भी ज़ेहन नशीन रहे कि दीने इस्लाम में अदविया, अदइया और आयाते क़ुरआनिया दोनों त़रीक़ों से इलाज जाइज़ है।

अल ह़दीस :- ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दो शिफ़ा देने वाली चीज़ों को अपने ऊपर लाज़िम कर लो एक शहद और दूसरा क़ुरआन (या'नी क़ुरआनी आयात व सूरत से)

(مشکوٰۃشریف،کتاب الطب والرقی،الفصل

الثالث صفحہ نمبر ۳۹۱مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی۔)

आज कल ज़ियादा तर अदविया से इलाज पर तवज्जोह दी जाती है। लिहाज़ा मुरक्कब इलाज ज़ियादा बेहतर है या'नी अदवियात भी इस्ति'माल करे और अदइयात व क़ुरआनी आयात भी लेकिन येह बात हमेशा पेशे नज़र रहे कि ह़राम अश्या से इलाज न करे क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़राम चीज़ों में शिफ़ा नहीं रखी।

www.dawateislami.net

अल ह़दीस :- नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दवा में शराब डालने के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया गया तो आप ने फ़रमाया : येह मरज़ है इलाज नहीं। (अबू दावूद)

दूसरी रिवायत में है कि जिस ने शराब से इलाज किया उसे **अल्लाह** तआ़ला शिफ़ा न दे। (زادالمعاد)

मुबल्लिग़ीन ह़ज़रात को चाहिये कि हर बीमारी की दुआ़ बयान करते वक़्त इस मुख़्तसर सी तशरीह़ को हमेशा ज़ेहन नशीन रखें।

फोड़े और ज़ख़्म वग़ैरा की दुआ़

بِسْمِ اللّٰهِ تُرْبَةُ اَرْضِنَا بِرِيْقَةِ بَعْضِنَا لِيُشْفٰى سَقِيْمُنَا بِاِذْنِ رَبِّنَا ○

तर्जमा :- **अल्लाह** तआ़ला के नाम के साथ हमारी ज़मीन की मिट्टी से जो हम में से किसी के थूक के साथ मिली हुई है हमारे रब के हुक्म से हमारा बीमार शिफ़ायाब हो।

(مسلم شریف، کتاب السلام، باب استحباب الرقیة الخ، رقم الحدیث ۲۱۹۴، صفحہ نمبر ۱۲۰۵ دارابن حزم بیروت۔)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब ख़ुद को या किसी और को फोड़े फुन्सी का आ़रिज़ा हो तो अपनी शहादत की उंगली पर थूक लगा कर ज़मीन पर रखे ताकि कुछ मिट्टी वग़ैरा लग जाए इस के बा'द उंगली फोड़े फुन्सी पर फेरे और मुतज़क्किरा दुआ़ पढ़े।

पाउं सुन होने के वक़्त की दुआ़

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(माख़ूज़ इब्ने सुन्ना :- रावी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا)

तर्जमा :- **अल्लाह** तआ़ला रह़मते कामिला नाज़िल फ़रमाए मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! इब्ने सुन्ना की रिवायत में आता है कि जब किसी का पाउं सुन हो जाए तो अपने मह़बूब तरीन इन्सान को याद

www.dawateislami.net

करे। बिलाशुबा हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से महबूब तरीन और कौन हो सकता है कि आप इन्सानिय्यत की जान हैं ! हुस्ने काइनात हैं !

अल हदीस :- तुम में से कोई मोमिन नहीं होता यहां तक कि मैं उसे उस के वालिद, औलाद और तमाम लोगों से ज़ियादा महबूब न हो जाऊं। (فیوض الباری)

लिहाज़ा जब पाउं सुन हो जाए तो दुरूद शरीफ़ की कसरत करे।

बिच्छू और दूसरे मूज़ी कीड़ों से महफ़ूज़ रहने की दुआ

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ○ سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِى الْعٰلَمِيْنَ ○

(بحوالہ اسلامی زندگی. مصنفہ علامہ مفتی احمد یار خان نعیمی علیہ الرحمۃ)

तर्जमा :- मैं पनाह चाहता हूं **अल्लाह** तआ़ला के कलिमाते ताम्मा (कामिल व अक्मल) की तमाम मख़्लूक़ की बुराई से। नूह عَلَيْهِ السَّلَام पर सलाम हो जहां वालों में।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब किसी मक़ाम पर ठहरे तो मुतज़क्किरा दुआ़ को पढ़ ले اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ बिच्छू और सांप वग़ैरा मूज़ी हशरातुल अर्ज़ की अज़िय्यत से महफ़ूज़ रहेगा।

बा'ज़ मशाइख़ इस दुआ़ की फ़ज़ीलत में इरशाद फ़रमाते हैं कि तूफ़ाने नूह के वक़्त सांप बिच्छू वग़ैरा ने नूह عَلَيْهِ السَّلَام से येह अ़र्ज़ किया था कि आप हमें कश्ती में सुवार कर लें हम आप से अ़हद करते हैं कि जो आप का नाम लेगा और (سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِى الْعٰلَمِيْنَ○) पढ़ेगा हम उस को ज़रर नहीं पहुंचाएंगे।

अगर खुदा न ख़्वास्ता कभी बिच्छू वग़ैरा डंक मार दे तो नमक और पानी ले कर दोनों को डंक मारने की जगह मलते जाएं और सूरत (الْكٰفِرُوْنَ) और सूरत (الْفَلَقِ) और सूरत (النَّاسِ) पढ़ते जाएं اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ज़हर की तक्लीफ़ दूर हो जाएगी। (तबरानी फ़िस्सग़ीर रावी हज़रते अ़ली)

www.dawateislami.net

येह अ़मल ह़दीस शरीफ़ से साबित है। लिहाज़ा दूसरे इलाज के साथ साथ रूह़ानी इलाज का येह त़रीक़ा भी हमारे पेशे नज़्र रहे।

एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ :- ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के दौरे हुकूमत में मुसलमानों ने अफ़्रीक़ा पर ह़म्ला किया तो इस्लामी लश्कर के सिपह सालार ह़ज़रते अ़क़्बा बिन नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने कुछ अ़लाक़े फ़त्ह़ कर लेने के बा'द एक फ़ौजी छावनी क़ाइम करने का इरादा ज़ाहिर किया। इस्लामी लश्कर के फ़िरासत दानों ने मश्वरा दिया कि फ़ौजी छावनी के लिये एक जगह बड़ी मुनासिब है मगर मुश्किल येह है कि उस जगह बड़ा घना जंगल है। दरिन्दों और मूज़ी जानवरों की वहां बड़ी कस्रत है। ह़ज़रते अ़क़्बा बिन नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने येह बात सुन कर अपने लश्कर से तमाम सह़ाबा को जम्अ़ किया जिन की ता'दाद तक़रीबन अठ्ठारह थी और उन को अपने हमराह ले कर उस जंगल की त़रफ़ रवाना हुवे जंगल के किनारे पहुंच कर आप ने ब आवाज़े बुलन्द चन्द कलिमात इरशाद फ़रमाए जिन की हैबत का येह आ़लम था कि जंगल में अफ़रा तफ़री फैल गई। वोह कलिमात येह थे कि इरशाद फ़रमाया :

يَآاَيُّهَا السِّبَاعُ وَالْكِلَابُ نَحْنُ اَصْحَابُ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اُخْرُجُوْامِنْ هٰذَاالْبَرِّ ۝

तर्जमा :- ऐ जंगल के दरिन्दो : हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब हैं हम तुम्हें हुक्म देते हैं कि इस ज़मीन से निकल जाओ।

اَللّٰهُ اَكْبَر उस आवाज़ में क्या तासीर थी कि काइनात ने देखा और तारीख़ ने हमेशा हमेशा के लिये येह बात सुन्हरी हुरूफ़ से अपने अन्दर समो ली कि आप की आवाज़ सुन कर शेर अपने बच्चों को लिये हुवे, भेड़या अपने पिल्ले को लिये हुवे, अज़्दहा अपने संपोलियों को लिये उस जंगल से कूच

www.dawateislami.net

कर गए और इस्लामी लश्कर ने उस जंगल को कांट छांट करने के बा'द फ़ौजी छावनी की शक्ल दे दी आज भी उस अ़लाक़े को क़ैरुवान के नाम से याद किया जाता है। येह सब सदक़ा है इत़ाअ़ते रसूल का क्यूंकि आप की इत़ाअ़त दर ह़क़ीक़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त है और जो ख़ालिक़ का मुत़ीअ़ हो जाता है तो ख़ालिक़े काइनात मख़्लूक़ को उस का मुत़ीअ़ बना देता है।

(तारीख़े इस्लाम)

आशोबे चश्म ﴾आंख का दुखना﴿ के वक़्त की दुआ़

اَللّٰهُمَّ مَتِّعْنِیْ بِبَصَرِیْ وَاجْعَلْهُ الْوَارِثَ مِنِّیْ وَاَرِنِیْ فِی الْعَدُوِّ ثَاْرِیْ وَانْصُرْنِیْ عَلٰی مَنْ ظَلَمَنِیْ ۝

(ह़ाकिम रावी ह़ज़रते अन्सर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه)

तर्जमा :- या इलाही मुझे फ़ाएदा दे साथ मेरी बीनाई के और इस को मेरा वारिस बना और मुझे दुश्मन में मेरा बदला दिखा और मुझे फ़त्ह़ दे उस पर जो मुझ पर ज़ुल्म करे।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! आंख बहुत बड़ी ने'मत है इस का अन्दाज़ा इस ह़दीस से लगाइये। अगली उम्मतों में एक बन्दए ख़ुदा बीच समन्दर एक पहाड़ पर जहां इन्सान का गुज़र न था रातो दिन इ़बादते इलाही में मश्ग़ूल रहते। रब तआ़ला ने उस पहाड़ पर उन के लिये अनार का दरख़्त उगाया और शीरीं चश्मा निकाला वोह बुज़ुर्ग अनार खाते और पानी चश्मे से पीते और हमा वक़्त इ़बादते इलाही में मश्ग़ूल रहते। चार सौ बरस इसी त़रह़ गुज़ारे (अन्दाज़ा लगाइये जब इन्सान बिल्कुल तने तन्हा ज़िन्दगी बसर करे और कोई दूसरा न हो तो न झूट बोल सकता है न किसी की ग़ीबत व चुग़ली कर सकता है न चोरी न कोई जुर्म व गुनाह कर सकता है जिस का तअ़ल्लुक़ हुक़ूक़ुल इ़बाद से हो) ग़र्ज़ कि जब उन की मौत का वक़्त क़रीब आया तो ह़ज़रते इ़ज़राईल عَلَیْهِ السَّلَام तशरीफ़ लाए तो बुज़ुर्ग कहने लगे कि मुझे इतनी मोहलत दो कि मैं ताज़ा वुज़ू कर के दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ लूं। जब दूसरी

www.dawateislami.net

रक्अ़त के सजदे में जाऊं तो मेरी रूह़ क़ब्ज़ कर लेना। ह़ज़रते इ़ज़राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया तुम्हें इतनी मोहलत दी गई है। चुनान्चे, दूसरी रक्अ़त के सजदे में उन की रूह़ क़ब्ज़ कर ली गई।

ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की हम जब आस्मान से उतरते या आस्मान को जाते हैं तो उस बन्दए ख़ुदा को उसी त़रह़ सर ब सुजूद देखते हैं येह बन्दए ख़ुदा जब क़ियामत के दिन ह़ाज़िर होंगे इ़बादत के सिवा नामए आ'माल में कोई गुनाह तो होगा ही नहीं ह़िसाब व मीज़ान की ह़ाजत क्या ? तो **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाएगा :

اِذْهَبُوْا بِعَبْدِیْ اِلٰی جَنَّتِیْ بِرَحْمَتِیْ O

(मेरे बन्दे को मेरी रह़मत से मेरी जन्नत में ले जाओ)

उस बन्दए ख़ुदा के मुंह से निकलेगा : ऐ मेरे रब ! बल्कि मेरे अ़मल से (या'नी मैं ने अ़मल ही ऐसे किये हैं जिन की वज्ह से मुस्तह़िक़्क़े जन्नत हूं) इरशादे बारी तआ़ला होगा : इस को लौटाओ और मीज़ान खड़ी करो और इस की चार सौ बरस की इ़बादत एक पल्ले में और हमारी ने'मतों में से जो हम ने इसे चार सौ बरस में दीं सिर्फ़ आंख की ने'मत दूसरे पल्ले में रखो। जब वज़्न किया जाएगा तो उस के चार सौ बरस के आ'माल से एक येह ने'मत कहीं ज़ियादा होगी। इरशादे बारी तआ़ला होगा :

اِذْهَبُوْا بِعَبْدِیْ اِلٰی نَارِیْ بِعَدْلِیْ O

(मेरे बन्दे को जहन्नम में ले जाओ मेरे अ़द्ल से)

इस पर वोह बन्दए ख़ुदा घबरा कर अ़र्ज़ करेंगे : नहीं ऐ रब मेरे ! बल्कि तेरी रह़मत से (या'नी ऐ मेरे रब मैं तुझ से तेरा फ़ज़्ल ही मांगता हूं) इरशादे रब्बी होगा : मेरे बन्दे को मेरी रह़मत से जन्नत में ले जाओ।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ, ह़िस्सए दुवुम सफ़ह़ा नम्बर 44 / 243 मत़बूआ़ मुश्ताक़ बुक कोर्नर लाहौर।)

www.dawateislami.net

मा'लूम हुवा कि आंख की बसारत बड़ी ने'मत है जब कि बसारत ईमान के तक़ाज़ों को पूरा करती हो अगर आंख की बसारत का ग़लत़ इस्ति'माल किया तो येही ने'मत हमारे लिये बाइ़से ज़ह़मत बन जाएगी। लिहाज़ा जहां हम आंख में ज़ाहिरी तक्लीफ़ होने पर इलाज करते हैं वहां हमारे लिये लाज़िमी है कि अगर हमारी बसारत रूह़ानी मरज़ में मुब्तला हो जाए तो इस का इ़लाज भी करें क्यूंकि बसारत को ख़िलाफ़े शरअ़ इस्ति'माल न करने ही से बसीरत ह़ासिल होती है और मोमिन की शान येही है कि उस का क़ल्ब बसीरत से मुज़य्यन होता है। इस दुआ़ में इस बात का दर्स दिया जा रहा है कि जहां पर येह दुआ़ ज़ाहिरी तक्लीफ़ को ख़त्म करने के लिये कारगर है। इस के साथ साथ इस में जो दुआ़ बन्दा अपने मा'बूद की बारगाह में कर रहा है उस की समरात व बरकात पाने के लिये उस का आ़मिले कामिल बन जाएगा।

बुख़ार आ जाने के वक़्त की दुआ़

بِسۡمِ اللّٰہِ الۡکَبِیۡرِ اَعُوۡذُ بِاللّٰہِ الۡعَظِیۡمِ مِنۡ شَرِّ
کُلِّ عِرۡقٍ نَّعَّارٍ وَّمِنۡ شَرِّ حَرِّ النَّارِ ؕ

तर्जमा :- **अल्लाह** तआ़ला बुज़ुर्ग व बरतर के नाम से, मैं पनाह मांगता हूं **अल्लाह** तआ़ला अ़ज़मत वाले को ख़ून से जोश मारने वाली हर रग की बुराई से और आग की ह़रारत के शर से।

(ह़ाकिम :- रावी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब भी बन्दए मोमिन को कोई तक्लीफ़ पहुंचे तो सब्र का दामन न छोड़े क्यूंकि बे सब्री करने और गिला शिक्वा करने से बीमारी दूर नहीं होती बल्कि इस बीमारी से मिलने वाले अज्रो सवाब से बन्दा मह़रूम हो जाता है क्यूंकि बन्दए मोमिन हर लिहाज़ से फ़ाएदे में है। बीमारी भी इस के लिये ने'मत है जब कि सब्र करे तन्दुरुस्ती भी इस के लिये ने'मत है जब कि शुक्र करे बा'ज़ लोग येह समझते हैं कि बीमार होने पर

www.dawateislami.net

इलाज न करना येह सब्र है लेकिन ह़क़ीक़त येह है कि जिस त़रह़ इलाज न कराना जाइज़ है इसी त़रह़ इलाज कराना भी जाइज़ है।

अल ह़दीस :- ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, कहते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** तआ़ला ने मरज़ भी नाज़िल किया और दवा भी उतारी और हर मरज़ के लिये दवा पैदा की इस लिये दवा करो अलबत्ता ह़राम चीज़ से इलाज मत करो। (زادالمعاد)

मा'लूम हुवा कि बीमारी का इलाज करना ह़दीस से साबित है अलबत्ता ह़राम अश्या से इलाज न करे। क्यूंकि इस की मुमानअ़त है तो जो शख़्स बीमारी पर सब्र करे और इलाज भी करे तो वोह भी साबिरीन की फ़ेहरिस्त में है और उस के लिये अज्रो सवाब की ख़ुश ख़बरी है।

अल ह़दीस :- सह़ीह़ मुस्लिम में जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक दफ़्अ़ा ह़ज़रते उम्मुस्साइब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہا के पास तशरीफ़ ले गए, फ़रमाया : तुझे क्या हुवा ? जो कांप रही है ! अ़र्ज़ किया : बुख़ार है ख़ुदा इस में बरकत न करे। फ़रमाया : बुख़ार को बुरा न कहो कि वोह आदमी (या'नी बुख़ार बन्दए मोमिन व मोमिना) की ख़त़ाओं को इस त़रह़ दूर करता है जिस त़रह़ भट्टी लोहे के मेल को (दूर करती है) (مسلم شریف، کتاب البر والصلة،باب ثواب المريض الخ،رقم الحديث ۲۵۷۵، صفحه نمبر ۱۳۹۲ دارابن حزم بيروت.)

कान बजते वक़्त की दुआ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ ذَكَرَ اللّٰهُ بِخَيْرٍ مَّنْ ذَكَرَنِيْ ؕ

तर्जमा :- या इलाही मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर रह़मते कामिला नाज़िल फ़रमा। **अल्लाह** तआ़ला उस को भलाई से याद करे जिस ने मुझे भलाई से याद किया। (इब्नुस्सुन्ना, रावी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا)

www.dawateislami.net

जुज़ाम (कोढ) और दूसरे मूज़ी अमराज़ से पनाह की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡۤ اَعُوۡذُبِكَ مِنَ الۡبَرَصِ وَ الۡجُذَامِ وَ الۡجُنُوۡنِ وَ مِنۡ سَیِّئِ الۡاَسۡقَامِ ۝

तर्जमा :- या इलाही मैं तुझ से बर्स और जुज़ाम और जुनून और दूसरी बीमारियों से पनाह चाहता हूं। (अबू दावूद)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! बर्स एक बीमारी है जिस में जिल्द पर सफ़ेद दाग़ आ जाते हैं और जुज़ाम एक बीमारी है जिस में जिस्म की खाल फोड़ों की वज्ह से सड़ जाती है और जुनून पागलपन को कहते हैं इन बीमारियों और दूसरी मूज़ी बीमारियों से बचने के लिये मुतज़क्किरा दुआ को कसरत से पढ़ते रहना चाहिये اِنۡ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन बीमारियों से हिफ़ाज़त रहेगी।

फालिज से हिफ़ाज़त की दुआ

بِسۡمِ اللّٰهِ الَّذِیۡ لَا یَضُرُّ مَعَ اسۡمِهٖ شَیۡءٌ فِی الۡاَرۡضِ
وَلَا فِی السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِیۡعُ الۡعَلِیۡمُ

तर्जमा :- अल्लाह तआ़ला के नाम से कि जिस की बरकत से ज़मीनो आस्मान की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती और वोह सुनने वाला जानने वाला है।

(ترمذی شریف، کتاب الدعوات، باب ماجآء فی الدُّعآءِ اذا اصبح، رقم الحدیث ۳۳۹۹، الجزء الخامس صفحہ نمبر ۲۵۱ دار الفکر)

तमाम अमराज़ से शिफ़ायाबी की दुआ

﴿1﴾ بِسۡمِ اللّٰه

﴿2﴾ اَعُوۡذُ بِاللّٰهِ وَ قُدۡرَتِهٖ مِنۡ شَرِّ مَاۤ اَجِدُ وَ اُحَاذِرُ ۝

तर्जमा :- अल्लाह तआ़ला के नाम से पनाह चाहता हूं अल्लाह तआ़ला की और उस की कुदरत की उस (तक्लीफ़ की) बुराई से जो मैं पाता हूं और जिस का अन्देशा करता हूं।

(مسلم شریف، کتاب السلام، باب استحباب وضع یدہٖ الخ، رقم الحدیث ۲۲۰۲، صفحہ نمبر ۱۲۰۹ مطبوعہ دار ابن حزم بیروت.)

www.dawateislami.net

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! हज़रते उ़स्मान बिन अबू आ़स कहते हैं, मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दर्द की शिकायत की । आप ने मुझे येह अ़मल (या'नी मुतज़क्किरा दुआ़) इरशाद फ़रमाया : मैं ने इस को किया तो **अल्लाह** ने शिफ़ा दी लिहाज़ा दर्द वग़ैरा हो तो उस मक़ाम पर अपना सीधा हाथ रख कर पहले तीन मरतबा بِسْمِ اللّٰہِ पढ़े फिर सात मरतबा बा'द की दुआ़ पढ़े ।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बीमारी भी एक बहुत बड़ी ने'मत है इस के मनाफ़ेअ़ बे शुमार हैं अगर्चे आदमी को ब ज़ाहिर इस से तक्लीफ़ पहुंचती है मगर ह़क़ीक़तन राह़त का एक बहुत बड़ा ज़ख़ीरा उस के हाथ आता है । येह ज़ाहिरी तक्लीफ़ जिस को आदमी बीमारी समझता है ह़क़ीक़त में रूह़ानी बीमारियों का एक ज़बरदस्त इलाज है । ह़क़ीक़ी बीमारी अमराज़े रूह़ानिया हैं इस को मरज़े मोहलिक समझना चाहिये । अक्सर लोग इस मरज़ से ला परवाही बरतते हैं । इस के बर अ़क्स मा'मूली छींक आने पर हम डॉक्टर की त़रफ़ रुजूअ़ करते हैं और रूह़ानी अमराज़ कि हम ने अपने आप को गुनाहों से लिथड़ा होता है । इस से छुटकारा ह़ासिल करने की सअ़्य नहीं करते येह मक़ामे इब्रत है रहा ज़ाहिरी बीमारी का इलाज तो बड़े रुत्बे वाले तक्लीफ़ का भी इसी त़रह़ इस्तिक़्बाल करते हैं जैसे राह़त का मगर हम जैसों को चाहिये कि कम अज़ कम इतना तो करें कि सब्रो इस्तिक़्लाल से काम लें और जज़अ़ व फ़ज़अ़, गिला व शिक्वा न कर के आने वाले सवाब से मह़रूम न हों येह तो हर शख़्स जानता है कि बे सब्री से आई हुई मुसीबत व बीमारी दूर नहीं होती फिर मसाइबो आलाम में सब्र का दामन छोड़ कर सवाब से मह़रूम हो जाना कहां की दानिशमन्दी है येह तो दुन्या व आख़िरत का ख़सारा है बल्कि बा'ज़ लोग तो बीमारी व मुसीबत में مَعَاذَ اللّٰہ **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ ज़ुल्म की निस्बत कर देते हैं तो येह लोग बिल्कुल ही **ख़सिरतद्दुन्या वल आख़िरह** के मिस्दाक़ बन जाते हैं । या'नी (दुन्या व आख़िरत में नुक़्सान उठाने वाले) लिहाज़ा याद रखिये मोमिन के लिये जहां तन्दुरुस्ती एक ने'मत है वहां बीमारी भी एक ने'मत है इस ज़िम्न में चन्द अह़ादीस बयान की जाती हैं ।

www.dawateislami.net

अल हदीस :- सहीह बुख़ारी व मुस्लिम में अबू हुरैरा व अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से मरवी है, हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि मुसलमान को जो तक्लीफ़ और हुज़्न व ग़म पहुंचे यहां तक कि कांटा जो उस के चुभे तो **अल्लाह** तबारक व तआ़ला इन के सबब उस के गुनाह मिटा देता है।

(مسلم شریف، کتاب البر والصلة،باب ثواب المریض،رقم الحدیث ۲۵۷۳،
صفحہ نمبر ۱۳۹۲ مطبوعہ دارابن حزم بیروت.)

अल हदीस :- तिरमिज़ी ने जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत की, कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जब क़ियामत में अहले बला (जिन पर दुन्या में मसाइबो आलाम आए) को सवाब दिया जाएगा तो आ़फ़िय्यत (जिन पर दुन्या में मसाइबो आलाम नहीं आए) वाले तमन्ना करेंगे : काश दुन्या में क़ैंचियों से इन की खालें काटी जातीं। (ताकि हमें भी येह अज्रो सवाब मिलता) इस हदीस से अन्दाज़ा लगाएं कि मुसीबत पर सब्र करने वाला किस क़दर सवाब का मुस्तहि़क़ होगा।

और हज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की रिवायत में है कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब मुसलमान किसी बलाए बदन में मुब्तला होता है तो फ़िरिश्ते को हुक्म होता है लिख जो नेक काम पहले किया करता था। तो अगर शिफ़ा देता है तो धो देता है और पाक कर देता है और मौत देता है तो बख़्श देता है और रह़्म फ़रमाता है।

سُبۡحٰنَ اللہ एक बन्दए मोमिन जो तन्दुरुस्ती में **अल्लाह** तआ़ला की फ़रमांबरदारी में अपनी जिस्मानी क़ुव्वतों को सर्फ़ करता था मगर बीमारी में उ़ज़्रे शरई की वज्ह से बा'ज़ नेक आ'माल जो पहले या'नी तन्दुरुस्ती में करता था अब उस की ताक़त नहीं रखता तो **अल्लाह** तआ़ला फ़िरिश्ते को हुक्म देता है कि मेरे बन्दे के लिये बीमारी में वोही नेक आ'माल लिख जो वोह तन्दुरुस्ती में किया करता था।

अहादीसे करीमा से मा'लूम हुवा कि मुसीबत में सब्र करना आख़िरत में अज्रो सवाब का बाइस है और ह़क़ीक़त में सब्र न करना ख़ुद एक बहुत

www.dawateislami.net

बड़ी मुसीबत है। जो लोग **अल्लाह** तआ़ला की क़ज़ा पर राज़ी रहते हैं हर हाल में **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्दो सना और उस की बुज़ुर्गी बयान करते हैं वोही लोग फ़ज़ीलत व मर्तबे के मुस्तह़िक़ हैं।

बीमारी की ह़ालत में आतशे जहन्नम से बचने की दुआ़

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ۝ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ۝ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ۝
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ۝

तर्जमा :- **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई मा'बूद नहीं, **अल्लाह** तआ़ला बहुत बड़ा है। **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह यक्ता है। **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई मा'बूद नहीं, उस का कोई शरीक नहीं **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई मा'बूद नहीं, उसी के लिये बादशाही है और ह़म्द है। **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई मा'बूद नहीं और कोई त़ाक़त नहीं और न कोई क़ुव्वत मगर **अल्लाह** तआ़ला की (मदद) के साथ।

(ترمذی شریف، کتاب الدعوات، باب مایقول العبد اذا مرض ملخصًا، رقم الحدیث ۳۴۴۱، الجزء الخامس صفحہ نمبر ۲۷۲ دار الفکر)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जो बीमारी में इस दुआ़ को पढ़े और उस का इन्तिक़ाल हो जाए तो ह़दीस शरीफ़ में है ऐसे शख़्स के लिये ख़ुश ख़बरी है कि उसे आतशे जहन्नम नहीं जलाएगी। दूसरी रिवायत में आया है कि जो मुसलमान बीमारी में (आयते करीमा) لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ۝ चालीस मरतबा पढ़ कर दुआ़ मांगे और उसी बीमारी में मर जाए तो उसे शहीद के बराबर सवाब मिलेगा और अगर शिफ़ायाब होगा तो इस ह़ालत में अच्छा होगा कि उस के तमाम गुनाह मुआ़फ़ हो चुके होंगे।

(ह़ाकिम, रावी ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

www.dawateislami.net

जब कोई चीज़ ग़मगीन करे उस वक़्त की दुआ

يَا حَیُّ یَا قَیُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِیْثُ٥

तर्जमा :- ऐ حَیُّ وَقَیُّوْمُ तेरी रह़मत से मदद मांगता हूं।

(तिरमिज़ी, रावी ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ)

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कोई चीज़ ग़मगीन करती तो आप (मज़्कूरए बाला) दुआ़ पढ़ते।

ख़ुशी पेश आने या'नी मरज़ी के मुवाफ़िक़ बात होने पर दुआ़ ﴾जब कि ख़िलाफ़े शरीअ़त न हो﴿

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ بِنِعْمَتِهٖ تَتِمُّ الصّٰلِحٰتُ٥

तर्जमा :- **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र है जिस के इन्आ़म से अच्छी चीज़ें कमाल को पहुंचती हैं। (इब्ने माजा)

ना गवार और ख़िलाफ़े मरज़ी बात होने पर दुआ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی کُلِّ حَالٍ٥

(इब्ने माजा, ह़िस्ने ह़सीन)

तर्जमा :- **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त का शुक्र है हर ह़ाल में।

दांत के दर्द की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنْهُ مَا یَجِدُ وَفُحْشَهٗ بِدَعْوَةِ نَبِیِّكَ الْمِسْکِیْنِ الْمُبَارَكِ عِنْدَكَ٥

तर्जमा :- इलाही (जो तक्लीफ़ येह मह़सूस कर रहा है) इस को और इस की तक्लीफ़ को दूर फ़रमा दे अपने नबिय्ये मिस्कीन की दुआ़ से जो तेरे नज़्दीक मुबारक है। (बैहक़ी :–रावी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दांत के दर्द की शिकायत की तो हुज़ूर عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपने दस्ते अक़्दस को उन के उस रुख़्सार पर जिस त़रफ़ दांत में दर्द था रख कर सात मरतबा मुतज़क्किरा दुआ़ पढ़ी तो **अल्लाह**

www.dawateislami.net

तआ़ला ने अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक उठाने से पहले दर्द को दूर फ़रमा दिया। (मदारिजुन्नुबुव्वह)

किसी क़ौम से ख़त़रे के वक़्त की दुआ़

اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِیْ نُحُوْرِھِمْ وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِھِمْ

तर्जमा :- ऐ **अल्लाह** हम उन (कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन) के मुक़ाबिल तुझे करते हैं और उन के शर से तेरी पनाह लेते हैं।

(अह़मद व अबू दावूद, रावी ह़ज़रते अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

सख़्त ख़त़रे के वक़्त की दुआ़

اَللّٰھُمَّ اسْتُرْعَوْرَاتِنَا وَاٰمِنْ رَوْعَاتِنَا ۝

तर्जमा :- इलाही हमारी पर्दादारी फ़रमा और हमारी घबराहट को बे ख़ौफ़ी व इत़्मीनान से बदल दे। (मुस्नदे अह़मद, रावी ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो! मज़्कूरए बाला दुआ़ओं में से पहली दुआ़ उस मौक़अ़ पर पढ़ने की है जब इत्तिलाअ़ मिल जाए कि कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन मुसलमानों पर ह़म्ले की तय्यारियां कर रहे हैं और दूसरी दुआ़ उस वक़्त पढ़ने की है जब कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन से सख़्त ख़त़रा लाह़िक़ हो जाए क्यूंकि दूसरी दुआ़ सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ज़्वए ख़न्दक़ के मौक़अ़ पर ता'लीम फ़रमाई जैसा कि ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि ग़ज़्वए ख़न्दक़ के मौक़अ़ पर जब कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन मदीनए मुनव्वरा के अत़राफ़ कसीर ता'दाद में जम्अ़ हो गए तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में मुख़ालिफ़ीने इस्लाम की त़रफ़ से ख़त़रे के बारे में अ़र्ज़ किया तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह दुआ़ ता'लीम फ़रमाई लेकिन इस का मत़लब येह भी नहीं है कि मुसलमान कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन से मुक़ाबले के लिये कोई जंगी तय्यारियां ही न करें बल्कि बात येह है कि मुसलमानों की इ़ज़्ज़तो आबरू और इस्लामी सल्त़नत की ह़िफ़ाज़त

www.dawateislami.net

के लिये मुसलमान आ'ला क़िस्म की जंगी तय्यारियां करें ताकि दुश्मनाने इस्लाम के ह़म्ले की सूरत में उन्हें मुंह तोड़ जवाब दिया जा सके और हमें इसी बात का हुक्म दिया गया है क्यूंकि जंगी मशक़्क़तें और तय्यारियां उन का तअ़ल्लुक़ अस्बाब से है और अस्बाब से क़त्ए तअ़ल्लुक़ करना नादानी है अलबत्ता येह बात ज़रूर है कि मुसलमान भरोसा अस्बाब पर नहीं बल्कि **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन की ज़ात पर करें येही फ़र्क़ एक मुसलमान और काफ़िर के माबैन है कि काफ़िर हवा में उड़ने वाले रॉकेट पर और पानी में चलने वाले एटमी बेड़े पर और ज़मीन पर चलने वाले टेंकों पर भरोसा करता है जब कि मुसलमान उस ज़ाते अक़्दस पर भरोसा करता है जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में हवा, पानी और ज़मीन है। गोया काफ़िर फ़क़त़ अस्बाब पर भरोसा करता है और मुसलमान मुसब्बिबुल अस्बाब पर।

कुफ़्र व फ़क़्र से पनाह की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡٓ اَعُوۡذُ بِكَ مِنَ الۡكُفۡرِ وَالۡفَقۡرِ (निसाई)

तर्जमा :- इलाही ! मैं तेरी पनाह लेता हूं कुफ़्र और फ़क़ीरी से।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़दीसे मुबारक में फ़क़ीरी से मुराद ऐसे बे सब्रों की मोह़ताजगी है जो फ़क़ीरी की वज्ह से चोरी, धोका फ़रैब और झूटी गवाहियां वग़ैरा देते हैं और सख़्त गुनाह के मुर्तकिब होते हैं बल्कि बा'ज़ औक़ात ऐसे लोग रब तआ़ला की बारगाह में शिकायतन ऐसे अल्फ़ाज़ बोल देते हैं जो कुफ़्रिय्या होते हैं (مَعَاذَاللّٰه) अलबत्ता वोह फ़क़ीरी जो **अल्लाह** के नेक बन्दों को मिलती है बल्कि वोह खुद फ़क़्र को इख़्तियार करते हैं उन साबिरों के लिये तो वोह फ़क़्र क़ुर्बे इलाही का ज़रीआ़ होता है।

दर्दे सर की दुआ़

بِسۡمِ اللّٰهِ الۡكَبِیۡرِ وَاَعُوۡذُ بِاللّٰهِ الۡعَظِیۡمِ مِنۡ كُلِّ عِرۡقٍ نَّعَّارٍ وَّمِنۡ شَرِّ حَرِّ النَّارِ ۝ (مدارج النبوة، حمیدی)

www.dawateislami.net

तर्जमा :- **अल्लाह** के नाम से जो बड़ा है और मैं पनाह चाहता हूं **अल्लाह** बुज़ुर्ग की हर उछलने वाली रग और आग की गर्मी के नुक़्सान से।

सत्तर बलाओं से आफ़िय्यत की दुआ

بِسْمِ اللّٰہِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ ○

तर्जमा :- **अल्लाह** के नाम से और त़ाक़त नहीं (गुनाहों से बचने की) और क़ुव्वत नहीं (नेकियां करने की) मगर **अल्लाह** बुज़ुर्ग व बरतर अ़ज़मत वाले की मदद से।

(मदारिजुन्नुबुव्वह, रावी ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

दर्स :-प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस दुआ को दस मरतबा पढ़ना चाहिये। इस की फ़ज़ीलत में सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि वोह गुनाहों से ऐसा पाको साफ़ हो जाता है जैसा कि आज ही मां के पेट से पैदा हुवा हो और दुन्या की सत्तर बलाओं से मसलन जुनून व जुज़ाम व बर्स व रीह़ वग़ैरा से आफ़िय्यत दी जाती है। (मदारिजुन्नुबुव्वह जिल्द अव्वल)

नाक से बहते ख़ून को रोकने की दुआ

وَقِیْلَ یٰۤاَرْضُ ابْلَعِیْ مَآءَكِ وَیٰسَمَآءُ اَقْلِعِیْ وَغِیْضَ الْمَآءُ وَقُضِیَ الْاَمْرُ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और हुक्म फ़रमाया गया कि ऐ ज़मीन अपना पानी निगल ले और ऐ आस्मान थम जा और पानी ख़ुश्क कर दिया गया और काम तमाम हुवा। (क़ुरआने मजीद सूरए हूद आयत नम्बर 44, पारह नम्बर 12)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस की नक्सीर फूट जाए तो येह आयते करीमा शहादत की उंगली से उस की पेशानी पर लिखें बहुत मुजर्रब अ़मल है बा'ज़ जाहिल इसे नक्सीर से बहने वाले ख़ून से लिखते हैं येह जाइज़ नहीं क्यूंकि बहने वाला ख़ून नजिस होता है और उस से कलामे इलाही लिखना जाइज़ नहीं। (मदारिजुन्नुबुव्वह जिल्द अव्वल)

www.dawateislami.net

ज़बान की लुक्नत की दुआ

رَبِّ اشْرَحْ لِیْ صَدْرِیْ ﴿۲۵﴾ وَ یَسِّرْ لِیْۤ اَمْرِیْ ﴿۲۶﴾
وَ احْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِیْ ﴿۲۷﴾ یَفْقَهُوْا قَوْلِیْ ﴿۲۸﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :– ऐ मेरे रब मेरे लिये मेरा सीना खोल दे और मेरे लिये मेरा काम आसान कर और मेरी ज़बान की गिर्ह खोल दे कि वोह मेरी बात समझें। (कुरआने मजीद सूरए 'طٰهٰ' आयत नम्बर 25 ता 28, पारह नम्बर 16)

मौत मांगने की जाइज़ दुआ

اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِيْ مَا كَانَتِ الْحَيٰوةُ خَيْرًا لِّيْ وَ تَوَفَّنِيْ اِذَا كَانَتِ الْوَفَاةُ خَيْرًا لِّيْ ○

(बुख़ारी, रावी हज़रते अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه)

तर्जमा :– या इलाही जब तक मेरे लिये जीना बेहतर हो मुझे ज़िन्दा रख और जब मेरे लिये मरना बेहतर हो तो मुझे मौत दे दे।

दर्स :– प्यारे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ लोग मुसीबत व बीमारी की वज्ह से घबरा जाते हैं मौत की तमन्ना करते हैं बल्कि यूं कहते हैं कि ऐसी ज़िन्दगी से तो मौत बेहतर है। मगर हालात कैसे ही संगीन हो जाएं। मसाइबो आलाम के पहाड़ टूट पड़े मुसलमान को चाहिये कि वोह सबात व इस्तिक़ामत की आहिनी दीवार बन जाए। मौत की दुआ हरगिज़ न करे क्यूंकि इस की मुमानअ़त है। अगर मौत मांगनी है तो फिर मुतज़क्किरा दुआ़ करे जो ता'लीम फ़रमाई गई है और बन्दए मोमिन को चाहिये कि वोह **अल्लाह** तआ़ला की राह में मौत (या'नी शहादत) की दुआ़ करे।

अल ह़दीस :– जो शख़्स सच्चाई और सिद्क़े दिल के साथ शहादत त़लब करेगा तो उस को शहादत का मर्तबा दिया जाएगा अगर्चे अपनी मौत (या'नी ब ज़ाहिर वोह अपने बिस्तर पर) मरा हो।

www.dawateislami.net

हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शहादत की दुआ़ यूं मांगते थे : या इलाही ! मुझे अपने रास्ते में शहादत नसीब फ़रमा और रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शहर में मुझे मौत दे । **अल्लाह** तआ़ला की बारगाहे अक़्दस में आप की दुआ़ क़बूल हुई और शहरे मदीना में शहादत की सआ़दत नसीब हुई । आख़िर में चन्द आ'माल लिखे जाते हैं जिन के करने वालों के लिये आख़िरत में शहादत के अज्रो सवाब की बिशारत दी गई है । जब कि दिल में शहादत की सच्ची आरज़ू हो और बिला उ़ज़्र जिहादे शरई से इजतिनाब न किया हो ।

﴾1﴿ इ़ल्मे दीन की त़लब में इन्तिक़ाल हो जाए ।

﴾2﴿ मुअज़्ज़िन कि त़लबे सवाब के लिये अज़ान कहता हो ।

﴾3﴿ रास्त गो ताजिर जो तिजारत में ईमानदारी करता हो ।

﴾4﴿ जो चाश्त की नमाज़ पढ़े ।

﴾5﴿ जो हर महीने में तीन रोज़े रखे ।

﴾6﴿ जो सुब्ह़ो शाम اَعُوْذُ بِاللّٰہِ السَّمِیْعِ الْعَلِیْمِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ○ तीन मरतबा पढ़ कर सूरए ह़श्र की आख़िरी तीन आयात पढ़े और उस दिन या रात में इन्तिक़ाल हो जाए ।

﴾7﴿ जो बा त़हारत सोए और इन्तिक़ाल हो जाए ।

﴾8﴿ जो हर रात اَللّٰھُمَّ بَارِكْ لِیْ فِی الْمَوْتِ○ فِیْمَا بَعْدَ الْمَوْتِ○ पच्चीस बार पढ़े । **तर्जमा :-** या इलाही मेरे लिये मौत में बरकत फ़रमा और मौत के बा'द में भी (बरकत फ़रमा)

﴾9﴿ जो हर रात नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर एक सौ मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ कर सोए और फ़सादे उम्मत के वक़्त सुन्नत पर अ़मल करने वाला उस के लिये तो सौ शहीदों का सवाब है ।

www.dawateislami.net

इयादत करते वक़्त की दुआ

दुआ नम्बर 1 :- لَا بَأْسَ طَهُوْرٌ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ ٥ اَللّٰهُمَّ اشْفِهِ اَللّٰهُمَّ عَافِهٖ ٥

तर्जमा :- कोई हरज की बात नहीं اِنْ شَآءَ اللّٰه येह मरज़ गुनाहों से पाक करने वाला है। या इलाही ! इसे शिफ़ा दे, या इलाही ! इसे तन्दुरुस्त फ़रमा। (बुख़ारी व तिरमिज़ी, रावी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास व ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! मज़कूरा दुआ को दो हिस्सों में लिखा गया है। अगर पहला ही पढ़ ले तो भी कोई हरज नहीं। बा'ज़ किताबों में طَهُوْرٌ की जगह طَهُوْرٌ लिखा गया है वोह भी दुरुस्त है। मुतज़क्किरा दुआ में बीमारों के लिये तसल्ली है कि बीमारी गुनाहगारों के लिये कफ़्फ़ारए सय्यिआत और नेकूकारों के लिये रफ़ीए़ दरजात है।

इयादत के वक़्त की बहुत सी दुआएं अहादीस में वारिद हैं। तवालत के पेशे नज़र सिर्फ़ एक दुआ और लिखी जाती है।

दुआ नम्बर 2 :- اَسْأَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ اَنْ يَّشْفِيَكَ

तर्जमा :- अल्लाह अ़ज़ीम से सुवाल करता हूं जो अ़र्शे करीम का मालिक है कि तुझे शिफ़ा दे।

(ابوداؤد شریف، کتاب الجنائز، باب الدعاء للمریض عند العیادۃ، رقم الحدیث ۳۱۰۶، الجزء الثالث صفحہ نمبر ۲۵۱)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब किसी की इयादत को जाए और उस वक़्त उस बीमार पर नज़्अ़ का वक़्त न हो तो सात मरतबा मुतज़क्किरा दुआ पढ़े اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ बीमार शिफ़ायाब हो जाएगा।

अल हदीस :- अबू दावूद व तिरमिज़ी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रावी कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब कोई

www.dawateislami.net

मुसलमान किसी मुसलमान की इयादत को जाए तो सात मरतबा येह दुआ़ पढ़े (اَسْأَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ ا لخ) अगर मौत नहीं आई है तो उसे शिफ़ा हो जाएगी।
(ابو داؤد شریف، کتاب الجنائز، باب الدُعاء للمريض الخ، رقم الحديث ۳۱۰۶، الجزء الثالث صفحہ نمبر ۲۵۱ دار احیاء التراث.)

मरीज़ की इयादत को जाना सुन्नत है अह़ादीसे करीमा में इस की बड़ी फ़ज़ीलत आई है।

अल ह़दीस :- इब्ने माजा ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स मरीज़ की इयादत को जाता है, आस्मान से मुनादी निदा करता है (ऐ मरीज़ की इयादत के लिये जाने वाले) तू अच्छा है और तेरा चलना अच्छा है जन्नत की एक मन्ज़िल को तू ने ठिकाना बना लिया। (ابن ماجه شريف، كتاب الجنائز، باب ماجآء فی ثواب من الخ، رقم الحديث ۱۴۴۳، الجزء الثانی صفحه نمبر ۱۹۲ دار المعرفه بيروت.)

अल ह़दीस :- अबू दावूद ने ह़ज़रते अनस رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो अच्छी त़रह़ वुज़ू कर के अपने भाई (मुसलमान) की इयादत को जाए तो वोह जहन्नम से सत्तर बरस की राह दूर कर दिया जाता है। (ابـو داؤد شـريف، كـتـاب الـجـنـائـز، بـاب فی فـضـل العـيـادة الخ، رقم الحديث ۳۰۹۷، الجزء الثالث صفحه نمبر ۲۴۸ دار الحياء التراث.)

लिहाज़ा जब भी मरीज़ की इयादत को जाए तो ह़ुसूले सवाब और सुन्नत की निय्यत से जाए कि इस में क़ुर्बे जन्नत और बो'दे जहन्नम है। येह ख़याल ज़ेहन में न आए कि फ़ुलां बीमार है चलो उस की इयादत कर लूं अगर मैं बीमार हो गया तो मेरी इयादत को कौन आएगा ? या फ़ुलां मेरी इयादत को आया था। अब वोह बीमार है लिहाज़ा मैं भी उस की इयादत कर लूं। या ज़ाती अग़राज़ व मक़ासिद या झूटी मह़ब्बत दिखाने की निय्यत से इयादत न करे। बल्कि ख़ालिस निय्यत से अपने मुसलमान भाई की इयादत को जाए कि ऐसे लोगों ही के लिये अज्रो सवाब की बिशारत है।

www.dawateislami.net

अल ह़दीस :- अबू दावूद तिरमिज़ी ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते कि जो मुसलमान किसी मुसलमान की इयादत के लिये सुब्ह़ को जाए तो शाम तक सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते हैं और जो शाम को जाए तो सुब्ह़ तक सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते हैं और उस के लिये जन्नत में एक बाग़ होगा।

(ترمذی شریف، کتاب الجنائز، باب ماجآء فی عیادة المریض، رقم الحدیث ۹۷۱، الجزء الثانی صفحہ نمبر ۲۹۰ دارالفکر بیروت.)

इयादत करने वाला चन्द बातों का ख़याल रखे

《1》 जिस मरीज़ की इयादत को जाए तो उस के लिये कोई हदया बिलखुसूस फूल वग़ैरा ले जाए।

《2》 अगर खाने की चीज़ हो तो मरीज़ को बिग़ैर डॉक्टर या ह़कीम की इजाज़त के न खिलाए।

《3》 ज़ियादा देर इयादत के लिये न बैठे अलबत्ता मरीज़ को आप का बैठना राहत व सुकून देता है तो कोई मुज़ाइक़ा नहीं।

《4》 इयादत के वक़्त खुशदिली की बातें करे।

《5》 ऐसी ह़रकात व सकनात न करे जिस से मरीज़ को मायूसी या तक्लीफ़ पहुंचती हो।

《6》 इयादत के वक़्त कलिमाते ख़ैर अदा करे। क्यूंकि इस वक़्त मलाइका आमीन कहते हैं।

《7》 मरीज़ से अपने लिये दुआ़ कराए क्यूंकि मरीज़ की दुआ़ मलाइका के मानिन्द होती है।

जांकनी के वक़्त मरने वाला क्या दुआ़ करे

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَاَلْحِقْنِیْ بِالرَّفِیْقِ الْاَعْلٰی ○

तर्जमा :- या इलाही मेरी बख़्शिश फ़रमा और मुझ पर रह़म फ़रमा और मुझे रफ़ीक़े आ'ला के साथ मिला दे। (बुख़ारी, रावी ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا)

www.dawateislami.net

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब मौत का वक़्त क़रीब आ जाए तो मरने वाला येह दुआ़ करे ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि इन्तिक़ाल के वक़्त ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़बाने मुबारक पर येही दुआ़ थी ।

जांकनी के वक़्त तल्क़ीन करने की दुआ़

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ **तर्जमा :- अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई मा'बूद नहीं ।

(مسلم شریف، کتاب الجنائز،باب تلقین الموتٰی الخ،رقم الحدیث ٩١٦ صفحہ نمبر ٤٥٦ دارابن حزم بیروت.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जांकनी की ह़ालत में जब तक रूह़ गले को न आई हो मरने वाले को तल्क़ीन करें ।

तल्क़ीन करने का त़रीक़ा :- तल्क़ीन करने का त़रीक़ा येह है कि मरने वाले के क़रीब ब आवाज़े बुलन्द कलिमए त़य्यिबा पढ़ें ताकि वोह सुन कर पढ़ ले या'नी मरने वाले को पढ़ने का हुक्म न दें, हो सकता है कि मौत की सख़्ती की वज्ह से वोह مَعَاذَ اللّٰہ पढ़ने से इन्कार कर दे ।

अल ह़दीस :- रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस का (या'नी दुन्या से रुख़्सत होने वाले का) आख़िरी कलाम لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ (या'नी कलिमए त़य्यिबा) हुवा वोह जन्नत में दाख़िल होगा ।

(ابوداؤد شریف، کتاب الجنائز،باب فی التلقین،رقم الحدیث ٣١١٦.الجزء الثالث صفحہ نمبر ٢٥٥ داراحیاء التراث بیروت.)

जब मरने वाला कलिमए त़य्यिबा पढ़ ले तो तल्क़ीन मौक़ूफ़ कर दे अलबत्ता फिर कोई बात करे तो दोबारा तल्क़ीन करे । तल्क़ीन मुत्तक़ी व परहेज़गार करे और इस मौक़अ़ पर कोई बुरे कलिमात मुंह से न निकालें और न ही ख़िलाफ़े शरीअ़त ह़रकात करें मसलन बा'ज़ लोग चीख़ो पुकार के साथ रोते हैं, गिरेबान चाक करते हैं, बालों को नोचते हैं इन तमाम जाहिलाना ह़रकतों से इजतिनाब करें ।

www.dawateislami.net

मौत के वक़्त हैज़ो नफ़ास वाली औ़रतें मरने वाले के क़रीब हो सकती हैं। अलबत्ता वोह औ़रतें जिन का हैज़ो नफ़ास मुन्क़त़अ़ हो चुका है या जुनुब को न आना चाहिये जब कि ग़ुस्ल न किया हो। अगर नज़्अ़ में सख़्ती देखे तो सूरए یٰسٓ और सूरए رعد की तिलावत करे। ऐसे मौक़अ़ पर अगरबत्ती लूबान सुलगाने में कोई ह़रज नहीं।

जब रूह़ निकल जाए तो एक चौड़ी पट्टी जबड़े के नीचे से सर पर ले जा कर गिर्ह दे दें कि मुंह खुला न रहे और आंखें बन्द कर दी जाएं और हाथ पाउं नर्मी के साथ सीधे कर दिये जाएं।

मय्यित की आंखें बन्द करते वक़्त की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ

(यहां मरने वाले का नाम ले)

وَارْفَعْ دَرَجَتَهٗ فِي الْمَهْدِيِّيْنَ وَاخْلُفْهُ فِيْ عَقِبِهٖ فِي الْغَابِرِيْنَ وَاغْفِرْ لَنَا وَلَهٗ

يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ وَافْسَحْ لَهٗ فِيْ قَبْرِهٖ وَنَوِّرْ لَهٗ فِيْهِ ؁

तर्जमा :- या इलाही (मरने वाले का नाम) को बख़्श दे और हिदायत याफ़्ता लोगों में इस का मर्तबा बुलन्द कर और इस के पस मांदगान में इस का कारसाज़ हो जा और हमारी और इस की मग़्फ़िरत फ़रमा। ऐ तमाम जहानों के पालने वाले ! इस की क़ब्र कुशादा कर दे और (अपने नूर से) इसे मुनव्वर फ़रमा।

(مسلم شریف، کتاب الجنائز، باب فی اغماض المیّت والدعاء الخ، رقم الحدیث ۹۲۰، صفحہ نمبر ۴۵۸ دارابن حزم بیروت.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब मरने वाले की आंखें बन्द करे उस वक़्त मुतज़क्किरा दुआ़ पढ़े इस दुआ़ में जहां लाइन लगाई गई है वहां पर मरने वाले का नाम ले क्यूंकि उस वक़्त मय्यित की आंखें बन्द करने वाले की दुआ़ पर फ़िरिश्ते आमीन कहते हैं। लिहाज़ा ऐ ख़ाकी इन्सान इस मुसीबत के

www.dawateislami.net

मौक़अ़ पर सब्रो तह़म्मुल से काम ले और बजाए इस के कि तेरी ज़बान से ख़िलाफ़े शरअ़ कलिमात का सुदूर हो। अपने और मरने वाले के लिये दुआ़ कर कि अल्लाह तआ़ला के नूरानी फ़िरिश्ते तेरी दुआ़ पर आमीन कहते हैं।

मुसीबत के वक़्त की दुआ़

اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ ○ اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِىْ فِىْ مُصِيْبَتِىْ وَاَخْلِفْ لِىْ خَيْرًا مِّنْهَا

तर्जमा :- बेशक हम अल्लाह तआ़ला के हैं और बेशक हम उसी की त़रफ़ लौटने वाले हैं। या इलाही मेरी मुसीबत में मुझे अज्र दे और इस बदले में मुझे ख़ैर अ़त़ा फ़रमा।

(مسلم شریف، کتاب الجائز،باب مایقال عند المصیبة،رقم الحدیث۹۱۸،صفحه نمبر۴۵۷مطبوعه دارابن حزم بیروت.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! मय्यित के घरवाले और दूसरे अइ़ज़्ज़ा व अक़रिबा जिन को मौत की ख़बर पहुंचे तो मुतज़क्किरा दुआ़ पढ़ें। इसी त़रह़ हर मुसीबत के वक़्त येह दुआ़ पढ़नी चाहिये मुसीबत पर सब्रो तह़म्मुल करना बहुत बड़ी सआ़दत है।

अल ह़दीस :- जब किसी मुसलमान का बच्चा मर जाता है तो अल्लाह तआ़ला फ़िरिश्तों से फ़रमाता है : तुम ने मेरे बन्दे के बच्चे की रूह़ क़ब्ज़ कर ली ? वोह अ़र्ज़ करते हैं : हां, ऐ मेरे परवरदगार ! अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : मेरे बन्दे ने क्या कहा ? वोह कहते हैं : उस ने तेरा शुक्र अदा किया और (اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ○) पढ़ा। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : तुम ने उस के दिल का फूल तोड़ लिया ? वोह अ़र्ज़ करते हैं : हां, ऐ परवरदगार ! तब अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : मेरे बन्दे के लिये जन्नत में एक मकान बनाओ और उस का नाम (बैतुल ह़म्द) रखो।

(ترمذی شریف، کتاب الجائز،باب فضل المصیبة الخ،رقم الحدیث۱۰۲۳،الجزء الثانی صفحه نمبر۳۱۳ دارالفکر بیروت.)

www.dawateislami.net

ता'ज़ियत के वक़्त की दुआ

اِنَّ لِلّٰهِ مَا اَخَذَ وَلِلّٰهِ مَا اَعْطٰى وَكُلٌّ عِنْدَهٗ بِاَجَلٍ مُّسَمًّى فَلْتَصْبِرْ وَلْتَحْتَسِبْ ٥

(बुख़ारी, रावी हज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه)

तर्जमा :–बेशक **अल्लाह** तआ़ला ही का है जो उस ने ले लिया और जो कुछ उस ने दिया है और उस के हां हर चीज़ एक मुक़र्रा वक़्त तक है। पस तुम्हें सब्र करना चाहिये और सवाब की उम्मीद रखना चाहिये।

दर्स :– प्यारे इस्लामी भाइयो ! ता'ज़ियत मसनून है। ह़दीसे करीमा में है जो अपने मुसलमान भाई की मुसीबत पर ता'ज़ियत करे क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला उसे करामत का जोड़ा पहनाएगा।

(ابن ماجه شریف، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی ثواب من الخ، رقم الحدیث ۱۶۰۱، الجزء الثانی صفحه نمبر ۲۹۳ دارالفکر بیروت.)

ता'ज़ियत का वक़्त मौत से तीन दिन तक है इस के बा'द मकरूह है कि ग़म ताज़ा होगा। अलबत्ता अगर जिस की ता'ज़ियत की जाए या ता'ज़ियत करने वाला मौजूद न हो। मसलन ता'ज़ियत करने वाला मौत के वक़्त दूसरे मुल्क या शहर में था कुछ अ़र्से बा'द जब आया और ता'ज़ियत की तो ह़रज नहीं। दफ़्न से पेशतर भी ता'ज़ियत जाइज़ है मगर अफ़्ज़ल येह है कि ता'ज़ियत दफ़्न के बा'द करे।

जनाज़ा उठाते वक़्त की दुआ

بِسْمِ اللّٰه **तर्जमा :–** **अल्लाह** तआ़ला के नाम से (उठाता हूं)

(इब्ने अबी शैबा, रावी ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا)

दर्स :– प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब मय्यित को कफ़न देने के बा'द उठा कर डोली या चारपाई पर रखे तो उठाते वक़्त मज़्कूरा दुआ़ पढ़े, जनाज़े को कन्धा देना इबादत है, हर शख़्स को चाहिये कि इबादत में कोताही न करे। क्यूंकि हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का जनाज़ा उठाया। (जोहरा ब ह़वाला बहारे शरीअ़त)

www.dawateislami.net

हदीस शरीफ़ में है कि जो चालीस क़दम जनाज़ा उठा कर चलेगा उस के चालीस कबीरा गुनाह मिटा दिये जाएंगे नीज़ दूसरी रिवायत में है कि जो जनाज़े के चारों पायों को कन्धा दे अल्लाह तआ़ला उस की ह़तमी मग़फ़िरत फ़रमाएगा। (आ़लमगीरी ब ह़वाला बहारे शरीअ़त)

जनाज़ा देखते वक़्त की दुआ़

سُبۡحٰنَ الۡحَیِّ الَّذِیۡ لَا یَمُوۡتُ ؕ

तर्जमा :- पाकी है उस ज़ात (अल्लाह तआ़ला) को जो ज़िन्दा है जिसे मौत नहीं। (किताबुल अदइ़या)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब कोई जनाज़ा आता देखे तो मुतज़क्किरा दुआ़ पढ़े, ह़ज़रते उ़स्मान رضی اللہ تعالٰی عنہ जनाज़ा देख कर येही दुआ़ पढ़ते थे। बा'ज़ लोग बैठे होने की सूरत में जनाज़ा देख कर खड़े हो जाते हैं और टोपी वग़ैरा सरों पर रख लेते हैं येह ज़रूरी नहीं है। हां इकरामे मय्यित के लिये खड़ा हो तो कोई ह़रज नहीं। रहा नंगे सर को टोपी से ढांपने का मस्अला तो मुसलमानों को तो नंगे सर रहना ही नहीं चाहिये बल्कि अपने सरों को इ़मामे की सुन्नत से मुज़य्यन करना चाहिये।

नमाज़े जनाज़ा में बालिग़ मर्द व औ़रत के लिये दुआ़

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيْرِنَا
وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا ؕ اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ
عَلَى الْاِسْلَامِ ؕ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ ؕ

तर्जमा :- ऐ अल्लाह तू बख़्श दे हमारे ज़िन्दा और मुर्दा और हमारे ह़ाज़िर व ग़ाइब को और हमारे छोटे और बड़े और मर्द व औ़रत को, ऐ अल्लाह हम में से तू जिसे ज़िन्दा रखे उसे इस्लाम पर ज़िन्दा रख और हम में से तू जिस को वफ़ात दे उसे ईमान पर वफ़ात दे।

(ترمذی شریف ،کتاب الجنائز،باب مایقول فی الصلوٰۃ علی المیّت،رقم الحدیث ۱۰۲۶،الجزء الثانی صفحہ نمبر ۳۱۴ دار الفکر بیروت.)

www.dawateislami.net

नमाज़े जनाज़ा में ना बालिग़ लड़के के लिये दुआ

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَآ اَجْرًا
وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا ط

तर्जमा :- ऐ **अल्लाह** तू इस (लड़के) को हमारे लिये पेशरू कर और इस को हमारे लिये ज़ख़ीरा कर और इस को हमारी शफ़ाअ़त करने वाला और मक़्बूलुश्शफ़ाअ़त कर दे।

नमाज़े जनाज़ा में ना बालिग़ा लड़की के लिये दुआ

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهَا لَنَآ اَجْرًا
وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً ط

तर्जमा :- ऐ **अल्लाह** तू इस (लड़की) को यहां हमारे लिये पेशरू कर और इस को हमारे लिये ज़ख़ीरा कर और इस को हमारी शफ़ाअ़त करने वाली और मक़्बूलुश्शफ़ाअ़त कर दे।

क़ब्रिस्तान में दाख़िल होते वक़्त की दुआ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَااَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَ لَكُمْ وَاَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْاَثَرِ

तर्जमा :- ऐ क़ब्र वालो तुम पर सलाम हो **अल्लाह** तआ़ला हमारी और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए और तुम हम से पहले पहुंच गए और हम पीछे आने वाले हैं। (ترمذی شریف، کتاب الجنائز،باب مایقول الرجل اِذا الخ،رقم الحدیث۱۰۵۵،الجزء الثانی صفحہ نمبر ۳۲۹ دارالفکر بیروت.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो! जब क़ब्रिस्तान में दाख़िल हों तो मुतज़क्किरा दुआ़ पढ़े इस दुआ़ में وَنَحْنُ بِالْاَثَرِ भी दुरुस्त है। क़ब्रिस्तान में जाए तो आदाबे क़ब्रिस्तान मल्हूज़ रखे। क़ब्रिस्तान में हमेशा उस रास्ते से गुज़रे जो पुराना हो। नया रास्ता इख़्तियार न करे, अगर नया रास्ता क़ब्रों पर न हो तो फिर हरज नहीं। क़ब्रों पर क़दम रखना, चलना या बैठना या टेक लगाना, पाख़ाना

व पेशाब करना ह़राम है। क़ब्रिस्तान में जूतियां पहन कर न जाए। अगर मूज़ी कीड़े या कांटों का ख़ौफ़ हो तो ह़रज नहीं। ज़ियारते क़ुबूर मुस्तह़ब है। हर हफ़्ते में एक दिन ज़ियारत करे, जुमा'रात या जुमुआ़ हफ़्ता या पीर के दिन मुनासिब है। सब से अफ़्ज़ल दिन जुमुआ़ को वक़्ते सुब्ह़ है। औलियाए किराम के मज़ारात की ह़ाज़िरी के लिये सफ़र करना जाइज़ है। औ़रतों को भी बा'ज़ फ़ुक़हा ने जाइज़ बताया है कि वोह ज़ियारते क़ुबूर के लिये जा सकती हैं। दुर्रे मुख़्तार में येही क़ौल इख़्तियार किया गया है। मगर अ़ज़ीज़ों की क़ब्र पर जाएंगी तो रोना पीटना करेंगी और सालिह़ीन की क़ुबूर का पासे अदब न कर सकेंगी। लिहाज़ा औ़रतों के लिये मुमानअ़त है। हां अगर रोना पीटना न करें और सालिह़ीन की क़ुबूर का पास व अदब रखें और पर्दए शरई का ख़याल रखें तो ह़रज नहीं बा'ज़ उ़लमा ने जाइज़ लिखा है। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अक़्दस की ज़ियारत हर मुसलमान मर्द व औ़रत के लिये बाइ़से बरकत है मगर औ़रत को तीन दिन या ज़ियादा का सफ़र बिग़ैर शोहर या मह़रम के नाजाइज़ है।

मय्यित को क़ब्र में रखते वक़्त की दुआ़

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى سُنَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ (صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم)۝

तर्जमा :- **अल्लाह** तआ़ला के नाम से और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के त़रीक़े पर (इसे दफ़्न करता हूं)

(ابو دائود شریف، کتاب الجائز،باب فی الدُّعاء للمیت الخ،رقم الحدیث ۳۲۱۳، الجزء الثالث صفحہ نمبر ۲۸۷ داراحیاء.)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब मय्यित को क़ब्र में उतारे तो मज़्कूरा दुआ़ पढ़े। क़ब्र में उतारने वाले दो या तीन या जो मुनासिब हो इस में ता'दाद मुअ़य्यन नहीं। अलबत्ता बेहतर येह है कि क़वी हों जिस्मानी त़ौर पर और

www.dawateislami.net

रूहानी तौर पर भी (या'नी मुत्तक़ी व परहेज़गार) मय्यित को क़ब्र के किनारे क़िब्ला की जानिब रखना मुस्तहब है और मय्यित को क़िब्ला ही की जानिब से क़ब्र में उतारा जाए। औरत का जनाज़ा उतारने वाले महारिम हों। अगर येह न हों तो दूसरे रिश्तेदार जो नेक हों वोह उतारें। औरत की क़ब्र को स्लेप लगाने तक चादर वग़ैरा से ढांके रखें और मर्द की क़ब्र को न ढांकें।

मय्यित को दाहनी करवट पर लिटाएं और उस का मुंह क़िब्ला को कर दें और मय्यित को क़ब्र में रखने के बा'द कफ़न की बन्दिश खोल दें। मिट्टी देने से पहले अगर लिटाने में कोई भूल हो जाए या कफ़न की बन्दिश न खोली हों तो दुरुस्त कर लें लेकिन मिट्टी डालने के बा'द वैसे ही रहने दें। अब ज़रूरत नहीं कि मिट्टी हटा कर दुरुस्तगी की जाए।

क़ब्र पर मिट्टी डालते वक़्त की दुआ

مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى

तर्जमा :- इसी से हम (अल्लाह तआला) ने पैदा किया और इसी में तुम को लौटाएंगे और इसी से दोबारा तुम को निकालेंगे।

(हाकिम :- रावी हज़रते अबू उमामा)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! स्लेप या तख़्ते वग़ैरा क़ब्र पर लगाने के बा'द मिट्टी दें। मुस्तहब येह है कि सिरहाने की तरफ़ से दोनों हाथों से तीन बार मिट्टी डालें। पहली बार (مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ) कहें और दूसरी बार (وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ) कहें और तीसरी बार (وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى) कहें। मिट्टी देते वक़्त जो मिट्टी हाथ में लगी हो उसे झाड़ दें या धो लें।

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! हदीस शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम्हारा कोई भाई इन्तिक़ाल कर जाए और तुम उस को मिट्टी दे चुको तो तुम में से एक शख़्स क़ब्र के सिरहाने खड़ा हो कर कहे : **या फ़ुलां बिन फ़ुलां**। वोह (मुर्दा) सुनेगा और जवाब न

www.dawateislami.net

देगा। फिर कहे : **या फुलां बिन फुलां**। वोह सीधा हो कर बैठ जाएगा फिर कहे : **या फुलां बिन फुलां** वोह कहेगा : हमें इरशाद कर। **अल्लाह** तआ़ला तुम पर रह़म करे मगर तुम्हें उस के कहने की ख़बर नहीं होती।

फिर कहे (या'नी तल्क़ीन के वक़्त की दुआ़ पढ़े जो नीचे दर्ज है)

तल्क़ीन के वक़्त की दुआ़

اُذْكُرْمَاخَرَجْتَ عَلَيْهِ مِنَ الدُّنْيَا شَهَادَةَ اَنْ لَّآاِلٰـهَ اِلَّااللّٰهُ

وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ(صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمْ)

وَاَنَّكَ رَضِيْتَ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ(صَلَّى

اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمْ) نَبِيًّا وَّ بِالْقُرْاٰنِ اِمَامًا.

तर्जमा :- तू उसे याद कर जिस पर तू दुन्या से निकला या'नी येह गवाही कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) उस के बन्दे और रसूल हैं और येह कि तू **अल्लाह** के रब और इस्लाम के दीन और मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के नबी और कुरआन के इमाम होने पर राज़ी था। (त़बरानी फ़िल कबीर)

अल ह़दीस :- (जब तल्क़ीन करने वाला दुआ़ पढ़ लेगा तो) नकीरैन एक दूसरे का हाथ पकड़ कर कहेंगे चलो हम उस के पास क्या बैठें जिसे लोग उस की हुज्जत सिखा चुके। इस पर किसी ने अ़र्ज़ किया : अगर मां का नाम मा'लूम न हो ? इरशाद फ़रमाया : ह़व्वा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) की त़रफ़ निस्बत करे (त़बरानी ब ह़वाला बहारे शरीअ़त)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! मय्यित को दफ़्नाने के बा'द एक शख़्स खड़ा हो कर मय्यित और उस की वालिदा का नाम ले कर दफ़्नाने के बा'द जो दुआ़ तह़रीर की गई उस दुआ़ के साथ तल्क़ीन करे। अगर वालिदा का

www.dawateislami.net

नाम मा'लूम न हो तो उस की जगह ह़ज़रते ह़व्वा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) का नाम ले। बा'दे दफ़्न अज़ान देना भी मुस्तह़सन है। (फ़तावा रज़्विय्या)

दफ़्न करने के बा'द इतनी देर क़ब्र के पास ठहरना मुस्तह़ब है कि जितनी देर में ऊंट ज़ब्ह़ कर के उस का गोश्त तक़्सीम कर दिया जाए। क्यूंकि अह़बाब के रहने से मय्यित को उन्स होगा और मुन्कर नकीर का जवाब देने में वह़शत न होगी। इतनी देर क़ुरआने पाक की तिलावत और मुर्दे के लिये दुआ़ व इस्तिग़फ़ार करें।

मुस्तह़ब है कि क़ब्र के सिरहाने الٓمّٓ से مُفْلِحُوْنَ (सूरतुल बक़रह आयत नम्बर 1 ता नम्बर 5) और क़ब्र की पाईंती اٰمَنَ الرَّسُوْلُ से فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ۠ पढ़ें। (क़ुरआन मजीद सूरतुल बक़रह, आयत नम्बर 1 ता 5, पारह नम्बर 1, सूरतुल बक़रह, आयत नम्बर 285-286, पारह नम्बर 3)

इन्तिक़ाल के वक़्त की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ وَارْحَمْنِىْ وَاَلْحِقْنِىْ بِالرَّفِيْقِ الْاَعْلٰى۝

तर्जमा :- इलाही मुझे मुआ़फ़ कर दे और मुझ पर रह़म फ़रमा और मुझे रफ़ीक़े आ'ला से मिला दे।

(बुख़ारी व मुस्लिम रावी ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا)

दर्स :- प्यारे इस्लामी भाइयो ! जांकनी के वक़्त ह़वास दुरुस्त हों तो येह दुआ़ पढ़ें। **अल्लाह** तआ़ला वक़्ते मर्ग हमारे ह़वास को बर क़रार रखे और हमें ईमान पर मौत नसीब फ़रमाए। आमीन।

सुवालाते क़ब्र की आसानी के लिये दुआ़

اَللّٰهُمَّ ثَبِّتْ عَلٰى سُوَالٍ مُّنْكَرٍ وَّنَكِيْرٍ۝

तर्जमा :- इलाही तू साबित रख मुन्कर नकीर के सुवाल पर।

(किताबुल अदइ़या)

www.dawateislami.net

ईमान की कसौटी

सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में किसी ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं सच्चा पक्का मोमिन कब बनूंगा ?" फ़रमाया : "तू जब **अल्लाह** तआ़ला से मह़ब्बत करेगा।" उस ने अ़र्ज़ किया : "मेरे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी मह़ब्बत **अल्लाह** तआ़ला से कब होगी ?" फ़रमाया : "जब तू उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत करेगा। फिर अ़र्ज़ किया : **अल्लाह** तआ़ला के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मेरी मह़ब्बत कब होगी ?" फ़रमाया : "जब तू उन की राह पर चलेगा और उन की सुन्नत की पैरवी करेगा और उन से मह़ब्बत करने वालों के साथ मह़ब्बत और उन से बुग़्ज़ रखने वालों के साथ बुग़्ज़ रखेगा और किसी से मह़ब्बत करे तो उन की मह़ब्बत की वज्ह से करे और अगर किसी से अ़दावत रखे तो भी उन की ही वज्ह से रखे।

फिर फ़रमाया : "लोगों का ईमान एक जैसा नहीं बल्कि जिस के दिल में मेरी मह़ब्बत जितनी ज़ियादा होगी उतना ही उस का ईमान क़वी होगा। यूं ही लोगों का कुफ़्र एक जैसा नहीं बल्कि जिस के दिल में मेरे मुतअ़ल्लिक़ बुग़्ज़ ज़ियादा होगा उस का कुफ़्र भी उतना ही बड़ा होगा।" फिर फ़रमाया : "ख़बरदार ! जिस के दिल में हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत नहीं उस का ईमान नहीं ! ख़बरदार ! जिस के दिल में हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत नहीं उस का ईमान नहीं !" ख़बरदार ! जिस के दिल में हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत नहीं उस का ईमान नहीं।" (दलाइलुल ख़ैरात)

मेरा दीनो ईमां फ़िरिश्ते जो पूछें
तुम्हारी ﷺ ही जानिब इशारा करूं मैं

(हु़ज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात मग़रिब की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा। हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

MC 1286

- देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
- अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
- मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
- हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

Web : www.dawateislami.net / E-mail : maktabadelhi@dawateislami.net